ISSN 2277-7660

पर्यावरण संरक्षण को समर्पित एक अनूठी पारिवारिक, सामाजिक, साहित्यिक एवं आध्यात्मिक मासिक पत्रिका

अमर ज्योति

वर्ष : 73 | नवम्बर, 2022 | अंक : 11 | मूल्य : 150 रु. (वार्षिक)

प्रकाशक :
बिश्नोई सभा, हिसार

संपादक
डॉ. मनबीर

सह संपादक
श्रीमती अनिला बिश्नोई

कार्यालय पता :
'अमर ज्योति'
श्री बिश्नोई मन्दिर
हिसार - 125 001 (हरियाणा)
दूरभाष : 80590-27929
94670-90729
email: editoramarjyotipatrika@gmail.com
editor@amarjyotipatrika.com
Website : www.amarjyotipatrika.com

सभा कार्यालय दूरभाष :
फोन : 01662-225804

इस पत्रिका में उल्लेखित सभी पद अवैतनिक एवं निष्काम सेवार्थ है।

सदस्यता शुल्क :
वार्षिक : ₹ 150
25 वर्ष : ₹ 1300

"अमर ज्योति में प्रकाशित लेख एवं विचार लेखकों के वैयक्तिक हैं। संपादक का इनसे सहमत या असहमत होना आवश्यक नहीं है। लेख संबंधी आपत्तियों हेतु सीधे लेखक से सम्पर्क करें"

सभी विवादों का न्यायक्षेत्र हिसार न्यायालय होगा।

'अमर ज्योति' का ज्ञान दीप अपने घर आँगन में जलाइये।

विषय अनुक्रमणिका

विषय	पृष्ठ
सबद-120	3
बैसाख वाला पीपल	4
सम्पादकीय	5
साखी	6
धर्म- क्या और क्यों ?	8
जेतसी को राज्य प्राप्ति का वरदान	11
पिता ही हमारी पहचान	16
वृक्ष रक्षा और खेजड़ली बलिदान	17
बाहरी एवं आन्तरिक शुद्धता	19
बधाई सन्देश	21
शास्त्रों में भोजन करने के नियम	21
हरजस	22
लील (नील) न लावै अंग, देखत दूर ही त्यागै	23
बिश्नोई पंथ में मान्य संस्कारों की आखिरी कड़ी 'अंतिम संस्कार'	25
कविताएं: कृषक, तुकबन्दी	26
बिश्नोई लोकगीत: संस्कार गीत- विवाह के गीत (भाग-7)	27
कविता: रावण दहन	30
विनम्रता ही व्यक्तित्व का आभूषण है	31
लोक कथा: सोने का हिरण	32
करियर: 12वीं के बाद लॉ की पढ़ाई में अवसर	35
सामाजिक हलचल	40-42

सबद-120

दोहा

आत्म कह्यो अंत ग्रन्थ के, प्रिथम कह्यो हरि नाम।
मैं अधिकारी कास को, कहिये सुन्दर श्याम॥
रतने राहड़ का प्रश्न सुन, बोले जम्भ दयाल।
तूं अधिकारी नाम को, छोड़ो आल जंजाल॥

गाँव जाँगलू का रतना राहड़ जाम्भोजी का परम भक्त था। उन्होंने धर्म की रक्षा के लिये अपने ससुराल वालों से नेह तोड़ दिया था तथा ससुराल से वापिस आते समय मार्ग में एक हरिण की रक्षा हेतु अपने प्राणों की आहुति देने की ठान ली थी। परन्तु रतने के दृढ़ निश्चय के सामने उसी गाँव के ठाकुर को झुकना पड़ा था। उसने पत्नी सहित रतने को सादर भेंट देकर वहाँ से विदाई दी थी। अपने घर पर आने पर तो उसके भाई व पिता ने रतने को घर से निकाल दिया था, तो भी वह चिंतित नहीं हुआ। जम्भदेवजी के पास सम्भराथल पर पहुँचा था। अपने ही भाई-बन्धुओं ने जिनको ठुकरा दिया था, किन्तु जम्भेश्वर जी ने सस्नेह उसको अपनाया तथा आशीर्वाद दिया, जिससे रतने की खेती दिन-दूनी रात-चौगुनी फलित हुई।

वहीं रतना यदा-कदा सम्भराथल आया करता था। गुरु महाराज के शब्दों को श्रवण किया करता था। एक बार जम्भदेवजी से पूछा कि आप अपनी वाणी द्वारा कभी भी आत्म ज्ञान का उपदेश देते हो, कभी योग के बारे में बतलाते हो तथा कभी निष्काम कर्म की शिक्षा देते हुऐ समझाते हो, मेरे लिये अर्थात् हमारे जैसे किसानों के लिये आपकी क्या शिक्षा है क्योंकि हम गृहस्थ लोग योग ध्यानादि कठिन कार्य तो नहीं कर सकते। तब श्री देवजी ने यह सबद सुनाया जो सर्वसाधारण के लिये सुलभ है।

सबद 120

विष्णु विष्णु तूं भण रे प्राणी, इस जीवन कै हावै।
क्षण क्षण आव घटंती जावै, मरण दिनों दिन आवै।

भावार्थ- हे प्राणी! जब तक तुम्हारे इस पंचभौतिक शरीर में प्राण वायु का संचार हो रहा है अर्थात् जब तक तुम्हारा यह शरीर स्वस्थ है तब तक तूँ विष्णु-विष्णु इस महामन्त्र का जप किया कर, क्योंकि ऐसा कार्य तो इस जीवन के रहते ही हो सकता है। मनुष्येतर शरीरों से तो संभव नहीं है इसलिये तुम्हारे जैसे कृषक समाज के लिये तो यही सर्वोत्तम साधन है। इसी से ही जीवन की भलाई हो सकती है। परमात्मा ने विष्णु नाम स्मरण करने के लिये यह दिव्य देह तो दी है, किन्तु ध्यान रखना, यह अस्थिर काया स्थिर अजर-अमर नहीं है। इस शरीर की आयु सीमित तथा निश्चित है। मृत्यु दिनों दिन नजदीक आ रही है। लोग कहते हैं कि मेरा बेटा बड़ा हो गया, किन्तु श्री देवजी कहते हैं कि छोटा हो गया। बड़ा तो उस दिन था जब पैदा हुआ था। अब दिनोंदिन छोटा होता जा रहा है। मृत्यु नजदीक आ रही है।

पालटीयों गढ़ कांय न चेत्यो, घाती रोल भनावै।
गुरुमुख मुरखा चढ़ै न पोहण, मनमुख भार उठावै।

यह शरीर रूपी गढ़ तुम्हारे देखते-देखते ही पलट गया है। कभी यह बालक था, फिर जवान हुआ और अब बूढ़ा हो गया। एकाएक पलट गया। किन्तु फिर भी तूँ सचेत नहीं हो सका और अब वृद्धावस्था का अर्थ है कि काल ने रोल घात दी है अर्थात् काल ने तेरे शरीर पर अपना प्रभाव जमा दिया है और प्रतिक्षण इसे तोड़ रहा है। इसे क्षीण कर रहा है। एक दिन इस शरीर की शक्ति को काल भस्म कर देगा, इसे तोड़-मरोड़ कर जर्जरित कर देगा तो फिर इस गढ़ में निवास करने वाली जीवात्मा भी इसे छोड़कर चली जायेगी। ऐसा काल का प्रत्यक्ष खेल होने पर भी मूर्ख लोग तो इसे देख नहीं पाते। गुरु के बताये हुऐ मार्ग पर चल नहीं सकते। यदि वे लोग गुरुमुखी होकर यह जीवनयापन करें तो उन्हें इस संसार का दुख रूपी भार उठाना नहीं पड़ेगा किन्तु ये लोग तो अपनी मूर्खता के कारण मनमुखी कार्य करेंगे, जिससे उन्हें संसार का दुख-द्वन्द्व रूपी भार उठाना ही पड़ेगा। सतगुरु ने इन्हें नियम धर्म -मर्यादा रूपी वाहन चढ़ने के लिये दिया है। परन्तु ये लोग उस वाहन का उपयोग न करते हुए मनमुखी सतगुरु के नियम की परवाह न करते हुऐ अनीति, अधर्म, अमर्यादित जीवन को जीना स्वीकार करके दुख उठायेंगे।

ज्यूं ज्यूं लाज दुनी की लाजै, त्यूं त्यूं दाब्यो दावै।
भलियो होय सो भली बुध आवै, बुरियो बुरी कमावै।

ज्यों ज्यों दुनिया की लाज से लज्जित होगा, त्यों त्यों ही वह दबता जायेगा। अर्थात् दुनिया के लोगों का अपना एक संसार होता है। आपसी भाई-बन्धु, माता- पिता, कुटुम्ब, सगा-सम्बन्धी इनके कथनानुसार चलना अपनी मर्यादा समझता है। ये लोग सदा मोह माया में फंसाने का ही प्रयत्न करते हैं। यदि कोई पिंजरे से बाहर निकलना भी चाहता है तो उसे अनेक प्रकार की, कुल परिवार की मर्यादाओं से अवगत करवा कर निवृत्त कर देते हैं। यदि कोई साधक इन्हीं लोगों द्वारा दी हुई इस प्रकार की लज्जा से लज्जित होकर साधना, भजन, परोपकार आदि कार्य करना छोड़ देता है तो उसके ऊपर दबाव अधिक बढ़ जायेगा। वह कभी भी उस दबाव से ऊपर नहीं उठ सकेगा।

इन्हीं संसारी लोगों में से यदि कोई भला पुरुष होगा तो सदा भली बुद्धि उपजेगी तथा वह सदा सच्ची ज्ञान वर्धक धर्म की बात ही बतलायेगा, किन्तु जो दुष्ट स्वभाव का आदमी है वह कभी भी भली, अच्छी बुद्धि नहीं उपजायेगा। सदा कुबुद्धि ही प्रदान करते हुए पापमय कर्मों में प्रेरित करेगा तथा स्वयं भी वही कर्म करेगा।

बूरो जूणी चवरासी भुविसी, भलौ आवागुवणी न आवै।

दुष्ट व्यक्ति तो सदा चौरासी लाख योनियों में भटकेगा किन्तु भला सज्जन व्यक्ति आवागमन बार-बार जन्म-मरण के चक्कर से छूट जायेगा, यही भले तथा बुरे का फल है। जैसा फल आप चाहते है वैसा मार्ग कर्म अपना सकते है।

-साभार 'जम्भसागर'

लघु कथा

बैसाख वाला पीपल

रात में जब फेफड़े मूंज वाली रस्सी की तरह बंट खाने लगे तो गिरदावरी बाई को सरकारी अस्पताल में भर्ती करवाया गया। उम्र के सत्तर वर्षों में उसने आज तक ऐसी दमघोटू बीमारी नहीं देखी थी। यूं तो वह रात से ही अस्पताली ऑक्सीजन के सहारे जी रही थी, लेकिन जब दिन निकला तब भी सांसों के साथ ये गुथमगुथी कम नहीं हुई। फेफड़े मिर्गी वाले रोगी की अकड़ी मुट्ठियों की तरह भिंचते ही जा रहे थे। उसने खिड़की से बाहर देखा.. ..पीपल की एक डाली बहुत देर से उसकी तरफ झुक रही थी। उसने अधमरे सांप जैसे हाथ को लम्बा करके डाली को पकड़ना चाहा, मगर बीच में कांच की खिड़की आ गयी। ये वही पीपल है जिसे वह वर्षों से बैसाख के महीने में सींचती आई थी। बहुत पहले जब सरकार ने अस्पताल बनाने के लिए इस पीपल को काटने की कोशिश की तो वह मौहल्ले की औरतों के साथ प्रशासन से भिड़ गयी थी। एक पीपल के लिए उसने सारे शहर को दुश्मन बना लिया था। नेताओं से लेकर अधिकारी तक उसके खिलाफ हो गये! मुकद्दमे हुए पर लम्बी खींचतान के बाद आखिर में अस्पताल की दीवार को पीपल से पीछे खिसकाना पड़ा था।

आज अस्पताल का पूरा वार्ड मरीजों से खचाखच भरा हुआ था। हर घंटे में किसी ना किसी मरीज की सांसें टूट रही थी। डेड बॉडी को उठाने से पहले ही नये मरीजों के परिजन खाली बैड को लपक लेना चाहते थे। बेटा और बहू डबडबाई आंखों के साथ किसी अनहोनी की आशंका में उसके पास बैठे थे।

हवा के एक तेज झौंके के साथ ही पीपल पर हजारों घुंघरू एक साथ बजने लगे। गिरदावरी बाई उदास आंखों से बाहर देखने लगी, पीपल की एक डाली अब भी बार-बार काँच की खिड़की से टकरा रही थी। उसने हाथ आगे बढ़ाकर कोमल पत्तों को छूना चाहा, करवट के साथ ही छाती में हजारों काँच के टुकड़े एक साथ चुभने लगे, दो तीन लम्बी सांसें लेने के बाद वह शांत हो गयी। खिड़की की ओर टिकी आंखों से तीन चार पानी की बूंदे ढुलक कर उसके चेहरे की झुर्रियों में खो गयी, ऐसे लगा मानो उसने जाते जाते ही सही एक बार .....फिर से पीपल को सींच दिया हो। मरीजों के परिजन खाली हुए बैड के लिए डॉक्टरों से उलझ रहे थे।

-सुरेन्द्र सुन्दरम्

SP-19, पंजाबी सिटी, श्रीगंगानगर

मो.: 9414246712

संपादकीय

कर्मफल की अवधारणा

अक्सर लोगों को यह कहते सुना जाता है कि ईश्वर यदि समदर्शी होता तो संसार में इतनी विषमता दृष्टिगोचर नहीं होती, जितनी अब दिखाई पड़ रही है। कहीं तो कुबेर जितनी संपदा और कहीं इतनी विपन्नता कि मुश्किल से पेट भरे। कहीं स्वर्ग-सुख का आनंद तो कहीं नरकजन्य दारुण व्यथा। इन विषमताओं को देखते हुए क्या ईश्वर पर आरोप नहीं लगता कि वह पक्षपाती है? क्या वह जानबूझकर भली-बुरी परिस्थितियां विनिर्मित करता है? इन प्रश्नों के संदर्भ में यदि कर्म फल व्यवस्था का गहराई से अध्ययन करें तो हम पाएंगे कि भगवान का इनसे कोई लेना-देना नहीं है। न तो वह किसी की प्रशंसा से प्रसन्न होकर किसी को धनपति बनाता है, न किसी की आलोचना से कुपित होकर उस पर कहर बरपाता है। यदि ऐसी बात रही होती, तो साम्यवादी देशों के नास्तिकों को जो उस पर विश्वास नहीं करते और गालियां देते हैं उन्हें बर्बाद कर देता। पर देखा जाता है कि समाजवाद के जन्म से लेकर अब तक वे फलते-फूलते और विकास करते आ रहे हैं। केवल उस सत्ता को न मानने से ही उनकी प्रगति रूकी हो और कोई ऐसी हानि हुई हो, जो आस्तिकवादी देशों के लोगों न होती हो, ऐसा अब तक देखा नहीं गया है। जब प्रत्यक्ष निंदा-भर्त्सना का उस पर कोई असर नहीं पड़ता तो यह कैसे कहा जा सकता है कि निजी जीवन में जाने-अनजाने होने वाली गलतियों के फल का जिम्मेदार वह है।

सच तो यह है कि इस जीवन उद्यान में कर्म के रूप में हम जो कुछ बोते हैं, वही काटते रहते हैं। यह नगद धर्म की तरह है- क्रिया की प्रतिक्रिया जैसा है। न तो इसमें परमात्मा की कोई भागीदारी है, न इससे कोई सरोकार है। यहां अच्छा-बुरा जो कुछ हम भोगते हैं, सब कर्मों की प्रकृति और फल की स्वसंचालित प्रक्रिया के हिसाब से हमें मिलता रहता है। कुछ की प्रतिक्रिया शीघ्र परिणाम प्रस्तुत कर देती है, जबकि कुछ में लंबा समय लग जाता है। किसी ने किसी का अपमान किया है तो उसे कर्मफल व्यवस्था के तहत सम्मान नहीं मिल सकता। उसका अपना ही दुष्कर्म उसको अपने घेरे में लेगा और एक अंतराल में वही अपमान, अपयश बनकर बरस पड़ेगा।

वास्तव में कर्मों के शुभाशुभ परिणाम क्रिया के ही भीतर निहित हैं। जिस प्रकार बीज के अंदर वृक्ष समाहित होते हैं, वैसे ही अच्छे का अच्छा और बुरे का बुरा फल कर्मों की प्रकृति के अनुरूप मिलता रहता है। बीज यदि अच्छे हों तो फसल अच्छी होकर रहेगी, जबकि खराब बीज से अच्छे साधन भी अच्छी फसल नहीं ले सकते। परिस्थितियां वातावरण, खाद, पानी जैसे बाह्य कारक तो न्यून रूप में ही फसल को प्रभावित कर पाते हैं। मुख्य कारक तो बीज के अंदर निहित है। इस सिद्धांत के आधार पर उन कर्मों की व्याख्या आसानी से हो जाती है, जिसमें व्यभिचार, पापाचार जैसे अनैतिक कृत्य करने पर भी फल नहीं मिल पाये हो। यहां समय की देरी को परिणाम की निष्फलता नहीं मान लिया जाना चाहिए और न यह भ्रम पालना चाहिए कि किया हुआ कुकर्म समाज और संसार से छिपा हुआ होने के कारण उसके फल से व्यक्ति बच जाएगा। हां, यह संभव है कि राजदंड के न्यायविधान से वह बच जाए, पर ध्वनि की प्रतिध्वनि तो होकर रहेगी। काया की छाया सदा साथ चलती है। इसको मिटा पाना असंभव है। फिर कर्मफल तो मनुष्य की पहुंच से नितांत परे है। भला वह उसे कैसे बदल सकता है? उत्थान-पतन, रोग-निरोग जैसी परिस्थितियां भी उन कर्म-बीजों के ही नतीजे हैं जो कभी पूर्व में बोये गये थे।

इस प्रकार यहां जो कुछ बोया जाता है, वही काटने का विधान है। बुवाई और कटाई में यदा-कदा देरी हो सकती है लेकिन इसमें रत्ती भर भी संशय नहीं कि काटा वही जाएगा, जो बोया गया था। चूंकि इसमें कर्मफल की स्वसंचालित प्रक्रिया के अनुसार कर्ता को दंड-पुरस्कार मिलता है। अतः ईश्वर को इसके लिए जिम्मेदार नहीं ठहराया जा सकता। कर्मफल का वास्तविक कारण स्वयं कर्ता कर्म है। इसे भली भांति समझ लेने पर यह सुस्पष्ट हो जाता है कि मनुष्य स्वयं अपने भाग्य का निर्माता है। श्रीरामचरिमानस में आता है- **करम प्रधान बिस्व करि राखा। जो जस करइ सो तस फलु चाखा।**

परमानन्दजी बणियाल कृत साखी

मीनखा जलम मीले मेरा जीवौ, चूकै भव चौवरासी।
नुवौ लेखो हुवै मेरा जीवो, करिसी सो जीव पायसी।
कीयो पाव जीसो करिसी, दोस काहु नहीं दीजीयै।
सोदो वसत अनेक करसी, समझ लाहो लीजीयै।
सवा दोढ़ा दुणां अनंता, असो माल वीसाहीया।
सुमति कुमत्य दोय, मिनख जंमारो पाइया।1।
कुमति संग्य कांम किरोध मेरा जीहो, हठ अहंकार कुलोभी।
लालच चोरी ठगाइ मेरा जीवो, कुमली कुचाल कुसोभी।
कुसोभी मुख कुसभ भाख, सुभ साच नै उचरै।
दान सील तप भाव नांही, दया हीरदै ना धरै।
सीनान ध्यान भजन नांही, दोरै वासो दीजीयै।
मीनख जमारो अफल इण्य परे, कुमति संग न कीजियै।2।
सुमति संग्य सील संतोष मेरा जीहो, सुवचन साच सुभावा।
कीरीया भजन धरम मेरा जीवौ, गुण गोम्यद का गावा।
गुण गाव मुकति पावै, आन सेव नै उचर।
उपगार सार अपार अहोनीस, ध्यान हरि हीरद धर।
मुकति माघ इण्य विध्य धाव, दान सुपहा जीजीय।
रतन जलम संसार सागर, सुमति सुसंग कीजीय।3।
औ ओसर मीनख जलम मेरा जीवो, वांरो वार नै पाव।
हरिजन पारय लंघ्या मेरा जीहो, बोहड़य इण्य खंडि आव।
इण्य खण्डि नै आव करे केला, सदा कोड सुहावणां।
हुर कांमैण्य करे केला, रतन गढ़ रल्य आंवणां।
विसन दरसण सदा परसौ, वे सुन्य वासो विसन करे।
परमाणंद गाव दरसण पाव, ओ ओसर मिनख जनम को।4।

भावार्थ- परमानंद जी कहते हैं कि हे मेरा जीव! तुझे यह मानव जन्म मिला है क्योंकि इसी शरीर से ही चौरासी लाख योनियों से छूटा जा सकता है। इसी मानव शरीर से ही नया कर्म करने का अधिकार प्राप्त है। इसी शरीर से ही जो कुछ किया जायेगा, वही फल प्राप्त होगा। जैसा करेगा वैसा ही फल पायेगा। किसी को दोष नहीं देना। 'आपे खता कमाणी, विसन नै दोष किसो रे प्राणी'।सबद। इस जीवन में अनेकों कार्य व्यवहार किया जायेगा, किन्तु समझ, सचेत होकर कार्य करेगा, तभी सुफल की प्राप्ति हो सकेगी। यहां संसार में आकर व्यापार करें जिससे शुभ कर्मों को दोगुणा, चौगुणा, अष्टगुणा करके वापिस जाना है। यहां मानव जीवन में सुमति और कुमति दो मार्ग है। सुमति से शुभ जीवन मुक्ति प्राप्त होगी और कुमति से दु:खी जीवन जन्म-मृत्यु को प्राप्त होगा।1।

कुमति के साथ काम, क्रोध, हठ, अहंकार, कुलोभ, लालच, चोरी, ठगाई, कुचीलता, परनिद्या, मुख झूठ आल बाल बोलना इत्यादि सहयोगी है। स्वयं ही निंदनीय और परनिद्या करेगा। दान, शील, तप, भाव, दया, स्नान, ध्यान, भजन इत्यादि कुमति के संग नहीं हो सकेगा। शुभ कर्मों के अभाव में नरक में निवास मिलेगा। यह मानव जीवन निष्फल हो जायेगा। इसलिये कुमति का संग नहीं करना चाहिये।2।

सुमति के साथ शील, संतोष, सुवचन, साच, शुभ क्रिया, हरि भजन, धर्म गोविन्द के गुणों का गान करेगा। ऐसा संत जन ही मुक्ति को प्राप्त करता है। अन्य देवता भूत प्रेतों की उपासना नहीं करता। एक निरंजन, निराकार विष्णु की ही उपासना करता है। इस प्रकार से मुक्ति के मार्ग पर तेजी से चलता है तथा सुपात्र को दान देता है। संत जनों का संग करता है। इस प्रकार से सुमार्ग पर चलने वाला सुमति को प्राप्त करके इस शरीर से जन्म मरण से छूटकर संसार सागर से पार उतर जाता है।3।

इस मानव जीवन में यह दुर्लभ अवसर प्राप्त हुआ है जो अन्य जीव योनियों में नहीं मिलता। अनेकों हरि के भक्त इसी सुमार्ग पंथ को पकड़कर संसार सागर से पार उतर गये है फिर से संसार सागर में नहीं आये है। इस मृत्यु लोक में नहीं आते हैं किन्तु वहां वैकुण्ठ धाम में हरि के पास आनन्द उत्सव मनाते है। शून्य में भगवान विष्णु का वास है वही भगवान का परम धाम है जहां जाने पर वापिस लौटकर नहीं आते। सदा ही भगवान विष्णु के संग में रहते है। किसी प्रकार का दु:ख वहां पर नहीं है। परमानन्द गाते हैं और उस अलौकिक आनन्द को प्राप्त करते है। यह दुर्लभ अवसर मानव जन्म को सार्थक करता है। आप भी कीजिये।4।

साभार- **साखी भावार्थ प्रकाश**

"दोहा"

आदि शब्द गुरु एक था, ओम ही नाम कहाय।
नाम रूप सब जगत भया, शब्द ही रूप रहाय।
वही शब्द गुरु जम्भजी, शब्द ही करत उच्चार।
शब्द गुरु हम सुरति है, निस दिन करत विचार।
शब्द ही शब्द प्रणाम करि, वर्णेउ शब्द अनूप।
अर्थ ज्ञान आखर चहूं, जम्भेश्वर सत रूप।
जो कुछ कहूं से मैं नहीं, कहन हार वही और।
भला भया यदि अर्थ में, सतगुरु संत का जोर।

धर्म - क्या और क्यों?

धर्म, दर्शन और अध्यात्म- ये तीन शब्द हमें बार-बार सुनने-पढ़ने को मिलते हैं। तीनों ही शब्दों का अर्थ अलग-अलग है, लेकिन यहां बात सिर्फ धर्म की करते हैं कि आखिर धर्म क्या है? हिन्दू सनातन सिद्धांत धारा में धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष में धर्म का प्रमुख स्थान है। भारतीय परम्परा में जिहाद के विपरीत धर्मयुद्ध का अर्थ किसी संप्रदाय विशेष के लिए युद्ध नहीं, सत्य और न्याय के लिए युद्ध रहा है।

धर्म को अंग्रेजी में रिलिजन (religion) और ऊर्दू में मजहब कहते हैं, लेकिन यह उसी तरह सही नहीं है जिस तरह की दर्शन को फिलॉसफी (philosophy) कहा जाता है। दर्शन का अर्थ देखने से बढ़कर है। उसी तरह धर्म को समानार्थी रूप में रिलिजन या मजहब कहना हमारी मजबूरी है। मजहब का अर्थ संप्रदाय होता है। उसी तरह रिलिजन का समानार्थी रूप विश्वास, आस्था या मत हो सकता है, लेकिन धर्म नहीं। हालांकि मत का अर्थ होता है विशिष्ट विचार। कुछ लोग इसे संप्रदाय या पंथ मानने लगे हैं, जबकि मत का अर्थ होता है आपका किसी विषय पर विचार।

यतोऽभ्युदयनिःश्रेयससिद्धिः स धर्मः।

धर्म वह अनुशासित जीवन क्रम है, जिसमें लौकिक उन्नति (अविद्या) तथा आध्यात्मिक परमगति (विद्या) दोनों की प्राप्ति होती है।

धर्म स्वयं सत्य का ही नाम है, धर्म अध्यात्म विज्ञान से निकला हुआ शब्द है, जिसका अर्थ होता है कि जगत में जो कोई वस्तु, मार्ग, कर्तव्य एवं अन्य उत्तरदायित्व धारण करने के योग्य है वही धर्म है। संसार में धारण करने योग्य मात्र सत्य का मार्ग है, इसलिए स्वयं सत्य ही धर्म है। सत्य का अर्थ होता है जो सिद्धान्त शाश्वत है, सदा से है और सदैव रहेगा। जिसे मिटाया न जा सके। सत्य के विपरीत जो कुछ है वह अधर्म की श्रेणी में आ जाता है।

विद्वान व्यक्ति धर्म की व्याख्या परिस्थितियों के अनुसार विभिन्न प्रकार से करते है, परंतु उनके मूल उद्देश्य में केवल सत्य मार्ग का पालन करना होता है, धर्म सही पथ पर चलते हुए जीवन निर्वाह करना है, यह परिवार एवं समाज के लोगों के बीच अच्छे संस्कार उत्पन्न करता है, फलस्वरूप व्यक्ति बुरे विचारों से सदैव दूर रहता है और शांति का अनुभव कराता है। धार्मिक लोग अपने पथ से कभी भटकते नहीं है, जीवन में भयानक कष्ट आने पर भी वे सत्य मार्ग का पालन करते रहते है, और समाज में अपना सच्चा आदर्श स्थापित करते हैं।

कर्तव्यों का पूर्णतः पालन करना धर्म है - धर्म का एक बड़ा लक्ष्य है कि व्यक्ति सही-गलत में भेद करना सीख ले। अपने परिवार के प्रति, समाज व राष्ट्र के प्रति सभी उत्तरदायित्व को पहचाने, साथ ही सत्य मार्ग पर चलता हुआ अपने सभी कर्तव्यों को मन से पूर्ण करने की चेष्टा करता रहे।

उदाहरण

- माता-पिता का धर्म अपने बच्चों का अच्छा चरित्र निर्माण करना एवं सदैव उनका मार्गदर्शन करते रहना।
- गुरुजनों का कर्तव्य है कि सभी छात्रों को बिना भेदभाव के उचित शिक्षा प्रदान करना।
- बच्चों का कर्तव्य है की सदैव माता-पिता, शिक्षक, अतिथि, बड़े बुजुर्गों का सम्मान करना और उनकी सभी सही बातों को अपने जीवन में ग्रहण करना।
- ध्यान रहे कि कर्तव्य पालन का अर्थ भ्रष्ट और गलत मार्ग पर चलना नहीं होता है, अपितु जो कार्य मानव मात्र, प्रकृति एवं अन्य जीवों के बीच में बाधा पहुंचाता है वह कार्य गलत श्रेणी में आता है, ऐसे कार्य से सभी व्यक्तियों को बचना चाहिए।
- समाज व राष्ट्र की रक्षा करना धर्म है-
  धर्म का अर्थ है की सभी प्रकार के बुरे लोगों एवं बुराइयों से समाज व राष्ट्र के लोगों की रक्षा करना, धर्म लोगों में आत्मविश्वास को सुदृढ़ करता है, यह व्यक्ति को श्रेष्ठ मार्ग पर चलना सिखाता है और जब व्यक्ति उच्च गुणों से भर जाता है तो

वह समाज में उपजी हुई बुराइयों के दमन के प्रति उजागर हो जाता है। मात्र एक धार्मिक व्यक्ति ही समाज को जीवन के उच्चतम मूल्यों के विषय में समझा सकता है। जब राष्ट्र में धर्म का नाश होने लगता है तो भ्रष्टाचार, चोरी, लूटपाट, मारपीट आदि अवगुण समाज के उच्चतम शिखर पर विराजमान हो जाते है। इसलिए इस प्रकार की बुराइयों को नष्ट करने का कर्तव्य सभी धार्मिक व्यक्तियों का होता है।

धर्म क्यों?

सत्य की स्थापना करना धर्म का प्रमुख लक्ष्य- सत्य सूर्य के समान मानव जाति को ज्ञान का प्रकाश देने वाला होता है, किन्तु जब कभी भी सत्य की हानि होती है तो धर्म का नाश होता है। समाज के अन्दर दुष्ट व्यक्तियों की उपस्थिति हमेशा बनी रहती है, ये व्यक्ति अपने नकारात्मक विचार एवं कार्यों से समाज में अस्थिरता पैदा करते रहते हैं, जिस कारण लोगों के बीच लालच, झूठ, बेईमानी का जन्म होता है।

कुकृत्य करने वाले लोगों के कारण ही लोग सत्य के मार्ग से विचलित हो जाते हैं, क्योंकि जब देश के लोग लालची एवं स्वार्थी होकर मानव कल्याण के विषय में विचार करना बंद कर दें तो उस राष्ट्र का पतन निश्चित ही हो जाता है। इसलिए सभी विद्वान लोगों का धर्म होता कि वह सत्य की हानि नहीं होने दें, चाहे उसके लिए उन्हे कोई भी मूल्य चुकाना पड़े। जो व्यक्ति सत्य की रक्षा करने में सदैव तत्पर रहते हैं उन लोगों की ख्याति देश-विदेश तक पहुंच जाती है, ऐसे लोग समाज में उच्च स्तर का सम्मान व प्रतिष्ठा प्राप्त करते हैं। इसलिए सत्य की स्थापना में सभी व्यक्तियों को सदैव प्रयास करते रहना चाहिए, ताकि लोगों को पथभ्रष्ट होने से बचाया जा सके और एक श्रेष्ट समाज का निर्माण किया जा सके। यही धर्म रक्षा है धर्म का लक्ष्य होना चाहिए, मात्र उपासना पद्धति और प्रतीक धारण करना ही धर्म नहीं है।

प्रकृति का संरक्षण करना धर्म है- भारत देश में प्रकृति को माता का स्थान दिया गया है, प्रकृति सभी आवश्यक वस्तुओं की जननी है। वास्तव में सभी जीवों का भरण पोषण प्रकृति के द्वारा ही किया जाता है। अगर प्रकृति न हो तो जीवन की कल्पना भी नहीं की जा सकती है। इसलिए धर्म कहता है कि प्रकृति एवं इसके संसाधनों की सदैव रक्षा करना सभी मनुष्यों का कर्तव्य है। मनुष्य अपने जीवन-यापन के लिए अन्न, जल, भोजन, वायु, ईंधन, खनिज आदि सभी पदार्थ सतत् रूप से प्राकृतिक संसाधनों से लेता रहता है, इसलिए सभी मनुष्यों का धर्म है कि वह इन सभी प्राकृतिक संसाधनों का संरक्षण भी करता रहे, ताकि आने वाली पीढ़ियां भी इन संसाधनों का भरपूर लाभ प्राप्त कर सके।

परंतु वर्तमान में मनुष्य उसका उल्टा ही कर रहा है, वह सभी प्राकृतिक संसाधनों का सीमा से अधिक उपभोग करता जा रहा है, किन्तु उसके संरक्षण के लिए कुछ विशेष उपाय नहीं कर रहा है। इसलिए पृथ्वी पर संतुलित जीवन जीने का वातावरण खराब व निम्न कोटि का होता जा रहा है। प्रदूषित हवा, जल अथवा ग्लोबल वार्मिंग प्रकृति के साथ नकारात्मक छेड़ करने के ही परिणाम है।

सभी लोगों को शिक्षित और सदाचारी बनाना धर्म का लक्ष्य- धर्म का एक अन्य अर्थ सभी मनुष्यों के भीतर उच्च स्तर के आदर्श स्थापित करना है, ताकि जीवन के संघर्षों से कोई व्यक्ति हताश न हो और गलत मार्ग से सदैव दूर रहे, परंतु ये आदर्श केवल अच्छी शिक्षा से ही प्राप्त किये जा सकते हैं। यहाँ शिक्षा का अर्थ कॉलेज डिग्री शिक्षा से नहीं है, अपितु शिक्षा का अर्थ जीवन के मूल्यों को समझ कर शांति से जीवन यापन करना है। शिक्षा धर्म के केंद्र में विराजमान है। शिक्षा के बिना धर्म की व्याख्या नहीं की जा सकती है, धर्म जीवन जीने की एक कला है और शिक्षा का उद्देश्य श्रेष्ठ संस्कारों को व्यक्ति की आत्मा में स्थापित करना है। सच्ची शिक्षा समाज को सही दिशा एवं दशा प्रदान करती है, जिस राष्ट्र में शिक्षा को सर्वोत्तम समझा जाता हो, उस राष्ट्र के लोग धन-सम्पदा से परिपूर्ण बने रहते है, वहाँ भ्रष्टाचार जैसे बुराइयों का अंत हो जाता है और समाज के लोग निर्भीक होकर जीवन व्यतीत करते हैं, इसलिए सभी लोगों को सही शिक्षा प्रदान करना धर्म का प्रथम लक्ष्य है।

धर्म संतुलित जीवन जीने की कला है- संसार में लगभग सभी मनुष्य असभ्य ही पैदा होते हैं, बहुत कम पुण्य आत्मा ऐसी होती है जो अपने पूर्व जन्मों के अच्छे संस्कार के कारण विद्वान के रूप में जन्म लेती है। सही संस्कार के अभाव में मनुष्य सदैव अशांत अनुभव करता है, धन भी अशांत व्यक्ति को शांति प्रदान नहीं कर सकता है। इसलिए एक धार्मिक व्यक्ति ही परमानंद की स्थिति को प्राप्त करने में सक्षम होता है, क्योंकि मात्र धर्म (कर्तव्यपरायणता) ही मनुष्य जाति में अच्छे संस्कार पैदा कर सकता/ती है, सही संस्कार से ही अच्छे विचार पैदा होते हैं, जिससे मनुष्य का उचित चरित्र निर्माण होता है। एक अधार्मिक व्यक्ति के भीतर अच्छे विचारों की हमेशा कमी रहती है, अधार्मिक व्यक्ति कितना भी दिखावा कर ले, सुख-सुविधाएं खरीद ले, परंतु बिना धार्मिक शिक्षा के वह संतुलित जीवन नहीं प्राप्त कर सकता है।

सुख शांति का आधार है धर्म- सुख, शांति एवं संतुष्टि का मार्ग धर्म से होकर जाता है। धार्मिक लोग कम धन अर्जन करके भी संतुलित जीवन निर्वाह करते हैं, क्योंकि धर्म मनुष्य को अध्यात्म विज्ञान की ओर ले जाता है। यह व्यक्ति को परमानंद मार्ग प्रदान करने का सर्वश्रेष्ठ मार्ग है जिस पर चलकर सभी मनुष्य संसारिक माया के बोझ से मुक्त होते जाते हैं।

धर्म के 10 लक्षण-

मनु स्मृति के माध्यम से मनु महाराज ने धर्म के दस लक्षण बताये है जो कि इस कथन में दिया गया है।

धृतिः क्षमा दमोअस्तेयं शौचं इन्द्रिय निग्रहः
धीर्विद्या सत्यमक्रोधो दशकं धर्म लक्षणं॥

धैर्य, क्षमा, दम, अस्तेय, शौच, इन्द्रिय निग्रह, धी (बुद्धि), विद्या, सत्य, अक्रोध धर्म के दस लक्षण हैं। अर्थात् धैर्य (धैर्यवान होना), क्षमा (दूसरों को क्षमा करने का भाव रखना), दम (सदैव संयम रखना), अस्तेय (चोरी न करना), शौच (शरीर को मल त्याग आदि कर के शुद्ध रखना), इन्द्रिय निग्रह (इन्द्रियों को सदैव वश में कर सही कार्य में लगाना), धी (बुद्धि का सही प्रयोग करना), विद्या (सही विद्या या ज्ञान प्राप्त करना) सत्य (सदैव सत्य के पथ पर चलना) व अक्रोध (क्रोध का त्याग कर चित्त को शांत रखना) सम्मिलित है।

संक्षेप में धर्म की व्याख्या -

- स्वयं सत्य ही धर्म है।
- अज्ञानता को जो मिटा दे, वो धर्म होता है।
- बुराई को जो नष्ट कर दे, वो धर्म होता है।
- जो शिक्षा सत्य ज्ञान का प्रकाश कर दे, वो धर्म है।
- सभी जीवों को समान भाव से बर्ताव करने की शिक्षा जो दे वह धर्म है।
- प्रकृति का रक्षण धर्म है।
- समाज की बुराई का अंत कर सदैव शांति की स्थापना करना सभी मनुष्यों का धर्म है।
- लोभ, ईर्ष्या, भ्रष्ट आचरण का त्याग करना धर्म है।
- सज्जनों, विद्वानों व निसहाय जीवों की रक्षा करना धर्म है।
- अपने शरीर व मन की नकारात्मकता का नाश करना धर्म है।
- सत्य की रक्षा व असत्य का खंडन करने के लिए सदैव तत्पर रहना धर्म है।
- सभी मनुष्यों में वेद शिक्षा का प्रचार करना धर्म है।

धर्म किसी व्यक्ति की मूलभूत प्रकृति है जो उसके व्यवहार के स्वरूप को निर्धारित करती है। जब तक व्यक्ति अपनी प्रकृति के प्रति ईमानदार रहता है तथा उसका व्यवहार उसकी प्रकृति अनुसार रहता है तब तक वह सही मार्ग पर रहता है। अपने अंतर्निहित स्वभाव से विचलित होना अधर्म है। समस्त प्राणियों द्वारा व्यवहार में अपनी-अपनी प्रकृति के पालन से संसार में सामंजस्य बना रहता है। धर्म का पालन न करने से असामंजस्य की स्थिति पैदा हो जाती है। संसार को धर्म के मार्ग पर चलने देने से ही मानव जीवन में एक सामंजस्यपूर्ण संतुलन बना रह सकता है।

-डॉ. राजा राम
गांव शेखूपुर दड़ौली, फतेहाबाद
मो.: 9896789100

जेतसी को राज्य प्राप्ति का वरदान

वीसनोई कह कुंवर प्रतापसी भागबलि थे। जाम्भोजी कह- जेसलमेर गया पहलू सवामण भाग थो। जाप दरखत कटाया जा पछ रतीउ रहयो नैही। कंवर बीकानेर गयै पछै राव लूणकरण जोतगी बुलाया, जती सेवड़ा बुलाया, भगवत वसना बुलाया, संन्यासी जोगी बुलाया, दीसंतरी श्रब वेदारथीयां नू पूछ्या- म्हे ढोसी जावां, म्हान महुरत द्यौं, साराइ कह्यो- रावजी री फतै होयसी। रावजी साथ भेलो कियो। काण्यवत डेरा किया। श्री जाम्भोजी काणांवत आया। कुंवर वरसी आय पगे लागो। जाम्भोजी कह वरसी। तूं रावजी नूं पाल्य छः माहीना पछै थांहरी जीत्य होयसी। पहलां जायस्यौ तो हारस्यो। म्हें रावजी नूं पाल्य छः माहीना पछै थांहरी जीत्य होयसी। पहलां जायस्यौ तो हारस्यौ। म्हें रावजी नूं थांभण नुं आया छाः। रावजी वीजो मालावत मेल्ह्यों। वीजो कहे और सगला कहे फतैं होयसी। मांहरा देव मांहर सहाय होयस्यै। मो मालीय सरीखा साथ छै। भांजणी पत्य देवजी कह- सगला पहलु तूं भाज्यस्यै। जाम्भोजी श्री वायक कहे-

शब्द 87

जिहिं का उमग्या समाधूं, तिहिं पंथ के बिरला लागूं।
बीजा चाकर बीरूं, रिण शंख धीरू।
कबी झूझत रायूं, पासै भाजत भायूं।
ते हतंते जीयौ, ताथैं नुगरा झूझ न कीयो।

सम्भराथल पर कुंवर प्रताप ने घोड़ा नचाया था। श्री देवजी ने साथरियों को शब्द द्वारा समझाया था। किन्तु उनके मन में बैठी हुई बात को वे रोक नहीं सके थे और देवजी से पूछ ही लिया- हे देव! कुंवर प्रतापसी का भाग्य बलवान है, इसीलिए तो राजघराने में जन्म लिया है। जाम्भोजी ने कहा- अवश्य ही भाग्यवान कुंवर है। राजा का बेटा है। कभी यह राजा बन सकता था। किन्तु अब नहीं क्योंकि यह कुमार जब जैसलमेर गया था तो इसका सवामन भाग्य था अर्थात् सवाया भाग्य था। किन्तु वहाँ जाकर इसने हरे वृक्ष कटवाये हैं उसके बाद तो एक रत्ती भर भी भाग्य नहीं रहा है। हरे वृक्षों को काटना तो पाप की पोटली सिर पर बाँध लेनी है। इसका भाग्य फूट ही गया है।

नाथोजी कहने लगे- हे शिष्य! जब कुंवर प्रतापसी जैसलमेर से वापिस बीकानेर पहुँचा, तब अपने बेटे को वापिस आया जान कर लूणकरण ने एक सभा बुलायी। सभा में उपस्थित ज्योतिषी, यति, सैंवड़ा, भक्त, संन्यासी, दिसांतरी, वेदज्ञ आदि से विचार-विमर्श किया। राव ने पूछा- हे विद्वानो! मैं ढोसी, नारनौल प्राप्त करने हेतु सेना सहित जाना चाहता हूँ। आप लोग मुझे मुहूर्त बताओ। सभी ने राजा की बात का समर्थन किया और कहा- अवश्य ही जाओ और विजय पताका फहराओ। जीत तुम्हारी ही होगी।

रावजी ने अपने साथियों को एवं सेना को एकत्रित किया तथा मुहूर्त देखकर के रवाना हुए। काण्यवत के तालाब पर डेरा लगाया। जाम्भोजी स्वयं काण्यौत पहुँचे। उसी समय बरसी आया और गुरु के चरणों में प्रणाम किया।

जाम्भोजी ने कहा- हे वरसी! तू रावजी को जाने से रोक दे, इस समय तुम्हारी जीत नहीं होगी। आज से छः महीने पश्चात् जाओगे तो तुम्हारी जीत होगी। मैं यहाँ रावजी को रोकने के लिए आया हूँ। वरसी ने रावजी से कहा- जाम्भोजी जाने से रोकते हैं। ये आपके ज्योतिषी, मुहूर्त झूठे हैं। यदि चलेंगे तो वापिस लौटकर नहीं आओगे। रावजी ने माले को भेजा-माले ने आकर देवजी को रावजी का संदेश सुनाते हुए कहा-

हे जम्भेश्वरजी! रावजी ने कहा है कि सभी लोग मुझे युद्ध में जाने की बात कहते हैं। आप मुझे क्यों रोकते हैं। सभी पण्डितों के अनुसार तो मेरी जीत निश्चित है। हमारे देव हमारे साथ हैं, जो हमारी रक्षा करेंगे तथा माले जैसा मंत्री सलाहकार साथ में है। भारी सेना का साथ है, फिर हार कैसी? श्री देवजी ने शब्द सुनाते हुए कहा- हे माला! पहले तो तू ही भागेगा। पीछे तुम्हारे अन्य सेना, तथा तुम्हारे देवताओं का तो पता भी नहीं चलेगा। ऐसा कहते हुए शब्द सुनाया-

जिसके मन की उमंगें लहरें लेती हैं। स्वयं का मानसिक उत्साह होता है, वही साधनद्म तथा युद्ध में सफल हो सकता है। दूसरे के कहने-सुनने से जो कार्य करेगा, वह सफल नहीं हो सकता। स्वयं के पास ही कुछ गुंजाइश नहीं है, तो दूसरा क्या करेगा? ऐसे उत्तम पंथ में तो विरला ही लगता है। दूसरे सभी तो चाकरी करते हैं। दूसरे के कहने से लगते हैं। उनका उत्साह, उमंग तो क्षणिक ही होता है।

कुछ लोग प्रथम तो घोषणा कर देते हैं कि हम साधना, भजन मुक्ति पर्यन्त करेंगे। बीच में हटेंगे नहीं। युद्ध भूमि में भी जाकर शंख बजा देते हैं, सूचना देते हैं कि हम तैयार हैं। कुछ समय तक जूझते भी हैं, साधना तथा युद्ध दोनों में ही किन्तु पीछे कष्ट पड़ने पर भाग जाते हैं। डर के मारे मैदान छोड़ जाते हैं। ये लोग दूसरों की हत्या करके स्वयं जीना चाहते हैं। ऐसे लोग वीरता से युद्ध नहीं कर सकते। ये लोग नुगरे हैं।

हे माला! तू स्वयं एवं तुम्हारे लोग ऐसे ही नुगरे हैं।

इनके बस की बात नहीं है। जो लोग कलयुग में थान-मूर्ति की पूजा करते हैं तथा जीवित नारायण को काटते हैं। जो निर्जीव की तो पूजा करते हैं और सजीव की हत्या करते हैं। उनमें बुद्धि कहाँ से आयेगी ? उनके अंदर तो शैतान बैठा हुआ है।

मालौ रावजी के पास्य गयौ। देवजी उठउं वरज छः। हमै उं वरज छै। रावजी जांभोजी घणो बुरो कहै छै: कै भाजिस्यै कै रिण मां रहिसी। राव रोस करनै कह्यो- हूँ पाछो आयौ समौ इतरा इण मोडियां माहे जो ये जका करूं। रावजी कह आपा ठीक। धनराज कह- जांभाजी री कहीयौ किया भला छः। रावजी कह- मरणता बीहौ छौ तो आप गढरो जापतो करो पाछा पधारौ। धनराज कह- थे कह्यो सौ करिस्या। धनराज भाटी गढ आयौ। रावजी नारनौल के चडिया। देवजी सम्भराथल आया।

जेतसी जाम्भाजी के हजूरी आयौ। अरज करण लागौ। जाम्भाजी- राव लूणकरण रै मह मोभी छा। मैं एक घोड़ो मांग्यौ। रावजी मोनो एक घोड़ो दीजै। आपरे साथ हालूं। तिकौ रावजी मोनो रीसाय कह्यो- तोने घोड़े बेई भाटा। मोटा दगड़ा। जैतसी वैराजी हुवौ। जैतसी जांभाजी पाऐ आयौ। जांभाजी! बाप सगला इ सरीसो मोन भाठा करया। देवजी कह- गढ़ कोट थांरो देस थांरो बल कीसुं चाहै- जांभोजी श्री वायक कहै।

शब्द-64

मैं कर भूला मांड पिराणी, काचौ कन्ध अगाजूं।
काचा कंध गले गल जायसैं, बीखर जैला राजों।
गड़बड़ बाजा कांय विबाजा, कण विण कूकस कांय लेणा। कांय बोलो मुख ताजो।
भरमी वादी अति अहंकारी, लावत यारी, पशुवां पड़े भिरांति।
जीव विणासै लाहै कारणै, लोभ सवारथ खायबा खाज अखाजूं।
जो अति काले लेजम काले तेपण खीणा, जिहि का लंका गढ़ था राजों।
बिन हस्ती पाखर बिन गज गुड़ीयों, बिन ढोला डूमां लाकड़ियो।
जाकै परसण बाजा बाजै, सो अपरंपर काय न जंपो।
हिन्दू मुसलमानों, डर डर जीव के काजै।
रावां रडुका राजा रावां, रावत राजा, खाना खोजां, मीरां मुलकां घंघ फकीरां।
घंघा गुरवां सुरनर देवा, तिमर जू लंगा, आयसा जोयसा, साह पुरोहितां।
मिश्र ही व्यासां रूंखा बिरखां आव घटंती अतरा माहे कूण विशेषो। मरणत एको माघो।
पशु मुकेरू लहै न फेरूं कहे ज मेरूं सब जग केरूं। साचौ से हर करै घणेरूं।
रिण छाणै ज्यूं बीखर जैला, तातें मेरूं न तेरूं।
बिसर गया ते माघू, रक्तूं नातूं सेतूं धातूं कुमलावै ज्यूं शागूं।
जीव र पिंड विछोबा होयसी, ता दिन दाम दुगांणी।
आड न पैको रती बिसोवो सीझै नाही, ओपिंड काम न काजूं।
आवत काया ले आयो थाह्य, जातैं सूको जागो।
आवत खिण एक लाई थी, पर जातैं खिणी न लागो।
भाग परापति कर्मा रेखां, दरगैं जबला जबला माघों।
बिरखे पान झड़े झड़ जायला, तेपण तई न लागूं।
सेतूं दगधूं कवलज कलीयों, कुमलावै ज्यूं शागूं।
ऋतु बसंती आई, और भलेरा शागूं।
भूला तेण गया रे प्राणी, तिहिं का खोज न माघूं।
विष्णु विष्णु भण लई न साई, सुर नर ब्रह्मा को न गाई।
तातैं जंवर बिन डसीरे भाई, बास बसंते कीवी न कमाई।
जंवर तणा जमदूत दहैला, तातैं तेरी कहा न बसाई।

सतगुरु ने माले को शब्द सुनाया। माला सचेत होकर रावजी के पास गया और कहने लगा- हे रावजी! देवजी वहीं तालाब पर बैठे हुए ही आपको रोक रहे हैं। वे आपको जाने की आज्ञा नहीं दे रहे हैं। हमें इस प्रकार से बहुत ही बुरा कहा है। उन्होंने कहा है कि या तो युद्ध के मैदान से भागोगे। या युद्ध के मैदान में ही रह जाओगे, वापिस लौट नहीं सकोगे।

राव ने क्रोधित हो कर कहा- अब तो मैं अवश्य ही जाऊँगा। किन्तु वापिस लौट कर आऊँगा। तब इस मोडिये के साथ ऐसी करूँगा, जो अब तक किसी ने किया ही नहीं। यह हमें राज का विस्तार करने नहीं देता। देवी-देवताओं की पूजा भी नहीं करने देता। कोई न कोई नियम धर्म आगे रखता है। आगे मैं एक भी बात नहीं मानूँगा। मैं जो कर रहा हूँ, वही ठीक है। उसी समय जाँगलू के धनराज भाटी साथ में थे। उन्होंने भी राव को समझाते हुए कहा- जांभोजी ने जो बात कही है, वही करने में हमारी भलाई है। रावजी ने कहा- धनराज जी! आप मरने से डरते हो। यदि ऐसा है तो आप वापिस चले जाओ। गढ़ की व्यवस्था करना। जो आप कहते है वही करूँगा। धनराज भाटी वापिस लौट आया। रावजी ने नारनौल की तरफ रवानगी की और जाम्भोजी वापिस सम्भराथल लौट आये।

राव लूणकरण का बड़ा बेटा जेतसी सम्भराथल पर श्री

देवजी के पास आकर विनती करने लगा- हे जाम्भाजी ! राव लूणकरण का मैं सबसे बड़ा बेटा हूँ। मैंने रावजी से एक घोड़ा माँगा था। मैंने कहा था- हे पिताजी ! मुझे एक घोड़ा दीजिए। मैं भी आपके साथ युद्ध करने को चलूँ। किन्तु रावजी ने क्रोधित होकर कहा- तुम्हें घोड़े की जगह पत्थर- भाठा देता हूँ। बड़े-बड़े पत्थर दगड़े। इसलिए नाराज होकर देवजी आपके पास यहाँ आया हूँ। अब तो मैं आपकी शरण में हूँ। हे देव ! मेरे छोटे भाई प्रतापसी को तो घोड़ा दिया। मुझे भाठा दिया। बाप तो सभी पुत्रों के लिए बराबर होता है। मेरे साथ भेदभाव क्यों ?

देवजी ने कहा- हे जेतसी ! सुनो, यह बीकानेर का गढ़ -कोट तुम्हारा ही है। यह बागड़ देश भी तुम्हारा ही है। तुम बलवान हो, बलवान क्या नहीं चाहता है ? ऐसे कहते हुए शब्द बनाया- हे प्राणी ! अहंकार के वशीभूत होकर भूल में मत पड़। जिस शरीर एवं राज की वजह से अहंकार करता है, यह तो कच्चा है, कभी टूट जायेगा। जिस प्रकार से कच्ची मिट्टी जल में गल जाती है। उसी प्रकार से यह शरीर एवं राजपाट भी गल जायेगा। ये तुम्हारे दरबार के गाजे बाजे, उठा-पटक, छीना-झपटी, छोटा-बड़ा, मेरा-तेरा, ये सभी कुछ कण रहित थोथे भूसे के सामान हैं। इनमें सुख आनंद रूपी कण की प्राप्ति कहाँ है ?

अपने ही मुख से स्वकीय बड़ाई क्यों करते हो ? भ्रम में पड़े हुए, वाद-विवाद में रचे हुए, अत्यधिक अहंकारी, स्वार्थवश सम्बन्ध जोड़ते हैं। पशु सदृश भ्रमित जीवनयापन करते हैं। अपने लाभ हेतु ये राजा लोग जीवों को मारते हैं। अपना राज्य बढ़ाने हेतु प्रयत्नशील रहते हैं। अखाद्य भोजन करते हैं।

समय आयेगा। यमदूत इन्हें ले जायेंगे, तब इनका सभी कुछ नष्ट हो जायेगा। जिनके गढ़ थे, राज थे, हस्ती घोड़ा थे, किंतु ये कोई साथ नहीं चलेंगे। इनके बिना ही, बिना गाजे बाजे पैदल ही जाना होगा। जिस परमात्मा के दर्शन- स्पर्श से दिव्य बाजे बजते हैं, उनका स्मरण क्यों नहीं करते ? केवल संसार का ही स्मरण किया।

हे हिन्दू मुसलमानो ! इस जीव की भलाई के लिए पापों से डरो। वहाँ पर तो सभी बराबर ही है वह चाहे राजा, रंक, राव, रावत, खान, खोज, मीरा, मुलका, गंगा पार रहने वाले फकीर, गंगा पर रहने वाले गंगा गुरु, सुरनर, तिमर, लंगा, आयस, जोयस, साह पुरोहित, मिश्रा, व्यास, रूखा, बिरखा, इत्यादि इनकी सभी की आयु घटती जा रही है। सभी का मरण एक जैसा ही है। किसी में कुछ भी विशेषता नहीं है।

पशु आदि धन को अपना कहता है, किन्तु तुम्हारा है नहीं क्योंकि एक-एक बार छूट जाता है। तो पुनः प्राप्ति नहीं होती। इसे मेरा कहना नादानी ! सच्चा जो परमात्मा है, वही मेरा है। उसी से ही संबंध जोड़ें, वही सदा साथ रहेगा। जिस प्रकार रिण (जंगल) में पड़ा हुआ छाणा (उपला) समय आने पर अपने आप बिखर जाता है, उसी प्रकार से यह सभी कुछ बिखर जायेगा। इसीलिए न कोई मेरा है, और न कोई तेरा है।

हे प्राणी ! तू अपना मार्ग भूल गया है। एक दिन इस शरीर को छोड़कर यह आत्मा प्रयाण कर जायेगी। जिस प्रकार से शाक-पत्ती उगती है तो लाल यौवन अवस्था में होती है। जब पक जाती है तो सफेद हो जाती है और अंत में कुम्हला जाती है। यही अवस्था मानव की भी होती है। तीन अवस्था को पार करने के अंत में मृत्यु को प्राप्त हो जाता है। जिस दिन शरीर और जीव का विछोह होगा, उस दिन यह तुम्हारे दुगुने चौगुने दाम धन आदि कुछ भी सहयोग नहीं कर सकेंगे। एक पैसा भी साथ नहीं देगा। जो कुछ है यहीं छूट जायेगा।

आते समय तो काया लेकर आया था, जाते समय काया छोड़ कर जायेगा। आते समय तो एक क्षण का समय लगा था, किन्तु जाते समय इतना समय भी नहीं लगेगा। अपने भाग्य कर्मानुसार आगे की यात्रा करेगा। सभी के कर्म भिन्न-भिन्न हैं, इसीलिए मार्ग भी भिन्न-भिन्न ही हैं। दरखत के पत्ते झड़ जाते हैं वे ही पत्ते दोबारा नहीं लगते हैं, नये पत्ते ही दोबारा आते हैं। इसी प्रकार से यह शरीर छूट जायेगा, तो दोबारा प्राप्त नहीं हो सकेगा। जिस प्रकार से शीतकाल में कमल की पत्तियाँ जल जाती हैं तथा अन्य वनस्पति भी कुम्हला जाती है। सर्दी के पश्चात् बसंत ऋतु आती है, तो पुनः प्रफुल्लित हो जाती हैं। विकास कार्य प्रारम्भ हो जाता है। उसी प्रकार से जीवन में उतार-चढ़ाव, सुख-दुःख आता ही रहता है।

हे प्राणी ! तू भूल गया है। अपनी औकात को याद कर और अपने मार्ग को खोज। विष्णु का भजन कर। विष्णु के समान और कोई ग्रहण करने के योग्य नहीं है। उस विष्णु को सुर, नर, ब्रह्मा आदि ने गाया है। इसी से ही उच्च पद को प्राप्त कर सके हैं। विष्णु का भजन करेंगे, तो भयंकर यमदूतों के प्रकोप से बच जायेंगे।

यह कमाई यहीं पर रहते हुए, इस मृत्यु लोक में जीवनयापन करते हुए ही कर सकते हैं। यह शरीर छूटने के पश्चात् तो यह धर्म का कार्य होना असंभव है। मृत्यु समय तो नाग की भाँति डस लिए जाओगे। वहाँ तुम्हारा कुछ भी जोर नहीं चलेगा।

जैतसी कहै देवजी आपरे शब्द मांहे क्यौं समधा क्यौं न समधा। तिण रो विचार लाधो नही। देवजी कहैं तौनें भाठा दीन्हां। वै पाछा आवै नहीं। जैतसी कहे देवजी बारे जाद्बतो घणो छ। घणो छल बल जाणे छै। जाम्भोजी श्री वायक कहे-

शब्द-65

तउवा जाग जु गोरख जाग्या, निरह निरंजन निरह निरालंब।
जुग छतीसों एकै आसन बैठा बरत्या, अवर भी अबधू

जागत जांगू।
तउवा त्याग जू ब्रह्मा त्यागा, अवर भी त्यागत त्यागूं।
तउवा भाग जो इश्वर मस्तक, अवर भी मस्तक भागूं।
तउवा सीर जो ईश्वर गौरी, अवर भी कहियत सीरूं।
तउवा बीर जो राम लक्ष्मण, अवर भी कहियत बीरों।
तउवा पाग जो दश शिर बांधी, अवर भी बांधत पागो।
तउवा लाज जो सीता लाजी, अवर भी लाजत लाजूं।
तउवा बाजा राम बजाया, अवर बजावत बाजूं।
तउवा पाज जो सीता कारण लक्ष्मण बांधी, अवर भी बांधत पाजूं।
तउवा काज जो हनुमत सारा, अवर भी सारत काजूं।
तउवा खागज जो कुम्भकरण महरावण खाज्या, अवर भी खावत खागूं।
तउवा राज दुर्योधन माण्या, अवर भी माणत राजूं।
तउवा राग ज कन्हड़ बांणी, अवर भी कहिये रागूं।
तउवा माघ तुरंगम तेजी, टटू तणा भी माघूं।
तउवा बागज हंसा टोली, बुगला टोली भी बागूं।
तउवा नाग उद्यावल कहिये, गरुड़ सीया भी नागूं।
तउवा शागज नागरबेली, कूकर बगरा भी शांगू।
जां जां शैतानी करै उफारूं, तां तां महंतज फलियों।
जुरा जम राक्षस जुरा जुरिन्द्र, कंश केशी चंडरूं।
मधु कीचक हिरणाक्ष हिरणाकुस, चक्र धर बलदेऊं।
पावत वासुदेवो मंडलीक कांय न जोयबा, इहिं धर ऊपर रती न रहीबा रांजू।

उक्त शब्द सुनकर जेतसी कहने लगा- हे गुरु देव! आपके द्वारा कहा गया शब्द मैंने सुना, किन्तु पूर्णरूपेण समझ नहीं पाया। कुछ तो समझा किन्तु कुछ नहीं समझा। देवजी ने कहा- हे जेतसी! तुम्हारे पिता श्री ने तुम्हें भाठा (पत्थर) दिये, घोड़ा नहीं दिया। वे तुम्हारे पिता वापिस नहीं आयेंगे। यह बीकानेर का गढ़ पत्थर ही तो है। यही तुम्हें दिया है। इस पत्थर के मिल जाने से तुम्हें राज्य की सम्पूर्ण सम्पत्ति मिल जायेगी।

जेतसी कहने लगा- हे देव! उनके साथ में सैनिक हैं। सुरक्षा बहुत है। वे जीत कर लौटेंगे। मुझे आपका दिया हुआ पत्थर नहीं मिलेगा। मेरे पिता स्वयं ही बलवान, शूरवीर हैं तथा छल-बल सभी कुछ जानते हैं। जाम्भोजी ने श्री वायक सुनाया, जिसका भावार्थ इस प्रकार से है-

हे जेतसी! तुम अपने पिता के बारे में यह कहते हो कि छल-बल सभी कुछ जानते हैं, सर्वसमर्थ हैं और जानने का दावा तुम भी करते हो, किन्तु तुझे अब तक पता नहीं है। जो इस संसार में विभूति हुई है वे तो विरले ही हैं। उन विभूतियों के बारे में सुन और अपने से तुलना कर।

इस संसार में बहुत से लोग जाग्रत हुए हैं। सचेत होकर अपने जीवन का लाभ लिया है। किन्तु निरीह, निरंजन, निरांलब, गोरख यति जितने जाग्रत हुए, उतना तो कोई नहीं हो सका। उनके एक ही आसन पर बैठे हुए छत्तीस युग व्यतीत हो गये। वैसे तो अन्य अवधूत भी जागे हैं, किन्तु गोरख जैसा कहाँ?

त्यागी तो संसार में बहुत हुए हैं, किन्तु जितना त्याग प्रजापति ब्रह्माजी ने किया, उतना त्याग कोई नहीं कर सका। ब्रह्माजी सृष्टि के रचयिता होते हुए भी अपने पुत्रों से पूजा नहीं चाही, यही बड़ा त्याग है। कुछ भी नहीं चाहना। भाग्यशाली तो दुनिया में बहुत देखे गये, किन्तु जितना भाग्य ईश्वर के मस्तक में है उतना किसी के भी नहीं। क्योंकि जो भी दृष्ट-अदृष्ट है, वही सभी कुछ ईश्वरीय है। वह धनवानों का भी धनवान है। उनके बराबर कोई नहीं है। किससे उपमा दी जावे।

पति-पत्नी का सम्बन्ध, इस संसार में निभा लेते हैं। यह सम्बन्ध जन्म-जन्मांतरों तक भी किसी-किसी का चलता है। सभी का नहीं। बाकी तो इस जन्म में ही सम्बन्धविच्छेद कर लेते हैं। किन्तु जितना शिव और गौरी-पार्वती में चला, उतना किसी का भी नहीं। पहले जन्म की सती, दूसरे जन्म में पार्वती बन कर आयी और पति शिव तो वही थे।

भाई-भाई का सम्बन्ध चलता है। काफी हद तक निभता है। किन्तु स्वार्थवश टूटता भी देखा गया है। किन्तु जितना सम्बन्ध राम-लक्ष्मण का चला, उतना तो किसी का भी नहीं। ये शरीर दो, किन्तु जीवात्मा एक रूप ही थे। एक के बिना दूसरा जीवंत भी नहीं रह सकता था। सिर पर पगड़ी मान मर्यादा की प्रतीक लोग बाँधते हैं। किन्तु जितनी पगड़ियाँ दसशिर रावण ने बाँधी, उतनी तो अब तक कोई नहीं बाँध सका। किन्तु अति सर्वत्र वर्जयेत, अति सर्वनाश का कारण है।

गृहणियाँ अपने घर, कुल, परिवार की लज्जा रखती हैं। सभी तो नहीं, किन्तु कुछ ही मात्रा में, घर की प्रतिष्ठा गृह लक्ष्मी के हाथ में है, किन्तु जितनी प्रतिष्ठा मान-मर्यादा सीता ने रखी उतनी तो कोई नहीं रख सकी। सीता ने अपने पिता के घर, ससुराल तथा राम की लज्जा रखी। मर्यादा, धर्म में आँच नहीं आने दी।

युद्ध भूमि में जाकर नगाड़े आदि बाजे तो बहुत लोग बजाते हैं। जीतने की लालसा रखते हैं। किन्तु राम ने लंका पर विजय का बाजा बजाया, धनुष की टंकार की, ऐसी टंकार ध्वनि तो अब तक कोई नहीं कर सका।

कुछ चौधरी लोग सभा में बैठ कर मर्यादा की लकीर तो खींचते हैं। उसे पूर्ण कर पायें या नहीं, यह तो निश्चित नहीं है, किन्तु लक्ष्मण ने जो रेखा खींची ऐसी रेखा तो कोई नहीं

खींच पाये। लक्ष्मण ने पंचवटी में सीता की रक्षार्थ रेखा खींची थी, जिसे रावण भी लाँघ नहीं सका था। औरों की तो बात ही क्या है?

परोपकार का कार्य तो बहुत लोग करते हैं, दूसरों के दु:खों से व्यथित होकर उनका कार्य करने की कोशिश करते हैं, किन्तु जो परोपकार सेवा का कार्य हनुमान जी ने किया ऐसा तो अब तक किसी ने भी नहीं किया।

भोजन करने में तो बहुत ही लोग पेटू हैं। अधिक भोजन करते हैं तो एक दूसरे को पीछे छोड़ने की होड़ लगी हुई है। किन्तु जितना भोजन कुम्भकरण करता था, उतना भोजन तो कोई नहीं कर सका। कुम्भकरण का भाई अहिरावण भी उसके तुल्य ही था।

राज तो बहुत लोगों ने किया। राज सुख में मदमस्त भी हुए और अहंकारी दुर्योधन हुआ, जितना अपने को ही महत्व दुर्योधन ने दिया, इतना मान तो किसी ने नहीं बढ़ाया। जो 'जनम्यो छत्र समेत' राजा ही जन्मा था और राजा ही मरा था। अहंकार की पराकाष्ठा दुर्योधन में थी।

गऊएँ चराते हुए ग्वाले बंसी तो बहुत बजाते हैं, गीत गाते हैं, किन्तु जितनी सुन्दर बंसी कृष्ण ने बजाई तथा सुन्दर गीत गाये, ऐसे गीत व बंसी अब तक किसी ने नहीं बजाई। वैसे तो टट्टू भी काफी तेज चलते हैं किन्तु जितनी तेजी तुरंगम (घोड़े) में होती है, उतनी तेजी तो किसी भी पशु में नहीं होती है। तेज चलने वालों में घोड़ा ही श्रेष्ठ है।

बगुलों की भी टोली देखने में अच्छी लगती है बाग को शोभायमान करती है। किन्तु हंसों की टोली सदृश बगुलों की टोली कहां है? हंस तो हंस ही हैं बगुले तो बगुले ही हैं, दोनों की क्या बराबरी? अनेक जाति के नाग हैं जैसे गोहिरा आदि भी नाग ही हैं किन्तु मणिधारी सर्प जैसे साधारण नाग कहां है? कुकुरमुत्ता आदि का भी तो साग है, जो साग कहा जाता है किन्तु नागर बेल की बराबरी कहाँ करेगा? एक ही जाति होते हुए भी गुण धर्म में बड़ा ही भेद है। ऊपर से देखने मात्र से कुछ भी नहीं होता है।

जहाँ-जहाँ पर शैतान लोग अपनी शैतानी-दुष्टता का प्रसार करेंगे तो वही पर वही फलीभूत होगी। अच्छाई कहाँ से आयेगी? मृत्यु अनादि काल से ही चली आ रही है। कंस, केशी, चंडरू, मधु किचक, हिरण्याक्ष, हिरण्यकशिपु, चक्रधर, बलदेव, इत्यादि लोगों ने भी वासुदेव भगवान् की प्राप्ति की है।

हे जेतसी! तुम्हारे ये मण्डलीक क्यों नहीं देख रहे हैं? समझ क्यों नहीं रहे हैं? जो नारनौल युद्ध के लिए जा रहे हैं। यहाँ इस धरती पर तो किसी का भी राज एक रत्ती भर स्थिर नहीं रहा है। जब किसी का भी नहीं रहा, तो इनकी क्या औकात है? जो स्थिर रह सकेंगे।

राजपूत कहै- रावजी क्यौ समझां। शब्द मांहै, जैतसी कहै- जाम्भोजी साच कहै छै। इण धरती ऊपर कोई राजा रह्यौ नहीं। मांहरै तो रूड़ा छै। राव लूणकरण नुवां ही छै। म्हानु तो कोट दीन्हौ। राव जेतसी बीकानेर में राज कीयों। लूणकरण कामि आयों।

सम्भराथल पर देवजी ने जेतसी को शब्द सुनाया। उस समय वहाँ पर उपस्थित एक राजपूत ने कहा- हे रावजी! क्या आप जाम्भोजी की बात समझे या नहीं? जेतसी ने कहा- जाम्भोजी ने जो कहा है वह सत्य ही कहा है। इण धरती पर कोई राजा स्थिर रहा ही नहीं है। मेरे लिये तो यह उपदेश बहुत ही अच्छा है। मुझे ज्ञान हुआ है। किन्तु मेरे पिता के लिए अच्छा नहीं है। मुझे तो जाम्भोजी ने कोट दिया, राजा बना दिया है। राव लूणकरण युद्ध भूमि में वीरगति को प्राप्त हुए। जेतसी बीकानेर के अधिपति बने।

वील्हो उवाच- हे गुरु देव! प्रथम जो आपने बतलाया था कि राव लूणकरण ने जाम्भोजी की स्तुति की थी। उन्हें अपना इष्ट देवता मानता था। किन्तु नारनौल जाते समय उन्होंने जाम्भोजी की आज्ञा का उल्लंघन क्यों किया?

नाथोजी उवाच- हे शिष्य! मनुष्य की मनोवृत्ति बड़ी ही चंचल है। लूणकरण जब जाम्भोजी के सामने था, तब तो उमंग उमड़ रही थी, उनका कवित्व जग गया था। किन्तु जब वापिस अपने राज में आया तो वासना ने उस आनंद को ढक दिया और नारनौल हस्तगत करने की इच्छा जागृत हुई। राजा ने अपनी इच्छा पूर्ति के लिए ज्योतिषी, पण्डित आदि विद्वानों से पूछा था। तब उन्होंने युद्ध में जाने की प्रेरणा दी थी और कहा कि अवश्य ही जीत होगी। पण्डित लोग चाहते थे कि राजा हमारे चंगुल से कहीं निकल न जाये इसीलिए जाम्भोजी की बात को झूठी करते गये और अपने वाक्जाल में फंसा लिया तथा राजा को मृत्यु तक पहुँचाने के लिए तैयार कर लिया।

जब अंत समय आ जाता है तो अच्छी बात भी उल्टी लगती है, राजा लूणकरण के साथ भी ऐसा ही हुआ। राव लूणकरण के विपरीत उनका बड़ा बेटा जाम्भोजी की शरण में आ गया तो देवजी ने कृपा की और उन्हें राजा बनाने का वरदान दिया। कुदरत का खेल बड़ा ही विचित्र है, जो होनहार है वही होता है। इसके लिए परिस्थितियां अपने आप बनती जाती हैं।

नर चीते कछु और दई कछू और बणावै।
करण मत महल दई तहां धूल उड़ावै॥

-कृष्णानन्द आचार्य
अध्यक्ष, जाम्भाणी साहित्य अकादमी
मो.: 9897390866

पिता ही हमारी पहचान

अंगुली पकड़कर
जिसने हमें
चलना सिखाया,
अपने कंधों पर
बिठा कर
हमें
सारा जग घुमाया,
हमारी हर एक
जिद्द पूरी करने
कि खातिर
अपना खून
पसीना बहाया।
बार बार पूछने
पर भी
एक ही बात को
कभी वो न थके
न हारे
बस मुस्करा कर
सर पर हाथ
फेर कर
बार-बार बतलाते
कई बार दोहराते।
श्रीफल की तरह
ऊपर कठोर
अंदर से कोमल,
तन-मन-धन से
समर्पित,
अपने परिवार की
ताकत और हिम्मत
उम्मीद ओर आस
का प्रतीक,
मुश्किल घड़ी में
अपने परिवार में
सबसे आगे खड़ा
अपने बेटे खातिर राजा
बेटी के सर का ताज
होते है
वो केवल और नहीं
बस एक पिता ही है।
बस एक पिता ही है।
जिस पर साया है
पिता का
उसने खुद को
इस जहां में
बड़ा मजबूत
ही पाया है।
वो गुलशन सदा
महकाया है॥
हमारा अभिमान
हमारा स्वाभिमान है पिता
जन्म देने वाली माँ
होती है, पर इस जग में
पिता ही हमारी पहचान,
पिता ही हमारी पहचान॥
बस इक
गुजारिश है
अपनी पहचान का
सदा तुम रखना
ध्यान, ख्याल
कभी इनका

दिल न दुखाना,
बस रखना इनके
प्रति सेवा भाव
पिता के चरणों में ही
चारों धाम,
पिता ही हमारी पहचान,
पिता ही हमारी पहचान॥

-सुशील पूनियां
रामा कुंज
8/368, आर.एच.बी. कॉलोनी
हनुमानगढ़ ज.-335512

वृक्ष रक्षा और खेजड़ली बलिदान

वृक्ष मानव के सच्चे मित्र हैं। संसार में वृक्षों का आगमन पहले हुआ और मानव का बाद में हुआ। मानव ने इस धरा पर जन्म लिया तो वह पर्यावरण और वृक्षों में ही पला-बढ़ा। मनुष्य एक विशिष्ट पर्यावरण में जन्म लेकर अपना विकास करता है। पर्यावरण तथा मुनष्य का सम्बन्ध अत्यन्त घनिष्ठ होता है। मनुष्य तथा पर्यावरण के बीच अन्तर्सम्बन्ध समय तथा स्थान के साथ बदलते रहते हैं। विश्व के कुछ भागों में मनुष्य पूर्णत: प्रकृति से प्रभावित है तो कुछ अन्य भागों में वह प्रकृति को प्रभावित भी करता है। मानव की प्रारम्भिक क्रियाओं पर भौतिक तथा सामाजिक वातावरण का प्रभाव पड़ता है। आरम्भिक अवस्था में मनुष्य फल-फूल और कंद-मूल खाकर अपनी भूख शान्त करता था। पेड़ की छाल और पत्ते अपने शरीर के चारों ओर लपेट कर वस्त्र की आवश्यकता पूरी करता था। पेड़ों के पत्ते एवं टहनियों से झोपड़ी बनाकर मनुष्य सर्दी-गर्मी से अपना बचाव करता था। इस प्रकार वृक्षों के सहयोग मनुष्य का जीवन सुरक्षित हो गया और वह विकास के रास्ते पर चल पड़ा। वृक्षों की शक्तियों के सामने मनुष्य नतमस्तक है और उन्हें देवता मानकर उनकी पूजा करता है। मनुष्य की अनेकों भावनाएं वृक्षों से जुड़ी हुई हैं।

मानव जाति के विकास में वृक्षों का बहुत योगदान रहा है। जीवन की अनेकों आवश्यकताएं वृक्षों से ही पूरी होती हैं। आदिय समाज आज भी पूरी तरह वृक्षों पर निर्भर है। अकाल में लोग वृक्षों की छाल को कूट-पीस कर खाने के काम में लेते थे। अधिक समय तक वृक्षों के साथ रहने से मनुष्य का स्वास्थ्य भी ठीक रहता है। वृक्ष ही मनुष्य को जीवित रखते हैं। मनुष्य ऑक्सीजन के द्वारा ही जीवित रहता है। ऑक्सीजन मनुष्य को वृक्षों से ही मिलती है। मानव जीवन में वृक्षों के इसी महत्व के आधार पर बिश्नोई पंथ के प्रवर्तक गुरु जाम्भोजी ने वृक्ष-प्रेम की भावना पर बल दिया था। वृक्षों को प्राणवान मान कर उन्होंने बताया कि जीवों पर दया करो और हरे वृक्ष मत काटो। वृक्ष प्रेम की भावना के प्रचार-प्रसार के लिए उन्होंने देश में भ्रमण करते समय कई स्थानों पर खेजड़ी के वृक्ष लगाये थे। अन्य वृक्षों की तुलना में खेजड़ी अधिक लाभदायक है। यह राजस्थान की जलवायु के बहुत अनुकूल है। खेजड़ी के पत्तों से पशुओं को चारा मिलता है। मनुष्य के लिए फल, सब्जी के लिए सांगरी और ईंधन के लिए इसकी लकड़ी का इस्तेमाल करते हैं। फसल को भी इससे कोई नुकसान नहीं होता। कई देशी-विदेशी वृक्ष अपने आसपास फसल नहीं होने देते। इसी आधार पर खेजड़ी यहां के सभी प्राणियों के जीवन का आधार है, राजस्थान के लिए यह वृक्ष वरदान है। इस की उपयोगिता के आधार पर इसे 'राजस्थान की तुलसी' कहा जाता है।

बिश्नोई धर्म के प्रवर्तक गुरु जाम्भोजी ने देश की जलवायु तथा आवश्यकता के आधार पर स्थान-स्थान पर खेजड़ी के वृक्ष लगाये थे। नागौर के निकट रोटू गांव में उन्होंने खेजड़ियों का एक बाग ही लगा दिया था। भ्रमण करते समय जाम्भोजी ने लोदीपुर (उ.प्र.) में भी खेजड़ी का एक वृक्ष लगाया था। इसी खेजड़ी के पास वर्तमान में जाम्भोजी का एक मन्दिर बना हुआ है। यहां प्रतिवर्ष मेला लगता है, जो बिश्नोई समाज के वृक्ष प्रेम का प्रतीक है। गुरु जाम्भोजी के बाद सन्त वील्हो जी ने भी समाज में वृक्ष प्रेम की भावना का बहुत प्रचार-प्रसार किया था। जाम्भोजी की शिक्षा एवं वील्होजी के प्रयास का बिश्नोई समाज पर बहुत प्रभाव पड़ा। वृक्ष प्रेम की भावना के कारण लोग न तो स्वयं हरे वृक्ष काटते हैं, न ही दूसरों को काटने देते हैं। वृक्ष प्रेम व पर्यावरण की इसी भावना के कारण अनेक बिश्नोई स्त्री-पुरुष अपने प्राण देकर वृक्षों की रक्षा करते रहे हैं। वृक्षों की रक्षा के लिए अपने जीवन का बलिदान करने की अनेक घटनाएं बिश्नोई इतिहास में है। बिश्नोई इतिहास के अलावा ऐसी एक घटना विश्व इतिहास में नहीं मिलती है।

वृक्षों की रक्षा के लिए अपने जीवन का बलिदान करने की पहली घटना जोधपुर राज्य के रामासड़ी गांव में घटित हुई थी। यह घटना वि.सं. 1661 की है। 400 साल पहले जोधपुर के रामासड़ी गांव में अनेक बिश्नोई रहते थे। वह रजवाड़ों का युग था। यह गांव खेजड़ी वृक्षों से घिरा हुआ था। इस गांव में श्रीमती करमां एवं श्रीमती गोरां बिश्नोई रहती थी, दोनों पक्की सहेलियां थी। करमां अपने गुरु जाम्भोजी के बताये हुए नियमों का पालन करती थी। विष्णु का स्मरण करती थी। वृक्षों से उसे बहुत लगाव था। वृक्षों की रक्षा करने का उसने पक्का प्रण कर रखा था। उस गांव के ठाकुर गांव के वृक्षों को अपनी जायदाद मानते थे। उन्हें काटने का वे अपना अधिकार समझते थे। उन्हीं दिनों गांव के ठाकुर को लकड़ियों की आवश्यकता पड़ी। उसने अपने कारिन्दों को वृक्ष काटने के रामासड़ी गांव में भेजा। उस समय दूसरे लोग भी इस बात को जानते थे कि बिश्नोई अपने गांव में किसी को खेजड़ी नहीं काटने देते, पर ठाकुर लोग अपने अहं के कारण दूसरों की भावना का सम्मान नहीं जानते थे। इसलिए ठाकुर के कारिन्दे कुल्हाड़ियां लेकर रामसड़ी गांव में पंहुच गये। इतनी बड़ी संख्या में वृक्ष काटने वालों को देखकर गांव में सन्नाटा छा गया। वृक्ष काटने वाले अपनी-अपनी कुल्हाड़ी लेकर वृक्षों को काटने लग गये। वृक्षों की कटाई की बात गांव में आग की तरह फैल गई। ये बात करमां एवं गौरां तक भी पहुंच गयी। उन्होंने अपने धर्म का पालन करते हुए वृक्षों की रक्षा के लिए घर से निकल पड़ी और गांव के चौराहे पर वृक्ष काटने वालों को रोका, पर वृक्ष काटने वालों पर उनकी बातों का कोई प्रभाव नहीं पड़ा, तब उन्होंने वृक्षों की रक्षा के हेतु स्वेच्छा से अपने सिर सौंप दिये। देखते ही देखते दोनों वीरांगनाएं वहां ढेर हो गयीं। खून से गांव का चौराहा लाल हो गया। उनके इस बलिदान को देखकर गांव के अन्य लोगों में भी बलिदान की भावना उत्पन्न हो गई। करमा एवं गौरां के रक्त को देखकर वृक्ष काटने वाले भी कांप उठे। उन्होंने अपने आप को दोषी मानकर वृक्ष काटने बंद कर दिये। करमा एवं गौरां धर्म के रास्ते पर चलकर अमर हो गई। विश्व में वृक्षों की रक्षा के लिए प्राण त्यागने की यह प्रथम घटना है।

रामासड़ी गांव की घटना के कुछ वर्ष बाद वैसी ही घटना तिलासणी गांव में घटित हुई। वहां पर बिश्नोइयों की आबादी

अधिक थी, उस गांव के लोग गुरु जाम्भोजी के बनाये हुए नियमों का पालन करते थे। उन दिनों गोपालदास भाटी, खेजड़ला गांव में रहता था। तिलासणी गांव का क्षेत्र उसी के अधीन था। उसी गांव में किरपो भाटी रहता था। किरपो भाटी वृक्षों का दुश्मन था। एक दिन किरपो भाटी अपने साथियों को लेकर तिलासणी गांव के पास वृक्ष काटने पहुंच गया। उसने वहां खेजड़ी के वृक्षों को कटवाना प्रारम्भ कर दिया। उसी समय वृक्षों की कटाई की सूचना तिलासणी गांव में पहुंच गई। सूचना मिलते ही गांव के सभी निवासी गोपालदास भाटी के दरबार में गये। उन्होंने भाटी से निवेदन किया कि किरपो भाटी हमारे गांव के वृक्ष कटवा रहा है। आप उनसे वृक्षों की कटवाई रूकवाओ। गोपाल भाटी पर इसका कोई प्रभाव नहीं पड़ा। तब लोगों ने विष्णु को स्मरण कर वृक्षों के रक्षा के रक्षा के लिए अपने प्राण त्यागने का निश्चय किया। इसी प्रण के अनुसार श्रीमती खींवणी खोखर, श्री मोटाजी खोखर तथा श्रीमती नेतू नेण ने अपने प्राण न्यौछावर कर दिये। गोपाल भाटी व किरपो भाटी ने तुरन्त वृक्षों की कटाई रोक दी, इस घटना की खबर चारों ओर फैल गई, इसीलिए सभी लोग बिश्नोइयों के गांव के आस-पास वृक्ष काटने से डरते हैं।

वृक्षों की रक्षा के लिए प्राण त्यागने की एक महत्वपूर्ण घटना वि.सं. 1700 में घटित हुई थी। यह घटना मेड़ता परगने के पोलावास गांव की है। इस गांव की अधिकतर आबादी बिश्नोइयों की थी। इस गांव में बूचो जी बिश्नोई रहते थे। पोलावास गांव के पास ही खेजड़ियों का सघन वन था। उस समय रैन और राजौद में राव दूदा के वंशज रहते थे। पोलावास गांव इन्हीं के अधीन था। राव दूदा को गुरु जाम्भोजी के आशीर्वाद से मेड़ते का खोया हुआ राज्य प्राप्त हुआ था। अपनी शक्ति के अंह में राव दूदा के वंशज ने ही पोलावास के वन से होली जलाने के लिए वृक्ष कटवा लिए थे। वृक्ष काटने का समाचार पोलावास गांव में पंहुच गया। समाचार पाकर पोलावास के निवासी घटनास्थल पर पंहुच गये। समाचार पाकर आसपास के गांव से बड़ी संख्या में लोग वहां पहुंच गये। वहां उन्होंने वृक्ष काटने वाले के पैरों के निशानों की सहायता से सभी लोग राजौद पहुंच गये। वहां पर उन्हें पता लगा की वृक्ष काटने का काम राजौद के सामन्तों ने किया है। उन्होंने वहां पर उनको समझाया कि आगे से आप वृक्ष नहीं काटोगे, पर सामन्तों पर पोलावास व आसपास के गांव के लोगों की बातों का कोई प्रभाव नहीं पड़ा और दोनों पक्षों में विवाद होने लगा। ऐसी स्थिति को देखकर पोलावास निवासी बूचोजी ऐचरा बहुत चिन्तित हो गये। तब बूचोजी ने सरदार रतनसिंह से कहा कि मेरे शरीर को काट सकते हैं, पर खेजड़ी नहीं काटने दूंगा। दुष्ट रतनसिंह ने बिना सोचे समझे बूचोजी के शरीर पर तलवार चला दी। इस तरह मानव जाति के कल्याण और वृक्षों के लिए अपने जीवन का बलिदान करके बूचोजी शहीद हो गये। बूचोजी का यह त्याग वृक्ष प्रेमियों के लिए सदैव एक प्रेरणा रहेगा।

खेजड़ली बलिदान:- वृक्षों की रक्षा के लिए प्राण त्यागने की सबसे प्रसिद्ध घटना खेजड़ली गांव की है। यह गांव जोधपुर से 25 कि.मी. पर है। इस घटना को हम जब भी याद करते हैं, तो हमारे रोंगटे खड़े हो जाते हैं। वृक्षों की रक्षा के लिए किया गया यह बलिदान विश्व में सबसे बड़ा और अनोखा है। यह घटना खेजड़ती के खड़गे के नाम से प्रसिद्ध है। यह घटना पूरे विश्व में प्रसिद्ध है और आज इसका प्रचार-प्रसार पूरे विश्व में हो रहा है।

सम्वत् 1787 में जोधपुर के महाराजा अभय सिंह थे। महाराजा को अपने किले के निर्माण के लिए चूने की आवश्यकता थी, चूना बिना लकड़ियों के तैयार नहीं हो सकता था। महाराजा ने ईंधन की खोज के लिए लोगों को इधर-उधर भेजा। ईंधन की खोज करने वालों ने महाराजा को बताया कि खेजड़ली गांव में बहुत वृक्ष हैं। इन वृक्षों को काटकर ईंधन प्राप्त किया जा सकता है। महाराजा ने हाकिम गिरधर दास भण्डारी से सलाह ली और वृक्ष काटने की आज्ञा दे दी। वृक्ष कटवाने का कार्य महाराजा ने हाकिम को दे दिया। राजा की आज्ञा पर गिरधर दास भण्डारी अपने कारिन्दों और मजदूरों को लेकर खेजड़ली गांव में पहुंच गया। उसने तुरन्त अपने आदमियों को वृक्ष काटने की आज्ञा दे दी। कुल्हाड़ियों की आवाज सुनकर वृक्ष प्रेमी बिश्नोई बहुत बड़ी संख्या में वहां इकट्ठे हो गये। सभी लोगों ने वृक्ष काटे जाने का विरोध किया। विरोध का हाकिम पर कुछ प्रभाव नहीं पड़ा और विरोध को देखकर वहां से चला गया और महाराजा को सारी सूचना दी। महाराजा ने विद्वानों से सलाह ली, सभी ने वृक्ष न काटने की सलाह दी, पर हाकिम गिरधर भण्डारी के मन में कुछ और ही चल रहा था। वह वहां से और अधिक आदमियों को लेकर वृक्ष काटने आया और वृक्ष काटने लग गया। बिश्नोई पहले वहां से अधिक संख्या में इकट्ठे हो गए। खेजड़ती निवासी अपने धर्म पर अडिग थे। सूचना मिलते ही चौरासी गांव के बिश्नोई एकत्रित हो गए, सभी ने विरोध किया। इस विरोध का भण्डारी पर कोई प्रभाव नहीं पड़ा। उसने वृक्ष कटवाने प्रारम्भ कर दिये। वृक्षों की कटाई रूकवाने का कोई रास्ता न मिलने पर बिश्नोइयों ने वृक्षों की रक्षा के लिए सिर सौंपने का निर्णय लिया। सभी स्त्री-पुरुष छोटे-बड़े भाग कर एक-एक वृक्ष से चिपक गये। भण्डारी के लोगों का उस पर कोई प्रभाव नहीं पड़ा। कारिन्दों ने पेड़ों से चिपके हुए लोगों पर कुल्हाड़ियों से प्रहार करना प्रारम्भ कर दिया। बड़ा ही विचित्र संघर्ष था। कुल्हाड़ियों से कट-कट शरीर धरती पर गिरने लग गये। धरती लाशों से भर गई। बड़ा ही कारुणिक दृश्य था। इस बलिदान में पुरुषों में सर्वप्रथम अण्दों जी शहीद हुए। उनके बाद निरलोजी बणियाल चापों जी, उन्दोजी, कान्हाजी, किसनों जी एवं दयाराम आदि वीर वृक्षों से चिपक-चिपक कर शहीद हो गये। स्त्रियों में सर्वप्रथम अमृता देवी, दामी व चीमा आदि ने अपने जीवन का बलिदान किया। यह घटना जोधपुर महाराजा के पास पहुंच गई और उन्होंने तुरन्त वृक्षों की कटवाई रूकवा दी। राजा ने यह भी आदेश दिया कि भविष्य में बिश्नोइयों के गांव में कोई भी हरा वृक्ष नहीं काटेगा। वृक्षों के बचाव में इस बलिदान में 363 स्त्री-पुरुष शहीद हो गये थे। इस बलिदान से सभी लोगों को यह पक्का विश्वास हो गया था कि बिश्नोई अपने गांवों में हरे वृक्ष नहीं काटने देंगे। इस कारण उस समय अनेक राजाओं ने बिश्नोई गांवों में वृक्ष न काटने के परवाने जारी कर दिये थे।

-मदन बिश्नोई, सहायक प्राध्यापक
राजकीय महाविद्यालय, भटटू कलां
मो.: 9467740884

बाहरी एवं आन्तरिक शुद्धता

भारत अवतारों, ऋषियों, संतों, ग्रन्थों, तीर्थों एवं विभिन्न त्योहारों की धरा है। इस धरा पर ईश्वर ने मानव की बड़ी ही अद्भुत रचना की है। हम सब प्रकाश पुंज ईश्वर की संतान हैं। ईश्वर परमपिता हैं, हमारे रक्षक हैं। हम सब एक ही उद्यान यानि बाग के फूल हैं।

एक बाग के फूल हैं सारे इक माला के मोती,[1]
सबके अन्दर रमी हुई है, इक ईश्वर की ज्योति।

ईश्वर ही पृथ्वी में वह सशक्त आधार है जो समस्त जीवों को संभाले हुए हैं। हमें तो अपनी वास्तविक स्थिति ही नहीं पता कि मैं कौन हूं, मेरा कर्तव्य क्या है? मेरे जीवन के उद्देश्य क्या हैं? मेरी वास्तविकता क्या है? जन्म से मरण तक मनुष्य के सामने अनेक अवस्थाएं आकर चली जाती हैं। अतएव मन-इन्द्रियों का निग्रह, दोषों का त्याग, अन्त:करण की शुद्धि, संत-गुरु में श्रद्धा, अपने में निर्माणता और सरलता, जिज्ञासा भाव तथा दीर्घकाल तक वैराग्यवान विवेकी सन्तों का सत्संग करने से स्वरूप ज्ञान की प्राप्ति होती है। स्व- स्वरूप के यथार्थ शोधन की योग्यता को संतों ने बतलाया है कि-

अन्तस थिर ज्वाला रहित, अभय न चिंता जब्ब।[2]
फिक्र रहित मन नीरस जहँ, शोध यथारथ तब्ब॥

अर्थात् अन्त:करण शान्त हो, काम, क्रोध, लोभ, मोह आदि ज्वाला से रहित हो, हृदय में शुद्ध निर्भयता हो, किसी प्रकार सांसारिक चिन्ता, फिक्र न हो, विषय रस से मन रहित हो, तब स्व-स्वरूप का यथार्थ शोधन होता है। हमारा मुख्य कर्तव्य मुक्ति प्राप्त करना ही है। इसके लिए हमें तन के दोषों-चोरी, हिंसा, व्यभिचार, मन के दोषों- ईर्ष्या, क्रोध, मान, छल, वचन के दोषों-गाली, निन्दा, झूठ का त्याग। कर्मों का सुधार-भोजन, छादन, मैथुन, भय, निद्रा और मोह, ये छह पशु कर्म है इनका सुधार करना हमारा परम कर्तव्य है तथा दया, क्षमा, सत्य, धीर, विचार, विवेक, वैराग्य तथा गुरु भक्ति महासद्गुणों व सदाचरणों को धारणकर अन्त:करण को शुद्ध करना चाहिए। अत: हमारा मुख्य कर्तव्य है चेतनता एवं जीवन कल्याण। इसलिए हे प्राणी, ईश्वर का ध्यान कर बुराइयों से बच अपने कर्तव्य का पालन कर, समय बीता जा रहा है। समय बीत जाने के पश्चात् कोई लाभ नहीं होगा।

उठ नींद से आंखियां खोल जरा।[3]
ओ गाफिल प्रभु से ध्यान लगा॥

अत: हमें स्वयं को, कर्तव्य को, वास्तविकता एवं अपने उद्देश्य को जानने के लिए बाहरी एवं आन्तरिक रूप से शुद्ध होना पड़ेगा और वह शुद्धिकरण तभी सम्भव होगा, जब हम बिश्नोई पंथ के संस्थापक गुरु जम्भेश्वर जी द्वारा बतलाये 29 धर्म नियमों व 120 सबदों को अपनाएंगे।

उनतीस धर्म की आखड़ी, हिरदे धरे जोय।[4]
जाम्भोजी कृपा करी, नाम बिश्नोई होय॥

गुरु जाम्भोजी द्वारा बतलाये नियमों का हमें अनुसरण करना चाहिए, तभी शुद्ध कर्तव्य कर्मों से संसार में व्यवहारिक उन्नति होगी। कुछेक नियम इस प्रकार हैं, जैसे-

तीस दिन सूतक, पांच ऋतुवंती न्यारो।[5]
सेरा करो स्नान, शील, संतोष शुचि प्यारो॥

तीस दिन सूतक की जब हम पालना करते हैं तब प्रसूता स्त्री को घर के कार्य से पृथक् रखना चाहिए। यह मानव शारीरिक, मानसिक व बौद्धिक विकास की नींव है। यहीं से मानव जीवन प्रारम्भ होता है। बालक जन्म के पश्चात् बालक व उसकी माँ दोनों ही अपवित्र अवस्था में हो जाते हैं तथा तीस दिन तक प्रसूता स्त्री को विश्राम चाहिए। ताकि वह जल्दी ही स्वस्थ हो सकें व उसे पौष्टिक आहार देना चाहिए। जिससे वह जल्दी ही बाहरी व आन्तरिक रूप से स्वस्थ हो जाये। जब पांच दिन मासिक धर्म चलते हैं तब युवती को रसोईघर या घर के अन्य कार्यों को नहीं करना चाहिए। मनुष्य को नित सवेरे उठ प्रात:काल ब्रह्म मुहूर्त में स्नान करना चाहिए। प्रात:काल स्नान करने से मनुष्य के पाप व दोष नष्ट हो जाते हैं। शरीर का मैल भी दूर होता है एवं तेज बढ़ता है। जैसे जल से स्नान करके शरीर का बाहरी मैल दूर किया जाता है। उसी प्रकार आन्तरिक यानि मन के मैट को भी धो डालना चाहिए। तभी हमारा शरीर, मन व बुद्धि शुद्ध रहेंगे। मनुष्य को शीलवान बनना चाहिए, संतोष रखना चाहिए एवं पवित्रता रखनी चाहिए।

द्विकाल सन्ध्या करो, सांझ आरती गुण गावो।[6]
होम हित चित प्रीत सूं होय वास बैकुण्ठे पावों॥

प्रात:काल एवं सूर्योदय, सायंकाल एवं सूर्यास्त को दोनों समय प्रभु का भजन, कीर्तन, नाम सुमिरण करना चाहिए। जिससे तन व मन दोनों की शुद्धि होती है। घर में प्रतिदिन यज्ञ हवन करने से घर का वातावरण शुद्ध होता है व बच्चों में संस्कार आते हैं। एक मन से, पवित्र, शुद्धता से जब हवन किया जाता है तब प्रभु प्रेम की कृपा बनी रहती है। दो मन से किया कार्य कभी उचित नहीं रहता। एक मन, एक दिल होगा तभी प्रेम, श्रद्धा का उदय होगा और यहीं ज्ञान ग्रहण करवाने में हेतु है।

दोय मन दोय दिल पंथ दुहेला, दोय मन दोय दिल, गुरु न चेला, दोय मन दोय दिल, पंथी न चेला, दोय मन दोय, दिल रब दुहेला। (सबद)

पाणी बांणी ईन्धणी, दूध न लीजै छांणै,
क्षमा दया हिरदै धरो, गुरु बतायो जांण।[7]

हमें पानी को हमेशा छान कर ही प्रयोग करना चाहिए, वाणी ऐसी बोलनी चाहिए जिससे किसी का बुरा न हो। कबीरदास ने भी कहा कि-

'वाणी ऐसी बोलिये मन का आपा खोय,[8]
औरन को शीतल करे आपहुं शीतल होय॥

इसलिए पहले तोलो फिर बोलो। यानि बहुत सोच-विचार कर ही हमें बोलना चाहिए। दूध भी हमेशा छान कर ही प्रयोग करना चाहिए। हमें हमेशा क्षमाशील व दयावान रहना

चाहिए। दया से ही धर्म की उत्पत्ति होती है।

चोरी निंदा झूठ बरजियो, बाद न करणों कोय,
अमावस्या का व्रत राखणो, भजन विष्णु बतायो जोय।

जीवन में कभी भी चोरी, परनिंदा व झूठ नहीं बोलना चाहिए। कभी किसी से वाद-विवाद भी नहीं करना चाहिए। अपने मन को हमेशा साफ रखना चाहिए। मनुष्य को अमावस्या का व्रत भी अवश्य रखना चाहिए, जिससे श्रद्धा बढ़ती है। सर्वज्ञ सर्वेश्वर परमपिता परमात्मा श्री विष्णु का भजन हमें सदैव करते रहने चाहिए।

हृदय हरि सिंवरीलो, ओ३म् विष्णु सोहं विष्णु।

मन्त्र का निरंतर जप करेगा, इसके अनुसार साधना करेगा वह निश्चित ही संसार सागर से पार उतर जाएगा।

जीव दया पालणी, रूंख लीला नहि घावै[10]
अजर जरै जीवत मरै, वै वास स्वर्ग ही पावै॥

हमें सभी जीवों पर दया भाव रखना चाहिए। जब जीव ही जीव की हत्या करेगा, तब यहां सुरक्षित कौन रहेगा? हमें हमारे पंच विकारों का काम, क्रोध, लोभ, मोह, अहंकार का त्याग करना चाहिए। हमें अमल, भांग, तमाखू, मद्य, मांस व नशीले पदार्थों से दूर ही रहना चाहिए। इनके सेवन से हमारा मन अशुद्ध तथा अशांत रहता है। अन्तर्मन के शुद्धिकरण के लिए इन मादक पदार्थों का त्याग करना ही उचित रहता है। इन कुछेक नियमों का पालन करने मात्र से ही हमारी आन्तरिक बाहरी शुद्धि होती है। गुरु जाम्भोजी ने कहा है कि

बिंबे बेला विष्णु न जप्यों, ताछै का चीन्हौ कछु कमायो।[11]

कि हे प्राणी, तुझे सचेत होना ही पड़ेगा, अन्यथा तेरा यह जीवन व्यर्थ है। गुरुजी ने कहा कि 'सीने सरवर करो बंदगी, हक्क निवाज गुजारो, उस परमात्मा की प्राप्ति के लिए हृदय में प्रेम और दीनभाव रखो व प्रभु की बड़े ही उदारभाव से पुकार करो। इसी से जीवन को शुद्ध एवं परोपकारमय बनावें। इस जन्म में प्रभु का सुमिरन कर अपनी नैया पार लगालो। मृत्यु तो अटल है, लेकिन हम आवागवण के फेर से छूट जायें, ऐसी विधि गुरु ने हमें सुझायी है, कि '**मुक्ति भई बंधन गुरि खोलहे, सबदि सरति पति पाई।**'[12] कि हमारे सांसारिक बंधन गुरु ही खोलते हैं, प्रेम द्वारा ही मुक्ति की प्राप्ति होती है।

काम, क्रोध काया कऊ गालै, जिउ कंचन सोहागा ढालै।

काम व क्रोध से शरीर कमजोर होता है। मानव को जीवन की सच्चाई से परिचित करवाया गया है। मानव के जीवन में उच्च व सत्य के मार्ग पर चलने की प्रेरणा भी दी है। **हिरदै नांव विष्णु को जंपों हाथै करो टबाई॥**[13] गुरु जाम्भोजी ने अपने उपदेशों में कहा है कि अन्तर मन से भगवान के नाम का जप करते रहो तथा बाहरी रूप में अपने हाथों द्वारा काम करते रहो। '**ओ३म विष्णु**' के नाम का जप मन ही मन करते रहो, यही नाम आपको भवसागर से पार होने में नाव बन जाएगा। 'ओ३म् विष्णु' का जप एकांत स्थान पर बैठकर शांत व निर्मल मन से करना चाहिए। जब आपका आन्तरिक मन पवित्र होगा तभी आपका बाहरी तन पवित्र होगा। व्यक्ति की बाहरी सुन्दरता उसके रंग, रूप, परिधान और चेहरे के भावों से पहचानी जाती है व उसकी आन्तरिक सुन्दरता अंत:करण की भावनाएं, उसका सकारात्मक दृष्टिकोण, सदाचार, सहयोग और सहकारिता की भावना, कृतज्ञता और चेहरे के तेज से पहचानी जाती है। इसलिए अपनी आन्तरिक व बाहरी पवित्रता को बनाये रखें। कबीरदास जी ने भी कहा है कि-

कागद केरी नांव री, पाणी केरी गंग।[14]
कहै कबीर कैसे तिरूं, पंच कुसंगी संग॥

भाव यह है कि संसार रूपी सागर से पार उतरने के लिए मनुष्य को मन को विकारों से मुक्त होना आवश्यक है, जो काम, क्रोध, लोभ, मोह, अहंकार हैं। इनसे मुक्त होकर ही मानव भक्ति रूपी नाव में सवार होकर संसार रूपी सागर को पार कर सकता है। इसलिए मन से मैल निकालकर शुद्ध व पवित्र रहना चाहिए।

संत रविदास जी ने भी कहा कि -

'मन चंगा तो कठौती में गंगा।'[15]

संदर्भ:

1. जीओ गीता युवा चेतना, पृ. 22
2. अभिलाष दास- 'मैं कौन हूं' कबीर पारख संस्थान, इलाहाबाद, पृ. 12
3. डॉ. तुलसीराम- 'नैतिक शिक्षा' प्रकाशन विभाग चित्रगुप्त मार्ग, नई दिल्ली, पृ. 22
4. आचार्य कृष्णानन्द- 'जाम्भा पुराण' बिश्नोई मंदिर, ऋषिकेश, पृ. 144
5. आचार्य कृष्णानन्द- 'जम्भ सागर' बिश्नोई मंदिर, ऋषिकेश, पृ. 242
6. वही, पृ. 245
7. वही, पृ. 247
8. अभिलाष दास- कबीर दासजी की अमृतवाणी सटीक (मोक्ष शास्त्र)।
9. आचार्य कृष्णानन्द- 'जम्भ सागर' बिश्नोई मंदिर, ऋषिकेश, पृ. 250
10. वही, पृ. 253
11. आचार्य कृष्णानन्द- 'जाम्भा पुराण' बिश्नोई मंदिर, ऋषिकेश, पृ. 146
12. प्रोफेसर बाबूराम- गुरु नानक देव काव्य और चिन्तनधारा, साहित्य संस्थान, गाजियाबाद, पृ. 98
13. मांगीलाल बिश्नोई 'अज्ञात', बिश्नोई धर्म प्रदीपिका, प्रकाशक बिश्नोई सेवक श्री बालाजी, नागौर, राज. पृ. 120
14. कबीर दास जी के दोहे- मध्यकालीन काव्य कुंज में संकलित 'साखी' से।
15. 'संत रविदास जी के उपदेश' पुस्तक।

-डॉ. माया
सहायक प्राध्यापिका, हिन्दी विभाग
दयानन्द स्नातकोत्तर महाविद्यालय, हिसार
मो.: 94668 67429

बधाई संदेश

सत्यपाल सिंह सुपुत्र श्री कुरडाराम भांभू, निवासी गांव मंगाली सुरतिया, जिला हिसार की पदोन्नति हरियाणा पुलिस में सहायक उप-निरीक्षक (ASI) से उप-निरीक्षक (SI) के पद पर हुई है।

अनिल कुमार भांभू सुपुत्र श्री रिछपाल सिंह भांभू, निवासी गांव मंगाली सुरतिया, जिला हिसार को हरियाणा पुलिस में उत्कृष्ट कार्यके लिए पुलिस महानिरीक्षक, हिसार मंडल द्वारा प्रशस्ति प्रमाण पत्र (प्रथम श्रेणी) और 5000 रुपये नगद पुरस्कार से सम्मानित किया है।

कार्तिक बिश्नोई सुपुत्र श्री सुभाष, निवासी गांव बड़ोपल, तह. व जिला फतेहाबाद का चयन राजकीय प्राथमिक विद्यालय, भट्ठियां (लुधियाना) में ETT टीचर के पद पर हुआ है।

विपुल बिश्नोई सुपुत्र श्री सुभाष चन्द्र गोदारा, निवासी ग्राम 4 टी.के., रायसिंह नगर, जिला श्रीगंगानगर (राज.) का चयन भारतीय वन्य जीव संस्थान में प्रोजेक्ट एसोसिएट के पद पर हुआ है।

अक्षिता बिश्नोई सुपुत्री श्री सुनील धारणिया, निवासी गांव संगरिया, हनुमानगढ़ (राज.) ने केन्द्रीय विद्यालय संगठन, भोपाल संभाग द्वारा आयोजित 51वीं संभागीय खेलकूद प्रतियोगिता 2022 में अन्डर 17 शूटिंग में प्रथम स्थान प्राप्त किया है।

अंकुर डेलू सुपुत्र श्री प्रेम कुमार डेलू, निवासी गांव सदलपुर, जिला हिसार को रसायन विज्ञान में IIT, Indore द्वारा M.Sc. की उपाधि प्रदान की है तथा Ph.D. (Chemistry) के लिए Michigan State University, US में प्रवेश मिला है।

समृद्धि बिश्नोई सुपुत्री डॉ. राजेश बिश्नोई, निवासी गांव मैनावाली, तह. एवं जिला हनुमानगढ़ (राज.) का IIM Rohtak (भारतीय प्रबंध संस्थान, रोहतक) के पांच वर्षीय IPL कोर्स में चयन हुआ है।

प्रो. मंगलाराम सुपुत्र श्री सूराराम, हाल निवासी 55ए, नेहरू कॉलोनी, रातानाड़ा, जोधपुर (राज.) को राजस्थान संस्कृत अकादमी, जयपुर का सदस्य मनोनीत किया गया है। आप जयनारायण व्यास वि.वि., जोधपुर में संस्कृत विभाग के अध्यक्ष भी हैं।

आप सबकी इन उल्लेखनीय उपलब्धियों पर बिश्नोई सभा, हिसार व अमर ज्योति पत्रिका परिवार की ओर से हार्दिक बधाई व उज्ज्वल भविष्य की शुभकामनाएँ।

शास्त्रों में भोजन करने के नियम

- भोजन हमेशा एकांत में ही करना चाहिए। **-वसिष्ठस्मृति, स्कंदपुराण**
- दोनों हाथ, दोनों पैर और मुख- इन पांच अंगों को धोकर ही भोजन करना चाहिए। ऐसा करने वाला शतायु होता है। **-पद्मपुराण, सुश्रुतसंहिता, महाभारत**
- भोजन करते समय मौन रहना चाहिए। **-स्कंदपुराण**
- परोसे हुए भोजन की निंदा नहीं करनी चाहिए। वह स्वाद में जैसा भी हो, उसे प्रेम से ग्रहण करना चाहिए। **-महाभारत, तैत्तिरीय उपनिषद्**
- रात में भरपेट भोजन नहीं करना चाहिए। **-स्कंदपुराण**
- सोने की जगह पर बैठकर खानपान न करें, हाथ में लेकर भी कुछ न खाएं। अर्थात् पात्र में लेकर ही खाएं। **-मनुस्मृति, सुश्रुतसंहिता**
- बहुत थके हुए हों तो आराम करने के बाद ही कुछ खाएं-पिएं। अधिक थकावट की स्थिति में कुछ भी खाने से ज्वर या उल्टी होने की आशंका रहती है। **-नीतिवाक्यामृतम्**
- जूठा किसी को न दें और स्वयं भी न खाएं, चाहे वह आपका छोड़ा हुआ अन्न ही क्यों न हो। भोजन के बाद जूठे मुंह कहीं न जाएं। **-मनुस्मृति**
- खाने की चीजों को गोद में रखकर नहीं खाना चाहिए। **-बौधायनस्मृति, कूर्मपुराण**

तेजोजी कृत हरजस

(राग सोरठि)

जहां अवर न पावै वास, सुन्य नगरी पावही ॥1 ॥टेक
नगर नांव वेगमपुरा, कोउ वसै वेगंम होय।
जतन जतन करि पोहचियै, फिरि आवागुवण न होय ॥2 ॥
जहां लोक लाज को गम नहीं, सकळ दीवाना देस।
जे उत पहुंचे चालि कै, फिर दोहड़ि न काछै वेस ॥3 ॥
जाति वरण जांह कुल नहीं, ऊंच नीच न कहाय।
सुरति निरति दोऊ धरे, तो उस मारगि जाय ॥4 ॥
सकळ कुटम्ब एकतर भया, पद-पद समाने प्राण।
ग्यान ध्यान पाछै रह्यो, तित कान्हा गळ तान ॥5 ॥

भावार्थ- जो शून्य में निवास करता है, उसे ही वहां स्थान मिलता है, अन्य किसी को नहीं। उस शून्य नगर का नाम वेगमपुरा है, जो उसमें रहता है वही उस जैसा हो जाता है। वहां बहुत प्रयत्न से पहुंचा जाता है, लेकिन एक बार पहुंचने के बाद उसका इस संसार में आना-जाना नहीं होता है। वह ऐसा मस्त संसार है, जहां लोक लज्या का डर नहीं है, अगर एक बार वहां कोई चलकर पहुंच जाये तो वह वापिस आने का नाम ही नहीं लेता है। वहां जाति, वर्ण, कुल आदि की उच्चता, निम्नता नहीं है, जो सुरति- निरति का ध्यान करता है, वही उस रास्ते पर जाता है। जो अकेला सारे परिवार को छोड़कर अपने प्राणों की परवाह न करके ध्यान करता है, कवि कान्हाजी कहते हैं, उसके गले में ग्यान और ध्यान का सुर निकलता है।

झूंबखो (राग मल्हार)

मेरा लाल नै अंसो हरजी रो झूंबखो, पांचूं परमळ भारी।
अै पांचू जे वस करै, सो पतिवरता नारी ॥1 ॥टेक
हूं गुणवंती कामंणी, निगुणी मोरी नाह।
एकै संग वसंतडां, अब क्यौं मेहल्यौ जाय ॥2 ॥
घंण पुराणी पीव नुवों, नित्य उठ झगड़ो होय।
घंण पिछाणै पीव कूं, आवागुवण न होय ॥3 ॥
पाळ पुराणी जळ नुंवौ, हसा केळ कराय।
बाळापण री प्रीतड़ी, चुण-चुण हरि चुगाय ॥4 ॥
गिगन मंडळ मां कोठड़ी, घुरै दमांमां घोर।
मन मधकर सूं मिल रह्यौ, छेद्या क्रम कठोर ॥5 ॥
गंगा, जमना, सुरसती, त्रिवेणी तटि असनान।
चद सूरज अै अंत रै, अठसठि तीरथ थान ॥6 ॥
इडा पिंगला सुषमनां, भुंवर गुफा कै ठांव।
पांच पचीसूं वसि करै, संभू जाको नाव ॥7 ॥
वंकनाळ नीझर झुरै, अमर मर नहीं जीव।
पलटि जोगणि जोगी हुवै, सून्य महारस पीव ॥8 ॥
किण ओ झूंबखो गावियौ, किण अै किया बखाण।
जां घट अंणभै उपजै, जाका अैह अहनाण ॥9 ॥
गिगन मंडळ उरि अंतरो, रूप विवरजत दीठ।
आसानन्द अैसी कहै, पीयो महारस मोठ ॥10 ॥

भावार्थ- ईश्वर के नाम का ऐसा समूह है, जहां पांच विषय बड़े बलवान है, लेकिन जो इन्हें सद्बुद्धि से वश में कर लेता है, वही योग्य है। स्त्री-पुरुष का निवास एक स्थान में है, जैसे नेत्र में शर्म और पाप का स्थान है, ये तीनों एक साथ नहीं रह सकते, ऐसे ही दया और लोभ का स्थान हृदय है, ये भी एक साथ नहीं रह सकते। स्त्री यानी सुरता पुरानी है और उसका पति पारब्रह्म नित्य नवीन है, अगर सुरता अपने पति को पहचानकर उसके पास पहुंचे तो आवागमन से रहित हो जाये। पुन: सुरता की तुलना शरीर से है, सुरता पुरानी, शरीर नया है और उसमें आत्मा विचरण करती है, यदि शुरू से ही यह शरीर सुरता से ईश्वर नाम का दाना चुगे तो आत्मा की मुक्ति हो जाये। शून्य के स्थान में नगारों की घोर ध्वनि होती है, मन उस पारब्रह्म में मिल गया है और पाप कर्म नष्ट हो गये हैं। इडा, पिंगला और सुष्मना की धाराओं में स्नान करो। चंद (इडा), सूर (पिंगला) और इनसे आगे जो सुष्मना है, उसी में पारब्रह्म पाया जाता है, वही अड़सठ तीर्थों का स्थान है। इडा, पिंगला और सुष्मना, भंवर गुफा में जाती है। पांच विषय और पच्चीस प्रकृतियों को वश में करने वाला योगीराज शंकर भगवान के समान है। ब्रह्माण्ड में जो हजार पंखुडियों का कमल है, उसमें अमृत बहता है, जिसे नागिन कुण्डलिनी पी जाती है, यदि उसे जीव पी ले तो वह अमर हो जाये, जो योगी कुण्डलिनी को उलट कर अमृत को ग्रहण करता है, वह शून्य के महारस से अमर हो जाता है। कवि प्रश्न पूछता है- यह अध्यात्म योग का हरजस किसने गाया है और किसने ऐसा वर्णन किया है? पुन: स्वयं ही उत्तर देता है- जिसके हृदय में 'अणभै वाणी' उपजती है, वही इसे गा और बता सकता है और यही सच्चे योगी की पहचान है। आसानन्द जी कहते हैं- इस ब्रह्म का कोई रूप नहीं है, शून्य मंडल और ब्रह्माण्ड के अन्तर का अध्यात्म योग के अमृत से मिटाया जा सकता है।

साभार- बिश्नोई संतों के हरजस

लील (नील) न लावै अंग, देखत दूर ही त्यागै

भगवान जाम्भोजी ने हमें जब बिश्नोई बनाया था तो 29 नियमों में से एक नियम ये बताया था कि नीले रंग के वस्त्र धारण नहीं करना। नीले रंग में आसमानी, कबूतरी, नेवी ब्लयू, लाइट ब्लयू इत्यादि सब आते हैं। इसलिए इन पर कुतर्क नहीं करना चाहिए कि ये नीले नहीं हैं।

इस नियम का पालन करना तो सबसे ही आसान है और सबसे सरल यही नियम है क्योंकि इसकी पालना कपड़े खरीदते वक्त ही हो जाती है। हमें नीले रंग के वस्त्र खरीदने ही नहीं चाहिए और ऐसे कपड़ों को देखते ही दूर कर देने चाहिए (देखत दूर ही त्यागै)। यदि खरीदेंगे ही नहीं तो पहनना अपने आप ही रूक जाएगा। इसलिए सभी बिश्नोइयों से विनम्र निवेदन है कि कृपया इन रंगों के वस्त्र न पहनें। रंग तो और बहुत हैं, जीन्स भी नीले रंग के अतिरिक्त दूसरे बहुत से रंगों में आसानी से मिल जाती है यदि जीन्स पहननी ही है तो।

इस नियम द्वारा स्पष्टत: नीले रंग के वस्त्र धारण करना बिश्नोई के लिए सर्वथा निषेध किया गया है। क्योंकि स्वभाव से जो सफेद वस्त्र हैं उसको नीले रंग से रंगा जाता है। वह रंग ही मूलत: अशुद्ध होता है। इसकी उत्पत्ति तथा रंगाई दोनों ही अपवित्रता से होती है ऐसी शास्त्रों में मान्यता है। इसलिए स्मृति ग्रंथों में नीले रंग के वस्त्र धारण करना निषेध किया है- 'यथा स्नानं दानं जपो होम:, स्वाध्याय पितृ तर्पणम। पंचयज्ञा वृथा तस्य नीली वस्त्रस्य धारणात्'। नीले वस्त्रों को पहन कर यदि कोई नित्य-प्रति स्नान करें, सुपात्र को दान दे, सायंकाल, प्रात:काल हवन करे या स्वाध्याय, अतिथि सेवा आदि शुभ कर्म करे तो भी उन शुभ कर्मों का फल नष्ट हो जाता है तथा अन्य भी बहुत से प्रमाण श्रुति शास्त्रों में नीले वस्त्र निषेध संबंध में दिए हैं। वाल्मिकीय रामायण में अयोध्या नरेश त्रिशंकु की कथा आती है। त्रिशंकु प्रथम तो अपने कुलगुरु के पास जाकर सशरीर स्वर्ग में जाने की इच्छा प्रकट करता है। जब वशिष्ठ जी मना कर देते हैं तो वशिष्ठ पुत्रों के पास जाकर निवेदन करता है तो वशिष्ठ पुत्र त्रिशंकु को इस प्रकार से शाप देते हैं कि वह चाण्डाल हो जाता है। 'अथ रात्र्यां व्यतीतायां राजा चाण्डालतां गत:, नील वस्त्रों नील पुरुषो ध्वस्त मूर्धज:! चित्य माल्यांग रागश्च, आयसा भरणोभवत्।' तदन्नतर रात व्यतीत होते ही राजा त्रिशंकु चाण्डाल हो गए। उनके शरीर का रंग नीला हो गया। कपड़े भी नीले हो गये। प्रत्येक अंग में रुग्णता आ गयी। सिर के बाल छोटे-छोटे हो गये। सारे शरीर में चिता की राख-सी लिपट गयी। विभिन्न अंगों में यथा स्थान लोहे के गहने पड़ गए। इसलिए शास्त्रों में नीले रंग के वस्त्र पहनना वर्जित माना है क्योंकि जैसी जिसकी भावना होती है वह बाह्य परिधान भी वैसा ही ग्रहण करेगा। बिश्नोइयों को तो भगवान जम्भेश्वर जी ने अशुद्धता व मलिनता से निवृत करके देव तुल्य शुद्ध सात्विक बनाया था। इसीलिए नीले रंग को छोड़कर सफेद या अन्य कोई सौम्य रंग पहनना चाहिए।

जाम्भाणी साहित्य में उल्लेख है कि बिश्नोई पुरुषों को श्वेताम्बर धारण करना चाहिए व नीलाम्बर नहीं होना चाहिए। कहा भी है कि 'श्वेताम्बर धारण करै नहीं नीलाम्बर होय' क्योंकि वस्त्रों का प्रभाव भी मन, बुद्धि व शरीर और स्वभाव पर बहुत ज्यादा पड़ता है। सभी की अपनी- अपनी ड्रेस (परिधान) होता है। उससे समाज पर प्रभाव विशेष पड़ता है। सेना, वकील, जज, भक्त, साधु, संन्यासी इन सबकी अपनी-अपनी पोशाकें हैं जिससे भावनाओं पर सीधा असर पड़ता है। यदि आप नीले रंग के वस्त्र धारण करेंगे तो आपके अंदर मलिनता, राक्षसपन, दुष्टपना व क्रोध अवश्य ही आएंगे और वहीं आप यदि भक्त, साधु, सज्जन पुरुष का सौम्य शुभ्र, पीताम्बर या लाल वर्ण के कपड़े पहनेंगे तो आपका प्रभाव व भावनायें अलग होंगी। इसीलिए राक्षसी व मलिन परिधान त्याग करके भक्त का यह सफेद वस्त्र पहनना गुरु जी ने बतलाया था।

कुछ वैज्ञानिक लोग नीले रंग के वस्त्र में दोष बतलाते हुए कहते हैं कि यह हिन्दुस्तान गर्म देश है इसमें गर्मी अधिक पड़ने के कारण सूर्य की पराबैंगनी

किरणें यहां पर सीधी पड़ती हैं और वे किरणें नीले रंग की ओर आकर्षित ज्यादा ही होती हैं, जिससे सूर्य की हानिकारक किरणों को नीला वस्त्र खींचता है, जिससे गर्मी ज्यादा लगेगी। नीले रंग के वस्त्र से शोषित होकर आयी हुई गर्मी व पराबैंगनी किरणें स्वास्थ्य के लिए अति हानिकारक होती है तथा सफेद वस्त्र पर सूर्य की किरणें अपना प्रभाव नहीं डाल सकती, क्योंकि वे वस्त्र पर पड़ते ही फिसल जाएंगी, शरीर तक अपना प्रभाव नहीं जमा पाएंगी और यदि किंचित भर शरीर तक आती भी हैं तो भी शरीर के लिए हानिकारक नहीं होती। इसीलिए सफेद रंग के वस्त्र ही धारण करने चाहिए। नीले रंग के वस्त्र पहनना हानिकारक सिद्ध हुए हैं। नीले या काले रंग के वस्त्रों में मैल, गंदगी व अपवित्रता का साम्राज्य होता है क्योंकि वह आँखों से तो दिखाई नहीं पड़ता। सफेद वस्त्र में मैल छिपाने की गुंजाइश जरा भी नहीं होती। सफेद वस्त्रों से भक्त की पहचान होती है और नीले वस्त्रों से किस की पहचान होती है ये बताने की आवश्यकता नहीं। इसीलिए भगवान जम्भेश्वर जी ने जब बिश्नोई बनाए थे, तब सभी के लिए यह नियम लागू करते हुए बताया था कि अब आप लोग भक्त सज्जन हो चुके हैं आपकी पहचान सफेद वस्त्रों द्वारा होगी। आप लोग हृदय की कलुषिता त्याग चुके हैं तो अब वस्त्रों की कलुषिता भी त्याग दीजिए। यही नीले रंग के वस्त्र त्याग रूपी नियम को बताने का उद्देश्य था और यह नियम सर्वथा शास्त्र सम्मत, वैज्ञानिकता की कसौटी पर खरा उतरने वाला है। भगवान जाम्भोजी द्वारा प्रतिपादित इस 29वें नियम पर बिश्नोई समाज के सभी साधु संत, सभी गायणाचार्य व बिश्नोई समाज के आज तक के हमारे पूर्वजों की सारी पीढ़ियां एकमत हैं कि भगवान जम्भेश्वर जी ने 29वें नियम में नीले रंग के वस्त्र पहनना वर्जित किया था और ये 29 नियम सत्य, सनातन, शाश्वत, अटल, सदैव प्रासंगिक व अकाट्य हैं जिनमें कभी भी बदलाव नहीं किया जा सकता।

- एडवोकेट बनवारीलाल बिश्नोई
पूर्व निदेशक, अभियोजन विभाग हरियाणा
मो. 9467297883

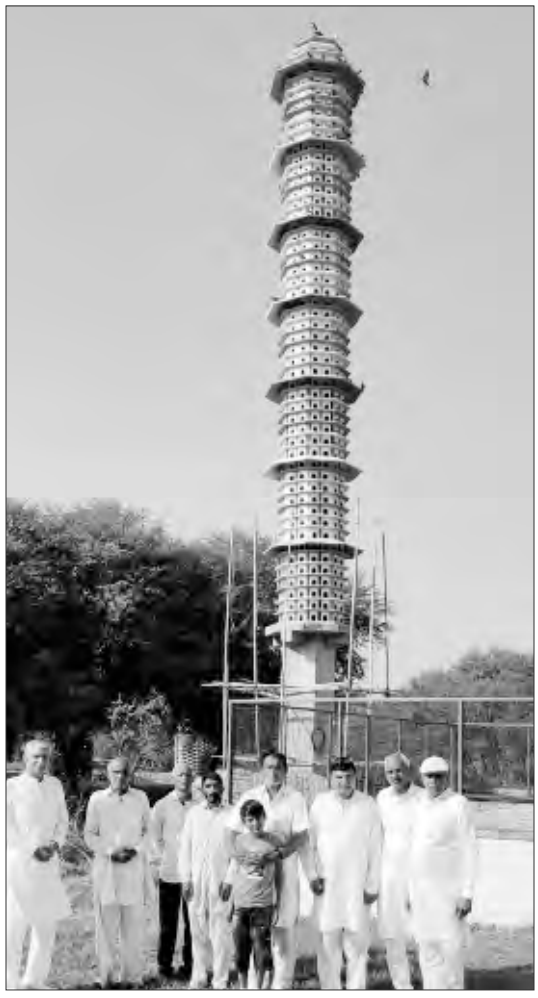

सारंगपुर में पक्षी घर का निर्माण

सारंगपुरः बिश्नोई समाज के 29 नियमों में एक नियम है- 'जीव दया पालनी'। इसका एक अनूठा उदाहरण गांव सारंगपुर के एक बिश्नोई बन्धु श्री अनिल कुमार ईशरवाल सुपुत्र स्व. श्री जौहरी मल ने अपने गांव में लगभग दस लाख रुपये की लागत से एक पक्षी घर बनाकर पेश किया है। गांव सारंगपुर में लोगों के लिए यह पक्षी घर आकर्षण का केंद्र बना हुआ है। गांव में जितने पक्षी थे सबने वहां पर अपना ठिकाना बना लिया है। उस जगह पर पक्षियों की चहचहाहट देखते ही बनती है। इसके लिए गांव वासी उनके इस कार्य की प्रशंसा कर रहे हैं।

बिश्नोई पंथ में मान्य संस्कारों की आखिरी कड़ी 'अंतिम संस्कार'

मनुष्य अपने अच्छे संस्कारों को ग्रहण करके सुसंस्कृत बनता है संस्कारों से ही आत्म निर्मित शक्तियों का विकास होता है। जैसा कि संस्कारों की पिछली श्रृंखलाओं में लिखा जा चुका है कि बिश्नोई पंथ में मान्य संस्कार 4 है। जैसे-

1. जन्म संस्कार
2. सुगरा संस्कार
3. विवाह संस्कार तथा
4. मृत्यु या अंतिम संस्कार

पहले, दूसरे व तीसरे संस्कारों के बारे में मेरे द्वारा अमर ज्योति के नवंबर-दिसंबर 2019 तथा जुलाई 2020 के अंकों में विस्तार से लिखा जा चुका है। इस अंक में चौथे संस्कार यानी अंतिम संस्कार मृतक संस्कार के बारे में जानकारी दी जा रही है।

अंतिम संस्कार या मृतक संस्कार

भारतीय संस्कृति में जन्म की भांति मृत्यु को भी एक संस्कार के रूप में मान्यता प्रदान की गई है। मृत्यु के बाद मृतक के शव को वैदिक मंत्रों का उच्चारण करते हुए घर से विदा किया जाता है जो एक संस्कार की भांति आयोजित किया जाता है, इसे अंतिम संस्कार या अंत्येष्टि संस्कार कहा जाता है। वैसे अंत्येष्टि संस्कार की कई विधियां हैं। जैसे-

1. जलाना
2. जल में प्रवाहित करना
3. पशु पक्षियों के खाने हेतु शव को जंगल में छोड़ना तथा
4. जमीन में गाड़ना या भूदाग

बिश्नोई पंथ में मृतक संस्कार

बिश्नोई पंथ में गुरु जांभोजी ने शव का भूदाग या शव को जमीन में गाड़ने की विधि को ही सर्वोच्च विधि बताया था, जो आज भी सार्वभौमिक रुप से मान्य है।

बिश्नोई पंथ में शव को गाड़ने की प्रथा को क्यों अपनाया गया?

गुरु जांभोजी ने विक्रम संवत् 1542 में जब बिश्नोई पंथ की स्थापना की थी तो पर्यावरण संरक्षण उनका मुख्य मुद्दा था, इसीलिए बिश्नोई पंथ के 29 नियमों में पर्यावरण संरक्षण को विशेष महत्त्व दिया गया है। इसीलिए मृतक संस्कार में भी पर्यावरण संरक्षण का विशेष ध्यान रखा गया है, जहां अन्य सभी हिन्दुओं में बच्चों व संन्यासियों को छोड़कर मृतक शव को जलाने का प्रावधान हैं जिनसे पेड़ों की कटाई करने से व शव के जलने से उत्पन्न जहरीली गैस से वायुमंडल प्रदूषित होता है इसके विपरीत बिश्नोई पंथ में शव को भूमिदाग देकर पर्यावरण संरक्षण का विशेष ध्यान रखा जाता है। बिश्नोई पंथ में श्मशान हेतु जमीन भी प्रचुर मात्रा में आरक्षित रखी जाती हैं। मृतक के शव का संस्कार करने के लिए स्थान का चयन करके 5 या 6 फुट गहरा गड्ढा जिसको मृतक का घर कहते हैं, खोदा जाता है जिसमें वैदिक मंत्रों का उच्चारण करते हुए मृतक का सिर उत्तर की तरफ करके उस घर में सुला दिया जाता है। गुरु जांभोजी ने बिश्नोई पंथ के लिए जो 29 नियम बताए हैं, वे पर्यावरण संरक्षण की दृष्टि से महत्वपूर्ण हैं। शव को दफनाने की विधि में भी पर्यावरण की इसी अवधारणा को अपनाया गया है जो इस प्रकार है-

1. प्रजापति ब्रह्मा जी की उत्पत्ति के कुछ समय बाद से ही मनुष्य ने अपने मृतकों को दफनाया है।
2. मिट्टी का शरीर पुनः मिट्टी में मिल जाता है, प्राकृतिक रूप से वह अपने मूल तत्वों में समाहित हो जाता है।

3. शव को जलाने के लिए पेड़ नहीं काटने पड़ते हैं जिसे पर्यावरण संतुलित बना रहता है।
4. शव को जलाने पर जो प्रदूषित वायु पर्यावरण को प्रदूषित करती है इससे बचाव होता है। पर्यावरण स्वच्छ व संतुलित बना रहता है। प्राणियों को श्वसन हेतु स्वच्छ वायु मिलती है।

शव दफनाने के बाद सभी कुएं या तालाब पर जाकर स्नान करते हैं। स्नान के बाद गाय के गौमूत्र व गंगाजल को जल में मिलाकर शुद्धिकरण किया जाता है। यह समस्त प्रक्रिया सूर्य अस्त होने से पहले की जानी चाहिए।

पातक निवृत्ति तीसरे दिन

मृतक को दफनाने के तीसरे दिन योग्य संत या गायणाचार्य को बुलाकर पाहल बनाया जाता है। पाहल बनाने के लिए कुएं से खींच कर पानी लाया जाता है तथा बिश्नोई पंथ की विधि-विधान के अनुसार हवन करके पाहल बनाया जाता है। शव यात्रा में सम्मिलित सभी लोगों को पाहल लेना अनिवार्य होता है।

नोट- अंतिम संस्कार से जुड़ा हुआ मृत्यु भोज का मुद्दा है जिस पर अगले अंक में विस्तार से प्रकाश डाला जायेगा।

-डॉ. बंशीलाल बिश्नोई ढाका
प्राध्यापक
राजकीय वरिष्ठ उपाध्याय संस्कृत
विद्यालय, गोलिया जेतमाल, बाड़मेर
मो. 7665958429

कृषक

हमारे जीने के लिए जीना चाहता है वो
हम कर सकते हैं उसके लिए, यही चाहता है वो
नहीं करेंगे कुछ अगर, फिर भी खुद के लिए लड़ना चाहता है वो
कुछ हमसे चाहता है कुछ हमारे लिए चाहता है वो।

ऐशो आराम नहीं, खुशहाली चाहता है वो
बंदिशे जुर्म नहीं, बेखौफी चाहता है वो
हमारी खुशियाँ, हम से चाहता है वो,
कुछ हम से चाहता है कुछ हमारे लिए चाहता है वो।

हम समझते नहीं, फिर भी हमें समझाना चाहता है वो
आँखों में इज्जत, चेहरे पर खुशी लाना चाहता है वो
दौलत-शौहरत नहीं, बस सम्मान चाहता है वो
कुछ हमसे चाहता है कुछ हमारे लिए चाहता है वो।

अमनदीप
पुत्री श्री सतपाल कड़वासरा
बड़ोपल, फतेहाबाद

तुकबन्दी

ढाणी ढूंढा ढोर जिनावर
खेत खेजड़ी मोर अठे।
मन की गांठ्यां खोल कै देखो,
अतरो संगम और कठे?
छान झूंपड़ी चूल्हा चौकी
नेहड़ी छाछ बिलोवणी।
कठे मिलैली देखण न अब
धान भरेड़ी ओबरी।
उगता सूरज री किरणां रो,
कँको कँको परस अठे।
दरखत री छायां सूं छण छण
करै जाण्यूं किलोळ अठे।
बाई बैठी रोटी पोवण,
बाजरिया रा आटा की।
बैठो पीढै जीमो बीरा
भरी डेगची खाटा की।

-**रिछपाल बोसाणा** अध्यापक
रा.उ.प्रा.वि. बल्लूपुरा धोद, सीकर

संस्कार गीत- विवाह के गीत (भाग-7)

बारात प्रस्थान के गीत- बिश्नोई समाज में जिस दिन विवाह का दिन निश्चित किया जाता है, जिसे 'डोरे करना' कहते हैं, तब से लेकर बारात प्रस्थान तक विभिन्न गीतों के साथ अनेक रस्में पूर्ण की जाती हैं, जिसमें परिवार एवं समाज को अपनी प्रसन्नता प्रकट करने का पूर्ण अवसर प्राप्त हो जाता है। जिस दिन बारात प्रस्थान करती है, उस दिन बनड़े को सजाकर दूल्हा बनाया जाता है और बाराती भी अपने वाहनों को सजाकर तैयार हो जाते हैं। पहले बारात ऊंट-घोड़ों पर जाती रही है। इसलिए ऊंट-घोड़ों को विशेष रूप से सजाया जाता था। बिश्नोई समाज में बारात प्रस्थान के दिन भी बनड़े के पीठी लगायी जाती है और गीत गाये जाते हैं, पर कुछ अतिरिक्त रस्मों के साथ। इस दिन पीठी लगाने से पूर्व बनड़े के संबंधी एवं मित्र दम्पत्तियों द्वारा बनड़े के सिर पर दही लगाया जाता है, जिसे 'झोळ घालणा' कहते हैं। इसमें पति-पत्नी जोड़े के रूप में बनड़े के सिर पर दही मलते हैं एवं स्त्रियां उनका नाम लेकर गीत गाती रहती हैं। इस रस्म में पति बनड़े के सिर पर दही लगाता है और पत्नी दही को मसलती रहती है। इस रस्म में बनड़ा-बनड़ी के सौन्दर्य में अधिक निखार आने का भाव भी निहित है। दही लगाने वाले सभी लोग पास में खड़े हुए नाई या नायन को नेग के रूप में कुछ रुपये भी देते हैं, जिसमें इस रस्म में सामाजिकता का पूर्ण निर्वाह होता दिखाई देता है।

कोरी मोरी कुलड़ी में धई रे जमायो।
थे जुग जीयो लाडला रा दादाजी, धई जै झोळ घालियो।
सरब सुहागणा लाडलै री दादी जी, थेई मसळ नहवायो।[1]

'झोळ' की यह रस्म कन्या पक्ष के यहां भी समान रूप से सम्पन्न होती है। इस रस्म के पूर्ण होने के बाद सदैव की तरह ही बनड़े-बनड़ी के पीठी लगायी जाती है और गीत गाये जाते हैं। पीठी लगाने के बाद बनड़ा स्नान करके नये वस्त्र पहनकर दूल्हा बन जाता है। जिस समय बनड़ा दूल्हे के वस्त्र पहनता है, उसी समय स्त्रियां 'बगां' नामक गीत गाना प्रारम्भ कर देती हैं। बनड़ा जो-जो वस्त्र पहनता है, स्त्रियां उस वस्त्र का नाम लेकर गीत गाती रहती हैं।

अब म्हारो लाडलो बागोजी पेरै, म्हे-म्हे दरजी होयस्या ओ राज।
होयस्यां म्हे सागै जायस्यां, नानड़िय रो जतन करायस्या ओ राज।[2]

बिश्नोई समाज में दूल्हा सेहरा न बांधकर सिर पर पगड़ी और कमर पर कमरबंध बांधता है। गले में सोने का कोई गहना पहना जाता है। दूल्हे को कपड़े पहनाने एवं पगड़ी बांधने का कार्य गायणाचार्य ही करता है।

अब म्हारो लाडलो पेचो जी बांधै, म्हे-म्हे गायणा होयस्या राज।
गायणा होयस्या, म्हे सागै जायस्या, कमधजिय रो जतन करायस्या ओ राज।[3]

इस तरह बालों से लेकर नयी जूती तक पहनकर बनड़ा दूल्हा बन जाता है और लोग बनड़े को बीन राजा कहना प्रारम्भ कर देते हैं। 'बागां' नामक इस गीत में दर्जी, गायणाचार्य, सुनार एवं मोची आदि के स्मरण के माध्यम से समाज की एकता एवं विवाह में सभी के योगदान को स्वीकार किया गया है। इसके साथ ही इस गीत में समाज में पहने जाने वाले कपड़ों एवं गहनों का जो विवरण हुआ है, उसमें बिश्नोई संस्कृति की अभिव्यक्ति हुई है। दूल्हे की सुन्दरता में वृद्धि करने और उसे किसी की नजर न लग जाए, इसी उद्देश्य से भाभी उसकी आंखों में सुरमा लगाकर उससे नेग प्राप्त करती है। दूल्हे के तैयार होने तक बाराती भी तैयार होकर आ जाते हैं। ज्यों-ज्यों बाराती आते हैं, त्यों- त्यों स्त्रियां उनका नाम लेकर गीत गाती रहती हैं।

राम बनै केसरिय की जान कुणा जी पधारिया।
रामू जी रा सिव राजू जी जान पधारिया॥[4]

एक अन्य गीत में दूल्हे के संबंधियों को सम्बोधित करके बारात में जाने का आग्रह किया जाता है। इन दोनों स्थितियों के गीतों में समाज की एकता, प्रेम एवं सामाजिकता की अभिव्यक्ति हुई है। बिश्नोई समाज जीव दया की भावना से ओत-प्रोत है। इसी कारण बारात में जहां बाराती नये-नये वस्त्र पहनकर सजते हैं, उसी तरह बारात में जाने वाले ऊंट-घोड़ों को भी सजाया जाता रहा है।

घोड़ी करै चढ़ो रे पिलाणो, घड़ी एक धीमी रह म्हारी तेजण

भाइड़ा संगारा तेजण घोड़ी गळ गुगर माळा।
घोड़ी करै है आबा-जाबा, जान चढ़ो केसरिय रा बाबा।
घोड़ी गळ गुगर माळा॥[5]

विवाह की सभी रस्में लोकगीतों से ही सम्पन्न होती हैं। इसी कारण इन रस्मों का महत्व व आनन्द और अधिक बढ़ जाता है एवं इनमें जीवंतता आ जाती है। इन गीतों में ही बिश्नोई समाज का सांस्कृतिक स्वरूप एवं इतिहास सुरक्षित है। आज की बारात, बारातियों एवं बारात के वाहनों में चाहे अंतर आ गया है, पर समाज के ये गीत इस बात के प्रमाण है कि किसी समय बारात में ऊंट-घोड़े काम में आते रहे हैं। इस दृष्टि से लोकगीतों का महत्व सामाजिकता के साथ-साथ ऐतिहासिक एवं सांस्कृतिक भी है।

विवाह में बारात प्रस्थान का समय न केवल दूल्हे के लिए अपितु सभी के लिए बड़ी प्रसन्नता का होता है। बच्चे, चहल-पहल देखने, मिठाई खाने, ढोल बजने एवं नाच-गाने को देखकर आनंदित हो जाते हैं तो बारातियों को बारात में जाने की प्रसन्नता होती है। कुछ लोगों को घर में बहू आने की प्रसन्नता होती है। यह प्रसन्नता गीतों की स्वर लहरियों से और बढ़ जाती है, जिससे सम्पूर्ण वातावरण आनंदमय बन जाता है। ये सभी गीत जीवन की समग्रता एवं बिश्नोई संस्कृति से ओत-प्रोत है। यह दूसरी बात है कि आज के समय में डीजे एवं पाश्चात्य संगीत ने इन लोकगीतों के आनंद को धूमिल कर दिया है। बारात की पूरी तैयारी होने के बाद जब बारात घर से प्रस्थान होती है तो मां दूल्हे को स्तनपान करवाती है, जिसके माध्यम से वह अपने बेटे को दूध की लाज रखने की याद दिलाती है। इसके बाद दूल्हा गांव में बनी गुरु जाम्भोजी की चौकी या मंदिर में जाकर गुरु जाम्भोजी की जोत के दर्शन करके व धोक लगाकर भगवान के आशीर्वाद प्राप्त करके अपने जीवन के इस शुभ कार्य के लिए प्रस्थान करता है। इस तरह की ये रस्में एवं इनसे संबंधित लोकगीत बिश्नोई संस्कृति को सुरक्षित रखे हुए हैं। ऐसे में हमारा यह कर्तव्य बन जाता है कि हम इन रस्मों का दृढ़ता से पालन करें और इन लोकगीतों को सुरखित रखें।

तोरण के गीत- विवाह की तिथि तय होने के बाद कन्या पक्ष के यहां बड़े पैमाने पर विवाह की तैयारी प्रारम्भ हो जाती है, जिसमें बारात के स्वागत की तैयारी प्रमुख रहती है। विवाह से एक दिन पूर्व गांव की गलियों, बारात के डेरे एवं घर आदि की सफाई कर ली जाती है। बारात के भोजन एवं आराम का पूरा प्रबन्ध किया जाता है। बिश्नोई समाज में बारात के गांव में पहुंचने से पूर्व वर पक्ष का नाई खेजड़ी की टहनी लेकर बारात पहुंचने का शुभ समाचार लेकर कन्या पक्ष के यहां बधाई लेने पहुंच जाता है। इस समाचार से कन्या पक्ष की बारात सम्बन्धी चिन्ता समाप्त हो जाती है। घर में सभी लोगों की प्रसन्नता बढ़ जाती है और सबमें स्फूर्ति आ जाती है। नाई से खेजड़ी की टहनी लेकर उसे माथे से लगाकर उसकी आराधना की जाती है और उसे घर में किसी सुरक्षित स्थान पर बांध दिया जाता है। बधाई लेकर आने वाले नाई को घी-खांड खिलाकर उसकी पीठ पर उबटन की थाप लगाकर उसका स्वागत किया जाता है। यह थाप कन्या पक्ष के लोगों के हृदय की प्रसन्नता की प्रतीक होती है। नाई से प्राप्त सूचना के आधार पर ही कुछ लोग अपने वाहन लेकर बारात की अगवानी करने पहुंचते हैं, जिन्हें 'पड़जानी' कहते हैं। ये पड़जानी बारात को रास्ता बताते हैं और बारात को डेरे पहुंचाते हैं। सन्ध्या के समय दूल्हा पूरी बारात को अपने साथ लेकर गाजे-बाजे के साथ कन्या पक्ष के द्वार पर पहुंचता है, जिसे 'ढुकाव' कहते हैं। विवाह में ढुकाव की रस्म बहुत ही महत्वपूर्ण मानी जाता है, जिसमें दोनों पक्ष के अधिकांश लोग उपस्थित रहते हैं। ढुकाव के समय कन्या पक्ष की ओर से अनेक रस्में सम्पन्न की जाती होती हैं और उनसे संबंधित अनेक गीत गाये जाते हैं, जिनमें भारतीय संस्कृति की विभिन्न विशेषताएं उजागर हैं। ढुकाव के समय दूल्हे के बहनोई के पास बोरटी की एक टहनी होती है, जिसे वह रास्ते में से तोड़कर लाता है। इसी टहनी को दूल्हा अपने माथे से स्पर्श करके द्वार पर बंधी हुई खेजड़ी की टहनियों से बनी हुई बन्दनवार के ऊपर से कन्या पक्ष के किसी व्यक्ति को पकड़ा देता है। इसे ही 'तोरण बानणा' कहते हैं। नाई द्वारा खेजड़ी की टहनी के साथ बारात आने की सूचना देना, खेजड़ियों की टहनियों की बन्दनवार बनाना तथा बोरली की टहनी से 'तोरण बानणा' आदि कार्यों से बिश्नोई पंथ की वृक्ष प्रेम की भावना एवं खेजड़ी वृक्षों की रक्षा की परम्परा का निर्वाह होता हुआ दिखाई देता है।

ढुकाव के समय तोरण बानणो के बाद कन्या की मां दूल्हे को दही का तिलक करती है, जिसे दही देना कहते हैं। बिश्नोई समाज में विवाह की रस्मों में यह बहुत महत्वपूर्ण मानी जाती है। इसी समय सास द्वारा दूल्हे की आरती की जाती है। आरती के समय ही सास द्वारा दूल्हे को नाप कर निरखा जाता है और चारों दिशाओं में जल डालकर सभी दिशाओं की सुख-समृद्धि की कामना की जाती है, जिससे 'सर्वे भवन्तु सुखिन: सर्वे सन्तु निरामया:' की भावना प्रकट होती है।

तोरण आयो राय भर, नित-नित सवायो राज।[5]

इसी गीत में 'कामण' का भी वर्णन किया गया है। कामण का अर्थ जादू है। कामण के द्वारा बनड़ी की ओर से दूल्हे पर प्रेम के जादू का प्रभाव डालने का प्रयास किया जाता है। यह गीत सकारात्मक है और बहुत ही मार्मिक है। गीत में दूल्हे एवं बनड़ी के संवाद है, जिसमें दूल्हा बनड़ी से कामण के प्रभाव को कम करने के लिए कहता है और बनड़ी अपनी भूमिका से इन्कार करती है।

पूछै सरदार बनी नै, कामण ढीला छोड़ो राज।
म्है ना कामण गारा, म्हारो जोसी कामण गारो राज॥
जोसीड़ै रो नेक चुकायस्य, कामण ढीला छोड़ो राज।
तोरण आयो राय भर, नित-नित सवायो राज॥[6]

ढुकाव के इन गीतों में एक ओर योग्य वर प्राप्त होने पर कन्या के भाग्य की प्रशंसा की जाती है तो दूसरी ओर योग्य पुत्र के लिए माता-पिता एवं परिवार के सदस्यों का आभार व्यक्त किया जाता है।

छिन-छिन थारै मात-पिता नै, ऐसो कंवर जलम्यो राज।[7]

ढुकाव के समय ही पहली बार गांव एवं परिवार की स्त्रियों को दूल्हे को समीप से देखने का अवसर मिलता है। इस समय कुछ स्त्रियों को दूल्हे के पीठी लगाने की रस्म पूरी करनी होती है, जिससे उन्हें दूल्हे को बहुत निकट से निरखने का अवसर प्राप्त हो जाता है और सास आरती के समय दूल्हे को निरखती है। उसी समय स्त्रियां दूल्हे को निरखने का गीत गाती है।

सासु निरखै जवाई ए, दयली ओळबो।
म्हारै साहब रो खाट्यो, न द्यू ओळबो॥[8]

सास जंवाई को निरख कर न उसमें कमी निकालती है और न किसी को उलाहना देती है क्योंकि जंवाई को तो उसके साहब ने ही पसंद किया है। यह गीत बिश्नोई समाज की उस परम्परा की ओर संकेत करता है, जिसमें घर के बुजुर्ग ही बच्चों के रिश्ते तय करते थे और वे ही लड़के- लड़की को देखकर पसन्द करते थे।

ढुकाव के समय अधिकांश गीत वर-कन्या के संबंध में ही गाये जाते हैं, पर जिस बारात से वर-कन्या एवं घर परिवार का मान-सम्मान बढ़ता है और ढुकाव की रौनक बढ़ती है, उसके सम्मान में गीत न गाये जावे, ऐसा सम्भव नहीं है। भारतीय समाज में सामाजिकता का कदम-कदम पर ध्यान रखा गया है। इसी सामाजिकता का निर्वाह विवाह संस्कार पर किया गया है। हमारे लोकगीतों की तो आत्मा ही सामाजिकता है। इसी आधार पर वर-कन्या की प्रशंसा के साथ-साथ बारातियों को गाली गाकर उनका मान-सम्मान किया जाता है।

सात सोपारी लाडा, सिंगोड़ा रो सटको।
बाबै बारो आया लाडला, कांगो करसी गटको॥
सात सोपारी लाडा, सिंगोड़ा रो सटको।
काणा-काणा जानी लायो, लाडा कांगो करसी मटको॥[9]

इस तरह ढुकाव की रस्म को पूर्ण करके सोपारी एवं सिंगोड़ों का आनंद लेते हुए बारात गाजे-बाजे के साथ अपने डेरे पहुंच जाती है।

संदर्भ:

1. डॉ. बनवारी लाल सहू, बिश्नोई लोकगीत, पृ. 80
2. वही, पृ. 80
3. वही, पृ. 80-81
4. वही, पृ. 81
5. वही, पृ. 83
6. वही, पृ. 83
7. वही, पृ. 84
8. वही, पृ. 84
9. वही, पृ. 84

-डॉ. बनवारी लाल सहू
विभागाध्यक्ष (हिन्दी) से.नि.
एन.एम.पी.जी. कॉलेज, हनुमानगढ़ टाउन (राज.)
मो.: 9414875029

रावण दहन

दशहरा मैदान में रावण को खड़ा किया जा रहा था,
भारी भीड़ के बीच रावण बेबस नजर आ रहा था।
इधर भीड़ रावण को जलाने की सोच रही थी,
उधर रावण की नजरें भीड़ में किसी को खोज रही थी।
सब दूर देखने के बाद रावण मन ही मन मुस्काया,
उस भीड़ में उसे कोई राम नजर नहीं आया।
राम के हाथ मरकर मुक्ति मिलेगी ऐसी आशा थी,
यहां तो कोई राम नहीं है मन में निराश थी।
रावण बोला भीड़ की तरफ होकर उन्मुख,
कोई राम हो तो आओ मेरे सम्मुख।
मैं शुद्ध करूंगा, राम के हाथ ही मरूंगा,
प्रभु के हाथों मरकर, भवसागर से तरूंगा।
रावण की बात सुनकर कोलाहल थम गया भीड़ में सन्नाटा था,
ये तो भीड़ के मुंह पर रावण का जोरदार चांटा था।
भीड़ में हर आंख एक-दूसरे का चेहरा ताक रही थी।
रावण को बचने की उम्मीद नजर आ रही थी।
रावण का तीर निशाने पर लगा था,
भीड़ में तो हर कोई उसी का सगा था।
रावण बोला मुझे मारना है तो राम बनकर आओ,
सीताएं रोज अपहृत हो रही है पहले उनको बचाओ।
जिस दिन मन, वचन, कर्म से राम बन जाओगे,
सड़क से संसद तक घूमते रावण नहीं आओगे।
जिस दिन सबके मन में राम होगा,
उस दिन हर घर अयोध्या धाम होगा।
कुछ लोगों को रावण की बातें कचोट रही थी,
भीड़ लंका समझकर दुकानदारों को लूट खसोट रही थी।

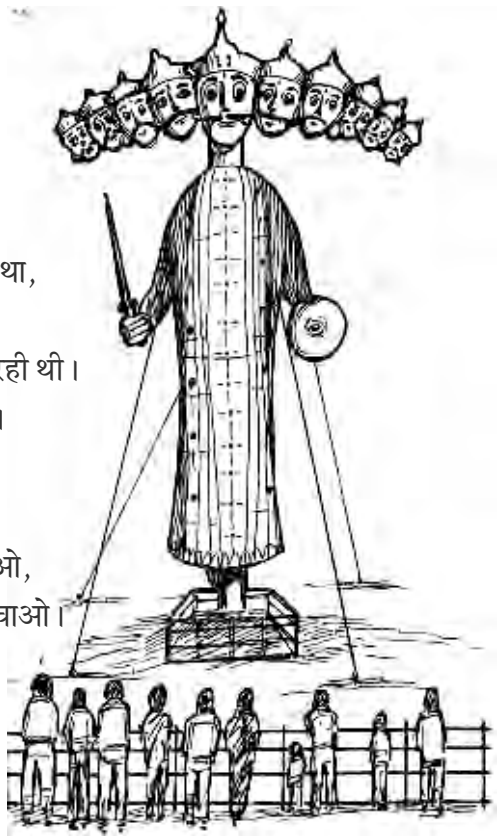

-श्रवण गोदारा
गांव नीमगांव, हरदा म.प्र.
मो.: 9977622722

विनम्रता ही व्यक्तित्व का आभूषण है

विनम्रता मनुष्य के व्यक्तित्व का आभूषण होती है। विनम्रता के द्वारा ही हमारा व्यक्तित्व खूबसूरत बनता है, क्योंकि विनम्र हो करके हम कोई पात्रता अर्जित कर सकते हैं। विनम्रता के कारण ही हम एक-दूसरे से जुड़े रह सकते हैं। भारतीय संस्कृति में भी विनम्रता को व्यक्त करने के लिए प्रणाम व अभिवादन करने की परम्परा है।

जाम्भाणी परम्परा में सबदवाणी में भी आया है, 'जे नवियै नवणी, खवियै खवंणी, जरियै जरणी। जे कोई आवै हो-हो करतो आप जे होइये पाणी॥ संत केसोजी ने एक छंद में विनम्रता को इस प्रकार से पेश किया है-

'निंवणी खिंवणी विनती, सबसे आदर भाव।
कर जोड़े बंधु चरण शीश निंवाय निंवाय जै।
आम फलै नीचो निवै अरण्ड ऊंचो जाय।
नुगर-सुगर की पारखां कह 'केसो' समझाय जै।

बड़ों के समक्ष झुक करके आशीर्वाद लेने की परम्परा है। हमारे जीवन में विनम्रता बनी रहे, इसलिए मंदिरों, स्कूलों एवं घरों में प्रार्थना-स्तुतियां आदि की जाती हैं, दूसरों की सेवा-सहायता व दान-दक्षिणा के कार्य किये जाते हैं। ऐसा करने से हमारे मन का अहंकार गलत है, मन धुलता है और हम अधिक विनम्र एवं कृतज्ञ बनते हैं।

'विद्या ददाति विनिमयम्'। संस्कारी शिक्षा से व्यक्ति जीवन में विनम्रता का संचार होता है। विनम्र व्यक्ति ही सब कुछ ग्रहण करते हुए अपने जीवन का सर्वांगीण विकास कर सकता है।

हमारे धर्म ग्रंथों का एक मूल मंत्र है- जो नम्र हो करके झुकते हैं, वही ऊपर उठता है। विनम्रता न केवल हमारे व्यक्तित्व में निखार लाती है, बल्कि कई बार सफलता का कारण भी बनती है। विनम्रता के कारण जो सम्मान मिलते हैं, उनका एक अलग ही महत्व होता है। मन की कोमलता और व्यवहार में विनम्रता एक बहुत बड़ी शक्ति है। कोमलता (विनम्रता) सदा ही जीवित रहती है। जबकि कठोरता (अकड़ता) का जल्दी ही विनाश हो जाता है।

महाभारत युद्ध के बाद धर्मराज युधिष्ठिर, भीष्म पितामह के पास गये, वे बाणों की शैय्या पर पड़े थे। युधिष्ठिर ने विनम्रतापूर्वक उनसे धर्मोपदेश देने का निवेदन किया तो भीष्म पितामह ने कहा कि 'नदी समुद्र तक पहुंचती है तो अपने साथ पानी के अतिरिक्त बड़े-बड़े लम्बे पेड़ साथ ले आती है तो एक दिन समुद्र ने नदी से पूछा कि तुम पेड़ों को तो अपने प्रवाह के साथ ले आती हो, परन्तु कोमल बेलों व नाजुक पेड़ों को क्यों नहीं लाती हो? नदी बोली कि जब-जब पानी का बहाव बढ़ता है तो उस समय बेलें और नाजुक पौधे झुक जाते हैं और झुक करके पानी को रास्ता दे देते हैं, इसलिए वे पीछे बच जाते हैं जबकि बड़े-बड़े पेड़ अकड़कर यानी तनकर खड़े रहते हैं तो वे अपना अस्तित्व खो बैठते हैं।

भीष्म पितामह ने कहा कि युधिष्ठिर, ठीक वैसे ही, जो जीवन में विनम्र रहते हैं, उनका अस्तित्व कभी समाप्त नहीं होता है। विनम्र व्यक्ति के सामने कठोर हृदय वाले व्यक्ति को भी झुकना ही पड़ता है। विनम्रता से हम छोटी-छोटी बातों का ध्यान रखकर अपने जीवन को खुशहाल बना सकते हैं। जो विनम्र होते हैं, वे हर जगह सम्मान पाते हैं और दूसरों को जोड़ने का कार्य करते हैं। विनम्रता और प्रेम के आगे सब पराजित हो जाते हैं। विनम्रता व्यक्ति के अंदर सत्पात्रता विकसित करती है। विनम्र व्यक्ति संवेदनशील होता है। विनम्र व्यक्ति ही सही अर्थों में बड़ा बनता है और अपने जीवन को ऊंचा उठा पाता है। हमें भी अपने जीवन में विनम्रता को ही स्थान देना चाहिए, अहंकार को नहीं।

-मोतीराम कालीराणा
गांव व डा. लक्ष्मण नगर (चादी)
जिला जोधपुर (राज.)
मो.: 9783338265

सोने का हिरण

ज्ञानेश्वरी देवी उर्फ दादी माँ इस मरूवासी गांव में रहकर हर तरह से प्रसन्न है। वैसे तो तीन सौ घरों का यह पूरा गांव ही इनका परिवार है, हर कोई इन्हें दादी माँ ही कहता है तथा इनके सुख-दु:ख एवं हारी-बीमारी में मदद करने को एक पैर पर खड़ी रहता है, परन्तु दादी माँ ने गाय, कुत्ता, बिल्ली, कबूतर, मोर और न जाने कितने ही पशु-पक्षियों को अपने परिवार में सम्मिलित कर रखा है। खाने-पीने और आराम करने के पश्चात् जो भी समय बचता है, वह इन पशु-पक्षियों की सेवा में, आंगनबाड़ी को सींचने-संवारने में तथा महिला जागृति केन्द्र के संचालन में लगा देती है। इन्होंने अपने घर में बने अतिथिगृह के एक बड़े कक्ष को सभा भवन बना रखा है, जहां सुबह-शाम कुछ वृद्ध महिलाएं अपने नाती-पोतों के साथ आकर एकत्रित हो जाती है। वे दादी माँ के साथ मिलकर 'हरजस' गाती है, अपने सुख-दु:ख बतियाती हैं तथा अन्त में ठाकुर जी का प्रसाद लेकर बच्चों सहित अपने-अपने घरों को लौट जाती है। दादी माँ उन्हें हर दिन रामायण, महाभारत, भागवत या किसी न किसी पुराण की कोई कथा सुनाती रहती हैं। इस सम्पूर्ण प्रक्रिया में वह प्राय: भूल जाती हैं कि उनका एकमात्र बेटा अमेरिका में रहता है। वह बहुत बड़ा डाक्टर है। उसके पास लाखों नहीं, करोड़ों की सम्पत्ति है। उसकी पुत्रवधू रूबी, वहां की एक बीमा कम्पनी में उच्चाधिकारी है। हाँ, इन्हें अपने पोते-पोती का ख्याल अवश्य आता रहता है।

जया और जोनू उन्हें कितना चाहते थे। जोनू तो स्कूल से आते ही सीधा उनकी गोद में समा जाता था। उसकी माँ डांटती रहती, उन्हें 'मेनर्स' सिखाने सम्बन्धी उपदेश देती रहती, परन्तु वे बच्चे थे कि बिना अपनी मम्मी की परवाह किए हर समय उन्हीं के साथ खेलते रहते । उनसे तरह-तरह के प्रश्न पूछते रहते। एक बार जब जोनू को उसकी मम्मी ने डांटा कि वह दादी माँ से ज्यादा बातें नहीं करें, वह उसे दकियानूस और प्रिमिटिव बना देगी जबकि उसे 'प्रोग्रेसिव' बनना है। 'पास्ट' में नहीं 'फ्यूचर' में जीना है। उस समय जोनू को अपनी मम्मी का डांटना बहुत अखरा था।

पता नहीं, उस छोटे बालक में इतनी समझ और साहस कहां से आ गये कि उसने एकदम पलट कर कहा था, 'अच्छा मम्मा! तुम्हीं बतलावो, जब तुम्हें घर पर ठहरने और हमसे बात करने की जरूरत नहीं, 'डेड' को अपने क्लीनिक और पेसेन्ट्स से फुरसत नहीं, स्कूल में 'सर' को अपने सिलेबस से छुटकारा नहीं, ऐसी स्थिति में हम दादी माँ से बात नहीं करें तो किससे करें? हम अपनी जिज्ञासाएं किन के सम्मुख रखें? हर कोई अपने को बहुत बड़ा और व्यस्त समझता है, हमें कोई कुछ समझता ही नहीं। एक दादी माँ ही तो है जो हमारी हर बात को सुनती हैं और हमें सात समुद्र पार हमारे 'होमलैन्ड' की मीठी-मीठी कहानियां सुनाती है।' जोनू की बात सुन रूबी की त्यौरियां चढ़ गई थी।

'तुम्हारा होमलैन्ड! क्या मतलब? यह देश तुम्हारा होमलैन्ड नहीं है जहां तुम जन्मे हो?'

'नहीं है। हम चाहे जहां जन्मे हों, हमारा होमलैन्ड तो हमारा प्यारा भारत है, वह मधुर स्वप्नों का भारत, जहां के पवित्र सरोवरों में कमल खिलते हैं, चांदनी रात में बालू रेत पर परियां नाचती हैं।'

अपने जाये-जन्मे बेटे का वह उत्तर सुन रूबी एकाएक गंभीर हो गई थी। उसने डिनर के वक्त अपने पति से शिकायत की थी कि 'दादी माँ का साथ बच्चों में कुसंस्कार उत्पन्न कर रहा है।' डॉ. राय अपनी पत्नी द्वारा लगाये गये आरोप की? तिक्तता को समझ कर भी उत्तेजित नहीं हुए थे, केवल हंसकर इतना भर कहा था, 'देखो रूबी! मैं आज जो कुछ भी हूं, केवल अपनी माँ के द्वारा निर्मित हूं, तन से, मन से और संस्कारों से भी। तो क्या मेरे संस्कार खराब हैं?' अपने पति का वह उत्तर सुन रूबी ने एक आन्तरिक तिलमिलाहट अनुभव की थी, परन्तु वह बात को ज्यादा तूल नहीं देना चाहती थी, कारण वह अपने पति की इस कमजोरी को भली-भांति जानती थी कि वह कभी अपनी माँ के विरुद्ध

कोई बात सुनने को तैयार नहीं है। दादी माँ ने उस स्थिति की नाजुकता को भली-भांति भांप लिया तथा मन ही मन एक निर्णय ले लिया और इनका इस मरू आंचल में बसे, उनके पूर्वजों के खानदानी गांव सारूंदा में यह एकान्तवास, उसी निर्णय का प्रतिफल है।

इस बार दीपावली के अवसर पर डॉ. राय अपने दोनों बच्चों के साथ एक माह के लिए भारत आए। जया और जोनू ने दिल्ली में उतरते ही अपना मन्तव्य बतला दिया कि वे अपनी दादी माँ के पास जाना चाहेंगे तथा वहीं रहेंगे और उन्हें कुछ नहीं देखना है। डॉ. राय भी सर्वप्रथम अपनी माँ, दादी माँ के पास।

गत बीस दिनों से दादी माँ का घर उत्सव भवन बना हुआ है। जया-जोनू गांव के लड़के-लड़कियों के साथ इस तरह से हिल-मिल गये हैं कि जैसे जन्म से सब साथ रहे हों। यदि मन पास आना चाहे तो भाषा का माध्यम भी कोई विशेष बाधा नहीं बन सकता। वे कभी पास के बालू रेत के टीले पर अन्य बच्चों के साथ लोट-पोट का खेल खेल रहे हैं, तो भी छिपा-छिपी का खेल खेल रहे हैं।

जया ऊपर से थोड़ी बालू रेत हटाकर नीचे की नम मिट्टी को सूंघती है और जोनू से कहती है, 'देखो जोन! इस मिट्टी में खुशबू आती है, कैसी भीनी-भीनी महक। लो तुम भी सूंघो।' वह अंजली भर नम रेत जोनू के सम्मुख करती हैं।

'बहुत प्यारी खुशबू। दादी माँ कहती है, यह धरती हमारी माँ हैं। यह माँ के आंचल की महक हैं और हाँ, इस रेत में 'इन्फेक्शन' नहीं है, केवल एफेक्शन है, एफेक्शन प्यार और अनुराग।'

बस, यों ही खेलते-बतियाते दिन बीत रहे हैं।

कार्तिक मास की सुहानी शीतल, चमकीली चाँदनी रात है। खुले आँगन में खाट बिछाकर दोनों बच्चे अपनी दादी माँ के अगल-बगल सो रहे हैं। ऊपर गहरे श्यामल आकाश में एक कुरजों की डार उड़ती जा रही है। उनकी कुरलाहट एक दर्दीला संगीत उत्पन्न कर रही हैं। जया पूछती है, 'दादी माँ! ये कौन पक्षी बोल रहे हैं?'

'ये कुरजे हैं बेटा! उन्हें क्रोंच पक्षी कहते हैं।'

'ये इतनी रात को कहां जा रहे हैं?'

'ये भी तुम्हारी तरह बहुत दूर, ऊंचे-ऊंचे पहाड़ों के पार, बर्फीले मैदानों और वनों में वास करते हैं, अब इन्हें अपनी जन्मभूमि की याद आई है। ये प्रवासी पक्षी, अपने देश की मिट्टी की महक पाकर चहक रहे हैं। ये दो-तीन महीने यहां रहेंगे, झीलों, तालाबों के पास नये शिशुओं को जन्म देंगे और ग्रीष्म ऋतु प्रारम्भ होने से पहले यहां से उड़ जायंगे, अचानक आंखें नम हो आई। वह छोटी जया दादी माँ के दर्द को शायद नहीं पहचान पाई। उसने केवल इतना भर कहा, 'दादी माँ! हम अमेरिका नहीं जायेंगे।'

'नहीं बेटे ऐसा नहीं कहते। वहां तुम्हारी मम्मी, तुम्हारी प्रतीक्षा कर रही है और फिर तुम्हें तो पढ़-लिख कर बहुत बड़ी डॉक्टर बनना है, नहीं तो तुम बीमार और दु:खी लोगों की सेवा कैसे कर पाओगी?'

जोनू बीच ही में बोल उठा, 'दादी माँ! मैं वैज्ञानिक बनूंगा और जया डाक्टर। परन्तु हाँ, हम पढ़-लिख कर बड़े होने के पश्चात् अमेरिका में नहीं रहेंगे। हम भारत में रहेंगे। यह हमारा होमलैन्ड है, हम इसी की सेवा करेंगे।'

जया कुछ सोचकर पुन: पूछती है, 'अच्छा दादी माँ! पापा भारत में पढ़कर अमेरिका क्यों चले गये थे?'

वे उत्तर देती है, 'इस बात को तुम अभी नहीं समझोगे बेटे! बड़े हो जाओगे, तब शायद समझ सको, अब रात बहुत हो गई है, सो जाओ।'

डॉ. राय घूम-फिर कर वापिस आ गये हैं। उन्हें कल दिल्ली और परसों अमेरिका जाना है। जया और जोनू गांव के बालकों के साथ पास की ओरण में झाड़बेरियों के बेर तोड़कर खा रहे हैं। घर में माँ-बेटे दोनों अकेले हैं। कुछ समय की चुप्पी के पश्चात् दादी माँ धीरे-धीरे शब्दों को तौलती हुई कहती है, 'देखो बेटा! मेरे लिए अगला किनारा अब बहुत पास है। यह नाव किसी भी समय तट पर लग सकती है। शायद यह अपना आखिरी मिलन हो।'

'माँ.... आँ।' डॉ. राय का गला भर आया। दादी माँ उसे टोकती है, 'धीरज रख बेटा। मैं कुछ कहना

चाहती हूं, उसे सुन। फिर शायद मुझे कहने का और तुम्हें सुनने का अवसर ना मिले। यह वह घटना है, जिसे मैं आज तक भूल नहीं पाई, इसे प्रथम और आखिरी बार तुम्हें सुनाना चाहती हूँ। इसे मेरी सौगात समझना और संभालकर रखना; शायद तुम्हारे जीवन में काम आये। यह धरती जब भी बंटती है, अपनी सन्तान के दिलों पर कुछ गहरे दाग छोड़ जाती है।

यह उस समय की बात है जब आजादी के नाम पर इस भारत माँ के टुकड़े हुए थे। हम उस समय बहाबलपुर के गांव बारावाली में रहते थे। तुम्हारे नानाजी जिला बहावलपुर के जेलदार थे। पक्का कोट, नौकर-चाकर, गाय-भैंस, घोड़े, जमीन, करोड़ों की सम्पत्ति। हर समय बुर्ज पर बन्दूकधारी सन्तरी खड़ा रहता था। चाँदी की सिलाएं, सोने की ईंटें, नकदी रुपयों के भरे हुए ट्रंक के ट्रंक मैंने अपनी इन आँखों से देखे हैं। परन्तु मूल बात जो मैं तुम्हें कहना चाहती हूं, वह यह है कि कई बार सत्ता और सम्पत्ति की ताकत मनुष्य को अहंकार में भरकर अंधा बना देती है और ये आसुरी शक्तियां उसके काम नहीं आती। काम आता है अपनापन, प्यार और मोहब्बत।

उस समय भय के कारण पूरा गांव पहले ही खाली हो चुका था, केवल कुछ नौकरों के घर और हमारा कोट खाली नहीं हुआ था। पिताजी को अपने हथियारों की ताकत पर भरोसा था, परन्तु चाहे जितने हथियार हो, एक सेना का सामना कैसे कर सकते थे? साँझ होते ही कबाइलियों ने कोट को चारों ओर से घेर लिया। रात भर दोनों ओर से रूक-रूक कर गोलियां चलती रहीं। भोर होने को आई थी, कोट का गोला-बारूद खत्म होने लगा। पिताजी ने आदेश दिया कि सब लोग एक-एक कर पीछे के गुप्त द्वार से, दूर कमाद के खेत में छिपते हुए निकल जावें, जान बचाने का यही एकमात्र उपाय है।

मैं उस समय 'सूवे' में थी। तुम केवल तीन दिन के थे। मैं इतनी कमजोर थी कि खुद चल भी नहीं सकती थी, फिर तुम्हारा मोह। पिताजी ने कहा, छोड़ इस लोथड़े को। शरीर रहा तो बच्चे फिर पैदा हो जाएंगे।

'पिताजी के वे शब्द गर्म तेल की तरह मेरे कानों से होकर अन्दर तक चले गये थे। मैं पत्थर का बुत बन गई। केवल माँ ने मेरी पीड़ा को समझा, उसने पिताजी से कहा, 'आप जाओ, मैं जानू के पास रहूंगी, मैं इसे इस हालत में छोड़ नहीं सकती।' पिताजी ने पुनः कड़क कर कहा था, 'मूर्ख मत बनो। क्यों अपनी इज्जत और मिट्टी खराब करती हो, शायद हम लोग बच जाएं, चलो।' परन्तु माँ मुझे छोड़कर और मैं तुम्हें छोड़कर जाने को तैयार नहीं हुई।

'पिताजी चले गये। सब चले गये। भोर की प्रथम किरण के साथ कबाइलियों ने मुख्य द्वार तोड़कर कोट में प्रवेश किया। सब लुटेरे इधर-उधर फैल गये। कुछ लोग जनानखाने की ओर आने लगे, तभी, हाँ तभी, वह कड़कती आवाज आई थी जो आज तक मेरे कानों में गूंजती है- 'खबरदार'। कोई जनानखाने की ओर कदम न बढ़ावे, यह मेजर मिर्जा खान का हुक्म है। यहां बहुत दौलत है, यह जेलदार का गढ़ है, जिसको जितना चाहे लूट लें, परन्तु हमारी अम्मीजान तथा जानू की ओर किसी ने ताका तो मुझसे बुरा कोई नहीं होगा।

'पर.... सरदार, यह काफिर, तुम्हारी अम्मीजान।'

'अख्तर! लब्ज को लगाम दो। तुम नहीं जानता। हम असली खान का बच्चा है। अपने फर्ज को जानता है। हम बलबीर के साथ पढ़े है, जेलदार की गोद में खेला हूं, अम्मीजान के हाथ से बने लड्डू खाये हैं। इस कोट के चूल्हे का नमक और अम्मीजान की मोहब्बत हमारे खून में है।'

'उसके बाद, महीना भर हम उस मुंहबोले भाई मिर्जा खान के घर रहे, फिर पाकिस्तानी सेना की गाड़ी में बोर्डर तक आये, तब तो तुम स्वयं जानते ही हो कि जब भी कोई राम किसी स्वर्ण मृग से विमोहित होकर उसके पीछे भागता है, कोई अहंकारी रावण उसके मन की कुटिया में बसी सन्तोष की सीता का हरण कर सात समुद्र पार चला जाता है।'

-गेनाराम बिश्नोई
जयसिंह देशर (मगरा)
तह. नोखा, जिला बीकानेर (राज.)
मो.: 7851005029

12वीं के बाद लॉ की पढ़ाई में अवसर

शिक्षा से जीवन में सही समय पर, सही नियोजन करते हुए शैक्षणिक योग्यता को एक आयाम तक पहुंचाया जा सकता है।

आदरणीय पाठकों अगस्त-सितम्बर के अंक में हमने भारत में 5 वर्षीय लॉ की पढ़ाई के लिए आयोजित होने वाली विभिन्न प्रकार की प्रवेश परीक्षाओं के बारे में विस्तार से चर्चा की थी। उसे चर्चा में हमने देखा था कि भारत के प्रमुख सरकारी विधि विश्वविद्यालयों में प्रवेश के लिए प्रवेश परीक्षाएं CLAT, AILET, CUET, SLAT, MAH (CET) आदि में किस प्रकार से रणनीति बनाकर, क्या-क्या विषयों को तैयार करके हम 5 वर्षीय लॉ की पढ़ाई के लिए एक बेहतरीन संस्थान मे जा सकते हैं।

जैसा कि मैंने पहले के आलेख में चर्चा की थी, इन परीक्षाओं को किसी भी प्रकार से अन्य प्रतियोगिताओं से कमतर नहीं माना जा सकता। ऐसा मैं इसलिए कह रहा हूँ कि अमूमन हमारे आसपास वकालत करने वाले एक समान्य कॉलेज से लॉ कर हमारे आसपास ही प्रैक्टिस कर रहे होते हैं तो हम उसे एक सामान्य प्रोफेशनल समझते हैं। जबकि यह एक बहुत ही विस्तृत क्षेत्र है। इसका कार्य क्षेत्र अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर है। इस डिग्री के एक प्रतिष्ठित संस्थान में प्रवेश लेने के लिए विधार्थी को ईमानदारी और जागरूकता से कम से कम एक से डेढ़ वर्ष की तैयारी की जरूरत रहती है।

यदि आप एक अच्छे राष्ट्रीय विधि विश्वविद्यालय में प्रवेश कर जाते हैं तो एक अच्छी शैक्षणिक योग्यता को प्राप्त कर सकते हैं। इस अंक में हम कुछ NLU (नेशनल लॉ यूनिवर्सिटी) की चर्चा करेंगे, जहां पर प्रवेश के लिए कड़ी प्रतियोगिता है। इसके साथ ही कुछ अन्य संस्थानों की चर्चा भी इस अंक में हम करेंगे जहां प्रवेश के लिए अच्छी प्रतियोगिता है।

NLSIU (नेशनल लॉ स्कूल आफ इंडिया यूनिवर्सिटी), बैंगलोर- भारत में सर्वाधिक प्रतिष्ठित लॉ संस्थानों में से एक नेशनल लॉ स्कूल आफ इंडिया यूनिवर्सिटी, बैंगलोर NIRF रैंकिंग में प्रथम स्थान पर है। यहां पर BA LLB, LLM व कुछ डिप्लोमा कोर्स होते हैं। यहां पर वर्ष 2020-21 में सीटें 80 से बढ़कर 120 कर दी गई थीं और पिछले वर्ष 60 सीटें केवल कर्नाटक स्टेट के लिए बढ़ाई गई हैं। LLB की पढ़ाई में अनेक प्रकार की सुविधाएं जो संस्थान द्वारा प्रदान की जाती है उनकी बड़ी भूमिका रहती है जैसे मूट कोर्ट, वाद-विवाद प्रतियोगिता, राइटिंग कंपटीशन आदि। यह सभी सुविधाएं यहां पर एक अच्छे कल्चर के रूप में उपलब्ध हैं। यहां पर प्रवेश के लिए आरक्षण केंद्रीय नीति के अंतर्गत रहता है। यहां पर यदि फीस की बात करें तो सालाना लगभग 3 लाख रुपये रहती है। यहां पर पढ़ाने वाले प्रोफेसर का स्तर अंतरराष्ट्रीय स्तर का होता है। यदि हम प्रवेश परीक्षा CLAT के माध्यम से प्रवेश लेने वाले विद्यार्थियों के रैंक की बात करें तो ऑल इंडिया जनरल कैटेगरी में यह 85 रैंक तक रहे। EWS (आर्थिक रूप से कमजोर) कैटेगरी में यह रैंक छात्र के लिए 100 तथा छात्रा के लिए 226 रैंक तक रहे। इस प्रकार NLSIU में प्रवेश के लिए टॉप रैंक के विद्यार्थी आते हैं। हम यहां से प्लेसमेंट की बात करें तो एवरेज प्लैसमेंट 15 से 16 लाख रुपए सालाना रहती है।

NLU (नेशनल लॉ यूनिवर्सिटी), दिल्ली- NIRF की रैंकिंग में NLU दिल्ली दूसरे स्थान पर आती है। यह यूनिवर्सिटी अपने यहां प्रवेश के लिए 110 सीटों

के लिए अपनी प्रवेश परीक्षा AILET का आयोजन करती है। साथ में यहां से LLM और Phd भी होती है। यदि हम सीटों की बात करें तो कुल सीटों में से 50 सीटें सामान्य श्रेणी की है तथा आर्थिक रूप से कमजोर श्रेणी में 10 सीटें आती है । सालाना फीस तकरीबन दो लाख रहती है। यहां पर पढ़ रहे विद्यार्थियों को विश्वस्तरीय सुविधाएं उपलब्ध रहती है। इस वर्ष प्रवेश के लिए अंकों की कटऑफ की बात करें तो यह सामान्य श्रेणी के लिए 83.50 अंक और रैंक के हिसाब से कट ऑफ 142 रैंक तक रहा। इस प्रवेश परीक्षा में भारत वर्ष के विद्यार्थी शामिल होते हैं, इससे इस संस्थान की महत्वता का पता चलता है। यदि हम डिग्री पूरी होने के बाद प्लेसमेंट की बात करें तो यह लगभग इस वर्ष 18 लाख रुपये रही।

NALSAR University of Law (नेशनल एकेडमी ऑफ लीगल स्टडीज एंड रिसर्च यूनिवर्सिटी ऑफ लॉ) , हैदराबाद- NIRF की रैंकिंग में चौथे स्थान पर NALSAR हैदराबाद आती है। NACC की ग्रेडिंग में इसे A++ का सर्वोच्च रैंकिंग हासिल है। यहां विद्यार्थी की ओवरऑल डेवलपमेंट पर ध्यान दिया जाता है। विद्यार्थी अलग-अलग प्रकार के स्टडीज ग्रुप में प्रभावी रूप से सम्मिलित होते हैं। यहां पर उपलब्ध 132 सीटों में से 51 सीटें ऑल इंडिया कैटेगरी में सामान्य श्रेणी के लिए आरक्षित है। EWS में 10 सीटें आरक्षित है। छात्राओं के लिए होरिजेंटल रिजर्वेशन के अंतर्गत 30% सीटें आरक्षित हैं। यहां से डिग्री करने के लिए फीस की बात करें तो यह लगभग 2.5 से 3 लाख प्रति वर्ष होती है। लॉ के विद्यार्थी इंटर्नशिप व प्लेसमेंट का रिकॉर्ड भी NALSAR में शानदार है।

विद्यार्थी को PSU में इंटर्नशिप करने का अवसर मिलता है और प्लेसमेंट के एवरेज पैकेज की बात करें तो यह 16 लाख से 18 लाख रुपये तक रहा है। इस संस्थान में आर्थिक रूप से कमजोर विद्यार्थियों को स्कॉलरशिप के रूप में सहायता भी मिलती है। हम कह सकते हैं कि आपको मेहनत कर एक अच्छे संस्थान को ज्वाइन करना है शेष सभी प्रकार की सहायता उपलब्ध हो जाती है। इस वर्ष प्रवेश के लिए रैंक की बात करें तो यह सामान्य श्रेणी के लिए दूसरी सूची आने तक 146 रैंक रहा तथा EWS कैटेगरी में 415 तक रहा।

WBNUJS (वेस्ट बंगाल नेशनल यूनिवर्सिटी ऑफ

प्रमुख संस्थान की वेबसाइट

❖ **Institution Ranking Body**

- National Institutional Ranking Framework https://www.nirfindia.org/
- The Consortium of National Law Universities https://consortiumofnlus.ac.in/
- National Law School of India University, Bengaluru https://www.nls.ac.in/
- National Law University, Delhi https://nationallawuniversitydelhi.in/
- NALSAR University of Law, Hyderabad http://www.nalsar.ac.in/
- West Bengal National University of Juridical Sciences (NUJS), Kolkata, https://www.nujs.edu/
- Gujarat National Law University (GNLU), Gandhinagar https://gnlu.ac.in/
- National Law University, Jodhpur (Raj.) http://www.nlujodhpur.ac.in/
- National Law Institute University, Bhopal https://nliu.ac.in/
- Dr. Ram Manohar Lohiya National Law University, Lucknow; http://www.rmlnlu.ac.in/
- Rajiv Gandhi National University of Law, Punjab https://www.rgnul.ac.in/
- ILS Law College, Pune; https://ilslaw.edu/
- Symbiosis Law School, Pune; https://www.symlaw.ac.in/
- Bharati Vidyapeeth; https://bvpnlcpune.org/
- The University Institute of Legal Studies (UILS) , Panjab University; https://uglaw.puchd.ac.in/

जूडिशल साइंस), कोलकाता– पश्चिम बंगाल स्थित इस संस्थान की समग्र रैंकिंग में NIRF में पांचवें स्थान पर है। यह यूनिवर्सिटी विद्यार्थी को रिसर्च, राइटिंग, एकेडमी स्कॉलरशिप के लिए तैयार करती है। विद्यार्थी प्रत्येक सेमेस्टर के अंत में इंटर्नशिप में जाते हैं। यूनिवर्सिटी का विश्व की कई प्रतिष्ठित व्यक्तियों के साथ MOU है जिसके अंतर्गत विद्यार्थी एक्सचेंज कार्यक्रम होते हैं। यहां के विद्यार्थी मूट कोर्ट कंपीटिशन के कई प्रतिष्ठित कंपीटिशन जीत चुके हैं। यहां उपलब्ध सीटों में से 51 सीटें सामान्य श्रेणी के लिए हैं। फीस की बात करें तो यह सालाना 2 लाख के लगभग है। इस वर्ष प्रवेश हेतू दूसरी सूची आने तक सामान्य श्रेणी से 242 रैंक तक प्रवेश हुआ है। यदि हम प्लेसमेंट की बात करें तो यह पिछले वर्ष एवरेज 15 लाख रुपये रहा।

GNLU (गुजरात नेशनल लॉ यूनिवर्सिटी), गांधीनगर– यह यूनिवर्सिटी NIRF रैंकिंग में आठवें स्थान पर आती है। यहां से B.A. LLB (ऑनर्स), B.Com. LLB (ऑनर्स), B.Sc. LLB (ऑनर्स) और BSW LLB (ऑनर्स) की डिग्री होती है। यहां सामान्य श्रेणी से 79 सीटों पर प्रवेश होता है। होरिजेंटल रिजर्वेशन में 30% सीटें छात्राओं से भरी जाती हैं। फीस की बात करें तो यह सालाना 2.5 लाख रुपये के रहती हैं। इस वर्ष प्रवेश हेतु रैंक की बात करें तो दूसरी सूची जारी होने तक यह रैंक 396 रहा। GNLU में प्लेसमेंट की बात करें तो यह पिछले वर्ष ऐवरेज 14 लाख रहा। इन सभी आंकड़ों की नजर से देखें तो हम कह सकते हैं कि यहाँ प्रवेश के लिए उच्च रैंक प्राप्त विद्यार्थी प्रयासरत रहते हैं।

NLU (नेशनल लॉ यूनिवर्सिटी), जोधपुर– यह यूनिवर्सिटी NIRF की लॉ की समग्र रैंकिंग (3 वर्षीय व 5 वर्षीय) में दसवें स्थान पर आती है। यहां से BA LLB (आनर्स) व BBA LLB (ऑनर्स) के कोर्स होते हैं। इस यूनिवर्सिटी ने पिछले ही कुछ ही समय में एक बेहतरीन संस्थान का दर्जा प्राप्त किया है। यहां का बेहतरीन इन्फ्राट्रक्चर, प्रोफेसर व अन्य सुविधाएं जैसे मूट कोर्ट, संवाद प्रतियोगिता आदि की व्यवस्था विद्यार्थी के लिए बेहतर अवसर उपलब्ध करवाती है। CLAT से प्रवेश के लिए कुल सीटों में से सामान्य श्रेणी के लिए 75 सीटें उपलब्ध है। इस वर्ष यहां प्रवेश के लिए सामान्य श्रेणी के छात्र के लिए दूसरी सूची जारी होने तक प्रवेश का रैंक 343 रहा। इसे संस्थान की महत्वता का पता चलता है। यदि हम प्लेसमेंट की बात करें तो विद्यार्थी अंतरराष्ट्रीय, राष्ट्रीय स्तर की फर्मस में प्रवेश पाते हैं। इस वर्ष के ऐवरेज प्लेसमेंट की बात करें तो यह 14.5 लाख रुपये रहा। इस चर्चा से हम यह समझ सकते हैं कि यह संस्थान लॉ ग्रेजुएट की शिक्षा देने में सफल रूप से आगे बढ़ रहा है।

NLU (नेशनल लॉ यूनिवर्सिटी), भोपाल– NIRF की समग्र रैंकिंग में यह 15वें स्थान पर है। वर्ष 1997 में राष्ट्रीय विधि विश्वविद्यालय अधिनियम के अंतर्गत NLSIU, बेंगलुरु के बाद यह स्थापित होने वाला दूसरा संस्थान रहा। यहां पर ग्रेजुएशन में B.A. LLB तथा B.Sc. LLB (साइबर सिक्योरिटी) में तथा मास्टर डिग्री में LLM और MSLIT (मास्टर ऑफ साइबर लॉ एंड इनफॉरमेशन सिक्योरिटी) में स्टडी होती है। सीटों की बात करें तो कुल 120 सीटों में से सामान्य श्रेणी के लिए 52 सीटें तथा आर्थिक रूप से कमजोर विद्यार्थियों के लिए 12 सीटें B.A. LLB में है तथा B.Sc. LLB (साइबर सिक्योरिटी) में सामान्य श्रेणी की 26 सीटें तथा EWS में 6 सीटें उपलब्ध है। विद्यार्थी को प्रोत्साहित करने के लिए दो टॉप विद्यार्थियों को पूरी ट्यूशन फीस माफ की जाती है। जर्नल पब्लिकेशन, मूट कोर्ट आदि व्यवस्थाएं हैं जिससे विद्यार्थी को ओवर आल डेवलपमेंट का मौका मिलता

है। फीस की बात करें तो यह लगभग 2.7 लाख रुपये वार्षिक है। प्रवेश हेतू रैंक की बात करें तो इस वर्ष B.A. LLB में सामान्य श्रेणी के लिए दूसरी सूची आने तक रैंक 419 रहा और B.Sc. LLB में 581 रहा। यदि प्लेसमेंट की बात करें तो यहां से एवरेज सैलेरी पैकेज पिछले वर्ष लगभग 16 लाख रुपये रहा।

RMLNLU (डॉ. राम मनोहर लोहिया नेशनल लॉ यूनिवर्सिटी), लखनऊ- NIRF की समग्र लॉ रैंकिंग में 17वें स्थान पर आती है। यहां प्रवेश के लिए 80 सीटें सामान्य श्रेणी के लिए हैं। यहां से सालाना फीस लगभग 1.7 लाख रुपये है। यह यूनिवर्सिटी सभी संसाधनों से सुसज्जित है। यहां प्रवेश हेतू समान्य श्रेणी के रैंक की बात करें तो यह दूसरी सूची जारी होने तक छात्र के लिए रैंक 665 रहा तथा छात्राओं के लिए होरिजेंटल रिजर्वेशन होने के कारण यह सामान्य श्रेणी में 669 रहा। यहां से पिछले वर्ष ऐवरेज प्लेसमेंट पैकेज पाँच लाख रुपये रहा। यहां पर कॉर्पोरेट की बजाय जुडिशरी कल्चर अधिक है। यहां से डिग्री करने वाले छात्र आपको ज्यूडिशरी एग्जाम में ज्यादा नजर आते हैं।

RGNLU (राजीव गांधी नेशनल लॉ यूनिवर्सिटी पटियाला)- NIRF की समग्र रैंकिंग में यह 18वें स्थान पर है। यहां प्रवेश के लिए सीटों में से सामान्य श्रेणी के लिए 134 सीट उपलब्ध है। फीस की बात करें तो यह 2.2 लाख रुपये का सलाना है। इस वर्ष प्रवेश हेतू रैंक की बात करें तो दूसरी सूची जारी होने तक सामान्य श्रेणी के लिए यह 1041 रहा। अनेक सुविधाओं से सुसज्जित यह यूनिवर्सिटी विद्यार्थियों के लिए जर्नल पब्लिकेशन, कई शिक्षण सैल आदि की सुविधाओं से सुसज्जित है। यहां से ऐवरेज प्लेसमेंट की बात करें तो यह पिछले वर्ष 7.5 लाख रुपये रहा।

SLS (सिंबोसिस लॉ स्कूल), पुणे- NIRF की रैंकिंग में भारत में यह संस्थान तीसरे स्थान पर है और प्राइवेट संस्थानों में पहले स्थान पर है। सिंबोसिस अपने चार संस्थानों के लिए अपनी प्रवेश परीक्षा SLAT का आयोजन करता है। SLS (सिंबोसिस लॉ स्कूल) पुणे के लिए विद्यार्थियों में अधिक प्रतियोगिता रहती है। यहां प्रवेश के लिए BA LLB में 120 सीटें तथा BBA LLB में 180 है। SLAT प्रवेश परीक्षा 60 अंकों की रहती है, इसके बाद 30 नंबर का WAT (राइटिंग एबिलिटी टेस्ट) और 20 नंबर का इंटरव्यू रहता है जिसके बाद मेरिट बनती है। सामान्य तौर पर इस वर्ष 45 से 48 अंकों वाले विद्यार्थियों को इंटरव्यू और राइटिंग एबिलिटी टेस्ट के लिए कॉल आया है। सालाना फीस की बात करें तो यह फीस लगभग 4 लाख वार्षिक रहती है और प्लेसमेंट की बात करें तो पिछले वर्ष है ऐवरेज के तौर पर 11 लाख रुपये रहा। सिंबोसिस का नाम भारत के प्रमुख संस्थानों में आता है।

AIL (आर्मी इंस्टीट्यूट ऑफ लॉ), मोहाली- NIRF की समग्र रैंकिंग में यह 26वें स्थान पर है। यहां पर 75 सीटें आर्मी पर्सनल (इन सर्विस या रिटायर्ड दोनों) के बच्चों के लिए आरक्षित हैं। ऑल इंडिया ओपन से 5 सीटें तथा पंजाब राज्य के बच्चों के लिए 20 सीटें आरक्षित हैं। यह प्रवेश के लिए अपने स्तर पर अलग से परीक्षा का आयोजन करता है। यहां सालाना फीस की बात करें तो सामान्य श्रेणी के लिए 3.1 लाख और आर्मी पर्सनल के लिए 2 .7 लाख रुपये के लगभग है। और पिछले वर्ष ऐवरेज प्लेसमेंट यहां से 7 लाख रुपये रहा।

ILS (इंडियन लॉ सोसायटी), पुणे- भारत के प्रमुख लॉ स्कूलों में ILS का नाम आता है। यहां पर प्रवेश महाराष्ट्र स्टेट की CET (कॉमन एंट्रेंस टेस्ट) के माध्यम से होता है। ऑल इंडिया कैटेगरी में सिर्फ 10% सीटें ही भरी जाती है। ऑल इंडिया लेवल के लिए

कड़ी प्रतियोगिता रहती है। 150 नंबर में से 125-126 नंबर वाले विद्यार्थी प्रवेश के लिए जा पाते हैं।

GLC (गवर्नमेंट लॉ कॉलेज), मुंबई- महाराष्ट्र स्टेट के लिए एंट्रेंस एग्जाम MAH (CET) के अंतर्गत यहां प्रवेश होते हैं। एशिया के सबसे पुराने लॉ कॉलेज में प्रवेश के लिए कड़ी प्रतियोगिता रहती है। ऑल इंडिया के ओपन कोटा से 10% सीटें ही यहां उपलब्ध है। GLC प्रवेश के लिए जिन विद्यार्थियों को 150 में से 120-125 नंबर आए हुए हो वे प्रवेश की उम्मीद कर सकते हैं। महाराष्ट्र स्टेट के सामान्य श्रेणी के बच्चे प्रवेश परीक्षा में 110 नंबर के आसपास प्रवेश की उम्मीद करते हैं।

UILS (यूनिवर्सिटी इंस्टीट्यूट ऑफ लीगल स्टडीज) पंजाब यूनिवर्सिटी, चंडीगढ़- पंजाब यूनिवर्सिटी, चंडीगढ़ के लॉ डिपार्टमेंट में B.A. LLB की 180 सीटें तथा B.Com LLB की 180 सीटें उपलब्ध हैं। यहाँ 50% सीटें आरक्षण नीति के अंतर्गत रिजर्व है। PU अपने 3 अन्य रीजनल सेंटर के लिए भी प्रवेश परीक्षा का आयोजन करती है। उत्तर भारत के विशेष कर पंजाब हरियाणा के विद्यार्थी पंजाब यूनिवर्सिटी में एडमिशन के लिए इस कड़ी प्रवेश परीक्षा से गुजरते हैं। सालाना फीस लगभग 95 हजार रुपये हैं। यहां एक लॉ ग्रेजुएशन करने के लिए सभी प्रकार के आधुनिक संसाधन उपलब्ध हैं।

इस प्रकार हमने उपरोक्त कुछ संस्थानों की चर्चा इस लेख में की है। इस लेख में हमने मुख्यत: 5 वर्षीय लॉ के लिए संस्थानों की चर्चा की है। उनमें से भी कुछ महत्वपूर्ण संस्थान जैसे इलाहाबाद यूनिवर्सिटी, बनारस हिंदू यूनिवर्सिटी, राजस्थान विश्वविद्यालय अन्य प्राइवेट संस्थान भारती विद्यापीठ, कलिंगा यूनिवर्सिटी , ओ.पी. जिन्दल आदि पर चर्चा नहीं कर पाए हैं। देश में बड़े प्रतिष्ठित संस्थानों की चर्चा करने का उद्देश्य यह है कि हम बेहतर से बेहतरीन संस्थान में प्रवेश के लिए प्रयासरत हो सके, जागरूक हो सके। यहां किसी प्रकार का कोई तुलनात्मक अध्ययन नहीं है। यूँ तो आपको भारत की प्रत्येक यूनिवर्सिटी में लॉ विभाग मिल जाएगा और वहां से ग्रेजुएट, पोस्ट ग्रेजुएट होने वाले विधार्थी अपने कार्य क्षेत्र में प्रमुखता से कार्य कर रहे होंगे, उच्च स्थान पर स्थापित होंगे, बेहतरीन भी होंगे। अन्तत: हमेशा श्रेष्ठ स्तर के लिए प्रयत्नशील रहना चाहिए।

अन्तत: इस लेख में हमने 5 वर्षीय लॉ एक शानदार करियर ऑप्शन किस प्रकार से बनाया जा सकता है, किस प्रकार कितनी मेहनत की आवश्यकता रहेगी, पर चर्चा की है। भविष्य में 3 वर्षीय लॉ पर भी चर्चा करेंगे तथा विभिन्न प्रतियोगिताओं की भी चर्चा करेंगे।

इस लेख से मैं यह समझ पैदा करने की कोशिश कर रहा हूं कि बात भारत के बेहतरीन संस्थानों है तो इसकी तैयारी भी उतनी ही जबरदस्त मेहनत से करनी पड़ती है। यदि लॉ के क्षेत्र में करियर बनाना है तो वह दसवीं के बाद से ही निश्चित करके और अपने ज्ञान के कदम उस मार्ग पर ले जाएं, जहां से इसके लिए निरंतर प्रयास होता रहे। इस विषय पर मैं विशेषज्ञता के साथ कार्य कर रहा हूं फिर भी इस लेख में किसी प्रकार की कोई सुधार की जरूरत है तो वह आप मुझे निम्नलिखित संपर्क में माध्यम से सूचित कर सकते हैं। मुझे आपकी किसी भी जानकारी को बढ़ाने में खुशी महसूस होगी जो कि मेरा धार्मिक दायित्व भी है।

-प्रवीण धारणीया
अध्यक्ष, अ.भा. बिश्नोई युवा संगठन
मो.: 9728400029
E-mail: parveendharnia29@rediffmail.com

शिक्षा के साथ संस्कार बच्चों के लिए जरूरी- श्री देवेन्द्र बूड़िया

मुकाम : अखिल भारतीय बिश्नोई महासभा द्वारा मुकाम में 538वें बिश्नोई धर्म प्रवर्तन के अवसर पर हवन-यज्ञ, जागरण व शोभा यात्रा सहित अनेक कार्यक्रमों का आयोजन किया गया। इन कार्यक्रमों की शोभा बढ़ाने व हिस्सा लेने के लिए समस्त भारतवर्ष से श्रद्धालु मुकाम पहुंचे। स्थापना दिवस की पूर्व संध्या पर मुकाम में जागरण का आयोजन किया गया जिसमें मुकाम पीठाधीश्वर आचार्य स्वामी रामानन्द जी, स्वामी कृष्णानन्द जी आचार्य ऋषिकेश, महंत स्वामी रामकृष्ण जी समराथल धोरा, महंत स्वामी छगनप्रकाश जी समराथल धोरा, महंत स्वामी भागीरथ दास जी शास्त्री मुकाम, महंत स्वामी प्रेमप्रकाश जाम्भा, स्वामी हनुमानदास जी मेघवा, स्वामी स्वरूपानन्द जी गायक कलाकार, श्री जगदीश गायणा द्वारा गुरु महाराज की साखियां, आरती, उनतीस नियमों पर विस्तार से प्रकाश डाला गया। सभी विद्वानजनों इस मत पर जोर दिया कि गुरु महाराज द्वारा प्रतिपादित 29 नियम मानव मात्र के लिए कल्याणकारी हैं। इन नियमों तथा बिश्नोई संस्कारों बारे बच्चे अच्छी तरह जान पाएं इसके लिए माता-पिता विशेष प्रयास करें। इस दौरान महासभा के महासचिव रूपाराम बिश्नोई ने मेला व्यवस्था, सामाजिक प्रचार-प्रसार तथा महासभा द्वारा ग्रामीण क्षेत्रों में किए जा रहे कार्यों बारे जानकारी दी। 18 अक्तूबर को स्थापना दिवस पर मंदिर परिसर में हवन-यज्ञ किया गया। तत्पश्चात् सभी संतों के पावन सान्निध्य में श्री देवेन्द्र बूड़िया प्रधान अखिल भारतीय बिश्नोई महासभा, श्री बिहारीलाल बिश्नोई विधायक नोखा, श्री जसवंत सिंह बिश्नोई पूर्व सांसद जोधपुर, श्री रूपाराम जी कालीराणा महासचिव, श्री रामस्वरूप जी धारणियां कोषाध्यक्ष, श्री रामदयाल जी तरड़ महासचिव सेवकदल, श्री कृष्ण कुमार सिगड़ अध्यक्ष गौशाला, श्री सोहनलाल जी बिश्नोई उपप्रधान प्रतिनिधि नोखा, समाज के प्रबुद्ध पदाधिकारी, जनप्रतिनिधि समाज के हजारों श्रद्धालुगण गुरु जाम्भोजी की जयघोष व जयकारे

के साथ मुकाम मंदिर परिसर में शोभा यात्रा के लिए शामिल हुए। मुकाम पीठाधीश्वर आचार्य स्वामी रामानन्द जी, श्री देवेन्द्र बूड़िया प्रधान अ.भा.बि. महासभा, श्री बिहारीलाल बिश्नोई विधायक नोखा ने भगवी झण्डी दिखाकर शोभा यात्रा को मुकाम से सम्भराथल के लिए रवाना किया।

भगवान जाम्भोजी के कीर्तन करते हुए व जयकारे लगाते हुए हजारों श्रद्धालु पैदल सम्भराथल धोरा पहुंचे। समाज के विद्वान स्वामी कृष्णानन्द आचार्य, महंत श्री स्वामी शिवदास शास्त्री, महंत स्वामी छगनप्रकाश, महंत स्वामी रामकृष्ण जी ने हवन यज्ञ बाद वैदिक मंत्रों से अमृतमयी सबदवाणी से अमृत पाहल बनाया। सभी श्रद्धालुओं ने अमृत पाहल लिया तथा मानव मात्र की सेवा, प्रकृति एवं पर्यावरण संरक्षण तथा 29 नियमों की पालना करने का संकल्प दोहराया तथा जीवन में नेक कार्य सेवा भावना से करने का निश्चय लिया।

इस दौरान अखिल भारतीय बिश्नोई महासभा द्वारा संचालित श्री जगत् गुरु जम्भेश्वर गौशाला संस्था मुकाम में गौशाला कार्यालय भवन की नींव रखी गई। जिसमें आचार्य रामानंद, प्रधान देवेंद्र बुड़िया के अलावा श्री कृष्ण कुमार सीगड़ अध्यक्ष गौशाला, श्री धीमाराम सचिव गौशाला, श्री सोहनलाल मुकाम, श्री रामलाल मुकाम, श्री जुगल मुकाम, श्री हनुमान मुकाम एवं समस्त ग्रामवसियों की गरिमामय उपस्थिति रही। इसी मौके पर अखिल भारतीय बिश्नोई महासभा की धर्मशाला में श्री पतराम जी लोहमरोड़ उपाध्यक्ष, अ.भा. बि. महासभा द्वारा निजी कोष से स्थापित लाईब्रेरी का उद्घाटन श्री देवेन्द्र जी बूड़िया ने किया। इस अवसर पर श्री देवेन्द्र बूड़िया कहा कि ग्रामीण बच्चों को शिक्षा प्राप्ति का बेहतर माहौल प्रदान करने के लिए पुस्कालय की स्थापना की गई है। उन्होंने कहा कि शिक्षा के क्षेत्र में समाज की प्रतिभा का हर स्तर पर सहयोग किया जायेगा। उन्होंने कहा कि बच्चों के सर्वांगीण विकास के लिए शिक्षा के साथ-साथ उनमें धार्मिक व सामाजिक संस्कार भी विकसित किए जाएं।

-रूपाराम बिश्नोई
महासचिव
अ.भा.बि. महासभा

अबोहर में बिश्नोई धर्म स्थापना दिवस हर्षोल्लास से संपन्न

अबोहर: विष्णु अवतार श्री गुरु जम्भेश्वर भगवान द्वारा संस्थापित बिश्नोई धर्म की स्थापना के 537 वर्ष पूर्ण होने की खुशी में आयोजित समारोह में सोमवार 17 अक्टूबर 2022 कार्तिक वदि सप्तमी की रात्रि को जागरण लगाया गया जिसमें मेहराणा धोरा धाम के महंत स्वामी मनोहरदासजी शास्त्री, स्वामी कृष्णदासजी फलाहारी, गायक प्रमोदजी ने साखी भजनों के द्वारा भगवान का गुणगान किया। मंगलवार 18 अक्टूबर अष्टमी की प्रात: वेला में संतों ने हवन पाहळ किया और उपस्थिति जनसमूह को धर्म नियमों पर दृढ़तापूर्वक चलने के संकल्प के साथ पाहळ ग्रहण करवाया। उसके बाद माननीय अतिथिगण ध्वजारोहण करके मंच पर आसीन हुए।

समारोह के मुख्य अतिथि श्री किशनाराम बिश्नोई, विधायक, लोहावट ने लोगों को गुरु जाम्भोजी के बताए मार्ग पर चलने का आह्वान करते हुए कहा कि आज से लगभग दो शताब्दी पूर्व बिश्नोई समाज के लोग मारवाड़ से पलायन करके पंजाब आए थे और उन्होंने यहाँ की भूमि पर स्थापित होकर अपनी एक पहचान बनाई और सर्वसमाज में आदर प्राप्त किया। संत शिरोमणि साहबरामजी राहड़, प्रात: स्मरणीय संत ब्रह्मदासजी महाराज संस्थापक मेहराणा धोरा धाम, पर्यावरण के पुरोधा श्री संतकुमार राहड़, पंजाब की द्वितीय विधानसभा में सन् 1957 में विधायक बने श्री सहीराम धारणियां ने यहां अविस्मरणीय कार्य किया।

सन् 1944 का अखिल भारतीय बिश्नोई महासभा का अधिवेशन और गुरु जम्भेश्वर सेवक दल की यहां स्थापना ने समाज को नये आयाम प्रदान किए।

आज मैं ठेठ मारवाड़ से अपने इन धर्म भाइयों को अपनी शुभकामनाएं प्रेषित करने आया हूँ। समारोह की अध्यक्षता करते हुए मंडी बोर्ड के पूर्व डायरेक्टर श्री संजीव गोदारा ने कहा की समाज आगे बढ़ रहा है, पंथ

का प्रचार साहित्य से होता है और इसके लिए जाम्भाणी साहित्य अकादमी बीकानेर बहुत अच्छा कार्य कर रही है। गुरु जाम्भोजी की कल्याणकारी शिक्षाओं का प्रचार-प्रसार जन-जन तक होना चाहिए। समारोह को अखिल भारतीय गुरु जम्भेश्वर सेवक दल के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री विनोद धारणियां, समाजसेवी डॉ. दलबीर गोदारा, बिश्नोई सभा पंजाब अध्यक्ष और इस समारोह के संयोजक श्री गंगाबिसन भादू, रामकुमार डेलू, अखिल भारतीय जीव रक्षा बिश्नोई सभा के पूर्व राष्ट्रीय अध्यक्ष रमेश राहड़, सेवक दल पंजाब के प्रधान राधेश्याम गोदारा, पूर्व विधायक गुरतेज सिंह घड़ियाना ने भी संबोधित किया। झमकूदेवी सीनियर सेकेंडरी स्कूल मेहराजपुर धोरा के बच्चों ने खेजड़ली बलिदान नाटक का मंचन किया। शिक्षा और खेलकूद में अव्वल रहे बच्चों को सम्मानित भी किया गया।

इस अवसर पर सर्वश्री बुधराम भांभू उपप्रधान, विष्णुराम गोदारा सचिव, अमित गोदारा कोषाध्यक्ष, कुलवंत बागड़ियां सह-कोषाध्यक्ष, सेवक दल के सचिव विष्णु थापन, कोषाध्यक्ष सुशील बैनीवाल, निर्मल डेलू, मनोज गोदारा, श्रवण सिहाग, महीराम डेलू, विनोद बागड़िया, मास्टर रंगलाल रावतसर, मनोहरलाल कड़वासरा, कुलदीप जादूदा, इंद्रजीत धारणीया डबवाली सभा, सुरेंद्र कुमार भादू, हंसराज खीचड़, कृष्ण कुमार गीला, सुधीर कुमार बेनीवाल, राममूर्ती भादू, महावीर भादू, विजयपाल पूनिया, बुधराम गीला, ज्ञानप्रकाश सिहाग, एडवोकेट महीराम सिहाग, युधिष्ठिर बागड़िया, सुशील कुमार बोला, हेतराम ज्याणी, रामखन मंडा, सतपाल सरपंच, धर्मपाल जाखड़, एडवोकेट नवीन पूनिया, एडवोकेट विजेंद्र बिश्नोई, प्रिंसिपल विष्णु पूनियां, सुभाष सांवक मातृ शक्ति व अनेकों गणमान्य बंधुजन उपस्थित रहे।

-महीराम बैनीवाल
प्रिंसिपल

सूर्य ग्रहण पर बिश्नोई धर्मशाला कुरुक्षेत्र के प्रांगण में भंडारा आयोजित

कुरुक्षेत्र: बिश्नोई सभा, कुरुक्षेत्र द्वारा बिश्नोई मंदिर के प्रांगण में गत 25 अक्टूबर 2022 को सूर्य ग्रहण के अवसर पर हवन यज्ञ किया गया तथा श्रद्धालुओं के लिए भंडारे का आयोजन किया गया। इस दौरान बाहर से पधारी समाज की महिलाओं तथा पुरुषों के अतिरिक्त हजारों लोगों ने प्रसाद ग्रहण किया। लोगों की सुविधा के लिए रहने और खाने-पीने का प्रबंध किया गया जिसमें सभा के सभी सदस्यों ने इस पुण्य कार्य में बढ़-चढ़कर हिस्सा लिया।

इस अवसर पर जिला सेवक दल तथा तथा बिश्नोई सभा हिसार के द्वारा भेजे गए तलवंडी बादशाहपुर के सेवक दल के सेवकों ने कार्य के निर्वहन में सराहनीय योगदान दिया। गांव भोडिया बिश्नोइयान तहसील आदमपुर से पधारे श्री मदन जी गायनाचार्य ने शाम को ग्रहण पूरा होने के बाद सबदों का पठन-पाठन हवन तथा पाहल किया तथा दूसरे दिन सुबह भी सूर्य ग्रहण उपरांत पर्यावरण की शुद्धि हेतु

120 शब्दों का पठन-पाठन, तथा हवन किया और उसके बाद उपस्थित सभी लोगों को पाहल दिया गया जिसमें कुरुक्षेत्र में रहने वाले सभी सदस्यों व परिवार जनों ने पाहल ग्रहण किया और गुरु महाराज के उपदेशों के प्रति आस्था प्रकट करते हुए उनकी पालना के लिए प्रतिबद्धता दोहराई।

-आत्माराम पूनिया
पूर्व महासभा सदस्य
मो.: 9416173029

बिश्नोई समाज के प्रमुख धाम

पीपासर

जम्भोलाव

सम्भराथल

जांगलू

मुकाम

रोटू मन्दिर

लालासर साथरी

लोदीपुर

उनतीस धर्म नियम

- तीस दिन सूतक रखना।
- पांच दिन ऋतुवन्ती स्त्री का गृहकार्य से पृथक् रहना।
- प्रतिदिन सवेरे स्नान करना।
- शील का पालन करना व संतोष रखना।
- बाह्य और आन्तरिक पवित्रता रखना।
- द्विकाल संध्या-उपासना करना।
- संध्या समय आरती और हरिगुण गाना।
- निष्ठा और प्रेमपूर्वक हवन करना।
- पानी, ईंधन और दूध को छान कर प्रयोग में लेना।
- वाणी विचार कर बोलना।
- क्षमा-दया धारण करना।
- चोरी नहीं करनी।
- निन्दा नहीं करनी।
- झूठ नहीं बोलना।
- वाद-विवाद का त्याग करना।
- अमावस्या का व्रत रखना।
- विष्णु का भजन करना।
- जीव दया पालणी।
- हरा वृक्ष नहीं काटना।
- काम, क्रोध आदि अजरों को वश में करना।
- रसोई अपने हाथ से बनानी।
- थाट अमर रखना।
- बैल बधिया नहीं कराना।
- अमल नहीं खाना।
- तम्बाकू का सेवन नहीं करना।
- भांग नहीं पीना।
- मद्यपान नहीं करना।
- मांस नहीं खाना।
- नीला वस्त्र व नील का त्याग करना।

जाम्भाणी पर्व एवं अमावस्या

सम्वत् 2079 मार्गशीर्ष की अमावस्या

लगेगी-23.11.2022 बुधवार प्रातः 6 बजकर 53 मिनट पर
उतरेगी-24.11.2022 गुरुवार प्रातः 4 बजकर 26 मिनट पर

सम्वत् 2079 पौष की अमावस्या

लगेगी-22.12.2022 गुरुवार सायं 7 बजकर 13 मिनट पर
उतरेगी-23.12.2022 शुक्रवार सायं 3 बजकर 46 मिनट पर

मार्गशीर्ष अमावस्या मेला- 23.11.2022, बुधवार, नीमगांव, मध्यप्रदेश।

RNI No. : 12406/57
POSTAL REGD. NO. : L/RNP/01/HSR/2020-2022
TECH/WPP/HR-04/HISAR/2020-22

POSTAGE PREPAID IN CASH
POSTED AT : HISAR H.O.
POSTING DATE : 1st OF EVERY MONTH

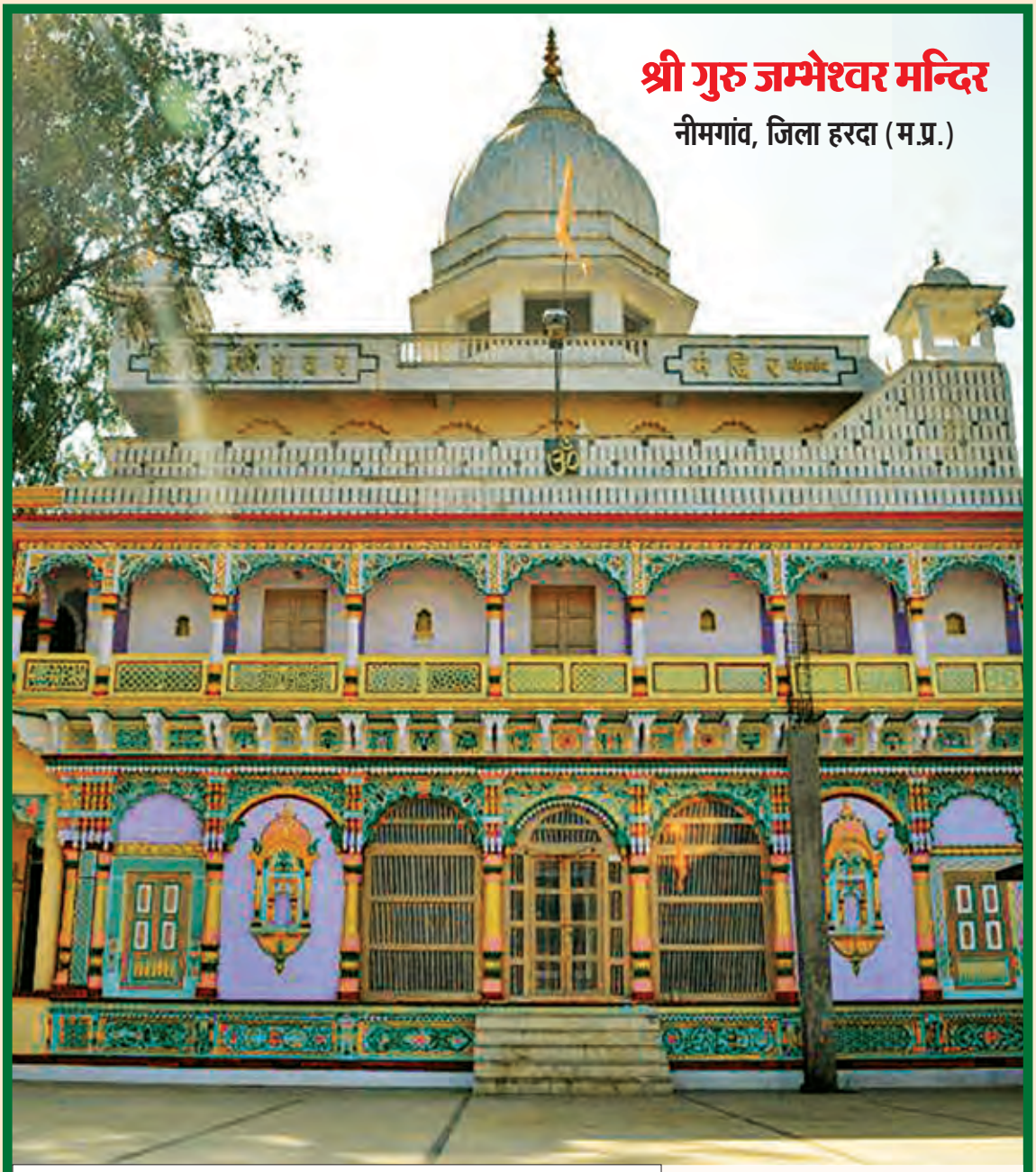

श्री गुरु जम्भेश्वर मन्दिर

नीमगांव, जिला हरदा (म.प्र.)

मुद्रक, प्रकाशक जगदीश चन्द्र कड़वासरा, प्रधान, बिश्नोई सभा हिसार ने डोरेक्स ऑफसेट प्रिंटर्स, हिसार से बिश्नोई सभा, हिसार के लिए मुद्रित करवाकर 'अमर ज्योति' कार्यालय, श्री बिश्नोई मन्दिर, हिसार से दिनांक 1 नवम्बर, 2022 को मुख्य डाकघर, हिसार से प्रेषित किया।

DOREX Printers 9896011117